HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

चैत्र-वैशाख, युगाब्द 5121, मार्च-अप्रैल 2019

हम करें राष्ट्र आराधन

मूल्य: 10/- प्रति

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

Mob.94180 31871, 98570 00006, 98160 31871, 98160 65871

TOP GEAR AUTOMOBILES

MULTIPLE VEHICLE REPAIR & SPARE

ALL SOLUTIONS UNDER ONE ROOF

We Deals In :- **SERVICE, DENTING, PAINTING, ELECTRICAL**
JEEP BODY, CARGO BODY, WATER TANK, ELECTRIC & GAS WELDING, MIG WELDING, & CASHLESS ACCIDENTAL CLAIMS

CHEVROLET · TOYOTA · HONDA · TATA · HYUNDAI · Ford · Mahindra

PLOT # 34 TO 37 INDUSTRIAL AREA SHOGHI SHIMLA

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

इंडियनऑयल
IndianOil

XTRA CARE
RETAILOUTLET

Darla Service Station

Dealer: INDIAN OIL CORPORATION LTD.
V.P.O. DARLAGHAT, TEH. ARKI, DISTT. SOLAN
(HIMACHAL PRADESH) 171102
PH.: 01796-248748, Mob.: 98162-48748

वर्ष:19 अंक : 03-04 | चैत्र-वैशाख, कलियुगाब्द 5121, मार्च-अप्रैल, 2019

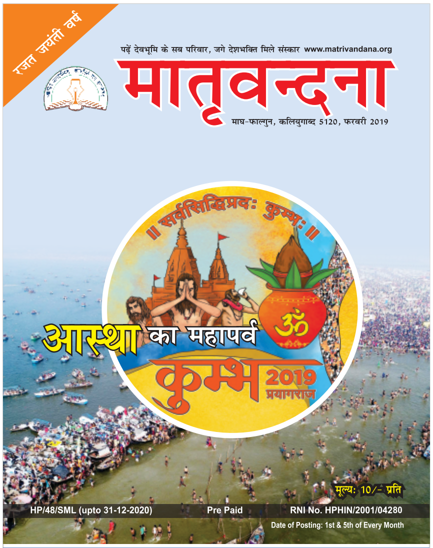

विशेषांक सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
नीतू वर्मा
डॉ. अर्चना गुलेरिया

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com, Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक: कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

मासिक शुल्क	₹10
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

4 संपादकीय
6 भारत का आध्यात्मिक भूगोल
8 युद्ध स्मारक और राष्ट्रधर्म
10 युवा-आदर्शों का विस्मृत अध्याय
12 राष्ट्रीय तीर्थ सोमनाथ
14 आतंकवाद को कुचलने के
16 आईए! राष्ट्रभाव की जोत जगाएं
18 वेदों में राष्ट्रीयता का उदात्त स्वरूप
20 राष्ट्रीयता और नागरिकता
22 अराष्ट्रीय भाव ही आंतकवाद की जड़
24 असमानता राष्ट्रीय विकास में बाधक
26 चुनावों में मतदान की भूमिका
27 मनुष्य सामाजिक एवं आध्यात्मिक
28 हिन्दी साहित्य में राष्ट्रभाव जागरण
30 पुरातन भारतीय संस्कृति
32 स्वतन्त्रता पूर्व काव्य में राष्ट्रीयता
34 सर्वोच्च बलिदान
35 जननी जन्म भूमीश्च...
36 हिन्दू नववर्ष
38 अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा
41 संस्कार
42 राजनीतिक हित साधने में
44 ईमानदारी ही सर्वोच्च
46 आधुनिकता बनाम पश्चिमी
48 भारत की आत्मा है गोमाता
50 गोवंश की रक्षा में ही हम
51 स्वामी दयानन्द सरस्वती
52 हिन्दू-भाव जागरण से
56 कलुषित राजनीति को
57 जलियाँवाला बाग के
58 लोकप्रियता के शिखरों
60 संकल्प सफलता का
59 शिमला में पत्रकार
61 गांव हो तो बघुवार जैसा
62 युवाओं का राष्ट्रभाव

राजीव गांधी कोटशेरा महाविद्यालय में 23 मार्च शहीदी दिवस कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. पी.के. सिलारिया व अन्य

शहीदी दिवस कार्यक्रम में नाटक में अपनी प्रस्तुति देते हुए व देखकर प्रेरणा लेते हुए कोटशेरा महाविद्यालय के छात्र

शोघी में मातृन्दना पाठक सम्मेलन में पाठकों के सुझाव लेते हुए सह-सम्पादक वासुदेव शर्मा व अनुज पंत

शिमला में पत्रकार परिवार मिलन कार्यक्रम में परिवारों के साथ उपस्थित विभिन्न मिडीया संस्थानों के प्रतिनिधि पत्रकार

वयं राष्ट्रे जागृयाम्

भारत विश्व का प्राचीनतम राष्ट्र है। गौरवशाली इतिहास, उन्नत परम्पराओं और सांस्कृतिक धरोहर का पर्याय है राष्ट्र। यह एक सकारात्मक अवधारणा है। राष्ट्रीय भाव की पावन धारा हिन्दुत्व है। राष्ट्र हम सबके लिए जीवंत सत्ता है। अपना भारत महापुरूषों का जन्मदाता है, विश्व का पथ प्रदर्शक रहा है, अतुलनीय है, जिससे हमारा स्वाभिमान बना हुआ है। इसके लिए सर्वस्व अर्पित है। यह चिंतन ही राष्ट्रीय भाव है। सृष्टि की पहली आभा के साथ जो दिव्यता उत्पन हुई, उसी के साथ भारत प्रकट हुआ। इसका शाब्दिक अर्थ भी प्रकाश से जुड़ा है। इसका अन्तर्मन त्याग, बलिदान और परम सत्य की अनुभूति से विराट हुआ है।

सनातन भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति है जो विशिष्ट एवं सर्वग्राह्य है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने लिखा था–'अगर मुझसे पूछा जाए कि किस देश के मानव मस्तिष्क ने अपने सर्वोत्तम गुणों का अधिक से अधिक विकास किया है, जीवन की बड़ी-बड़ी समस्याओं के ऐसे हल प्राप्त किये हैं जो प्लेटो और कांट के दर्शन शास्त्र का अध्ययन किए हुए लोगों के लिए भी भली-भांति विचारणीय है, तो मैं कहूंगा कि वह देश भारत है।' ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जो भारत को महिमा मंडित करते हैं। योग, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, खगोल, ज्योतिष आदि का ज्ञान सर्वप्रथम भारत ने ही विश्व को प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द से प्रेरणा लेकर आज भी अधिकांश आध्यात्मिक गुरू विश्व के कई देशों में अध्यात्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। वर्तमान में भारत की विलक्षण प्रतिभाएं विदेशों में अपनी प्रतिभा का विविध क्षेत्रों में लोहा मनवा रही हैं।

प्राचीन काल से ही समृद्ध इतिहास, उन्नत औद्योगिक तकनीक, हजारों वर्ष पूर्व अन्तरिक्ष तक पहुंचा ज्ञान, वेद-उपनिषद्, सूत्र ग्रन्थ, पुराण, रामायण, महाभारत तथा गीता जैसी अमूल्य ज्ञान-निधि, चौसठ कलाएं, षड्दर्शन और इनके सर्जक एवं वाहक ऋषि-मुनि, सिद्ध पुरूष निश्चय ही राष्ट्रीय भाव के उत्प्रेरक रहे हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न, सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत पर आक्रान्ताओं की गिद्ध-दृष्टि क्या पड़ी कि वह पतनोन्मुख होने लगा। भारत का वह कालखण्ड दुर्भाग्यपूर्ण रहा जिसमें उसे सदियों तक परतन्त्रता की बेड़ियों की जकड़न की पीड़ा सहन करनी पड़ी। उसी का दुष्परिणाम है कि स्वतन्त्रता के सात दशक बीत जाने पर भी हम उस उत्कृष्टता को प्राप्त नहीं कर पाए, जो सदियों पूर्व विद्यमान थी। विस्मृत हुए वैभवशाली गौरव को पुन: प्राप्त करने के लिए हमें राष्ट्र निष्ठ होना पड़ेगा। राष्ट्रभाव की अग्नि अपने अंतस में प्रज्वलित करनी होगी। 'वयं राष्ट्रे जागृयाम' इस वेदोक्ति को आत्मसात् कर सचेत और सजग होकर समर्पण भाव से कर्तव्य निष्ठ होना पड़ेगा। वेदों में राष्ट्रीयता की उदात्त भावना को उजागर तथा मातृभूमि का गुणगान किया गया है। उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, गुरूग्रन्थ साहब, बौद्ध-जैन ग्रन्थ भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्श एवं जीवन मूल्यों को उद्घाटित करते हुए अध्यात्म की विशिष्टता को ही प्रकट करते हैं। आदिकाल से वर्तमान युग तक इस देश में जन्मे महापुरूषों ने अपने राष्ट्र का गुणगान कर देशवासियों में राष्ट्रीय भाव का संचार किया है। मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने में तथा स्वतन्त्र राष्ट्र की रक्षा में अमर शहीदों का बलिदान राष्ट्र के निमित्त मर मिटने की प्रेरणा देता है। शहीदों की पुण्य स्मृति में बने स्मारक निश्चित ही देशवासियों के लिए तीर्थ स्थल हैं।

राष्ट्रीयता की यह प्रदीप्ति हमारे भीतर प्रज्वलित रहे, इस हेतु हमें अपने आचरण में तथा देश की सामाजिक व्यवस्था में पर्याप्त परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। युवा शक्ति राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। माता-पिता, गुरूजन एवं राष्ट्र चिंतक उसे सही दिशा दिखा सकते हैं। उन्हें चरित्रवान् एवं सुपात्र बनाना अग्रजों का सबसे बड़ा कर्तव्य है। अग्रज एवं वरिष्ठ नागरिक अपने आदर्श एवं श्रेष्ठ कार्यों से उनकी प्रेरणा के स्रोत बन सकते हैं। अतएव सभी नागरिकों का यह ध्येय हो कि हम अपने कर्तव्य का बड़ी निष्ठा, श्रम व लग्न से निर्वहन करें, यही राष्ट्र सेवा है। एकात्मता और समरसता से जब पूरा समाज जुड़ जाता है तभी राष्ट्र सुदृढ़ एवं विकसित होता है। समान रूप से सबका विकास हो, अन्तिम व्यक्ति तक सरकार की सहायक वृत्ति हो, समान शिक्षा की व्यवस्था हो, न्याय सबको मिले और रोजगार की कमी न हो तो देश की दशा और दिशा में अप्रत्याशित परिवर्तन निश्चित होगा। सबल एवं सम्पन्न राष्ट्र का निर्माण तभी सम्भव है यदि देश में सर्वत्र शांति और सुशासन हो। अराजकता के मूल तत्वों का विस्तार न हो इसलिए अलगाववाद, आतंकवाद, नक्सलवाद और विदेशी घुसपैठ आदि को समूल नष्ट करने के उपाय ढूंढने होंगे। राजतन्त्र, प्रशासन एवं जन-जन में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करना होगा। क्षेत्र, भाषा, जाति एवं सम्प्रदाय में विभाजित करने वाली राजनीति का बहिष्कार करना होगा। इस कार्य के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और संकल्प की आवश्यकता है। राष्ट्र के प्रति प्रबल भावना जब हृदय में हिलोरें लेगी और अपने राष्ट्र के प्रति जन-जन में सम्मान और स्वाभिमान जगेगा, निश्चय से एक नये राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होगा। ◆◆◆

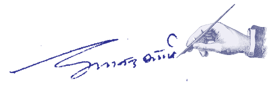

भारत का आध्यात्मिक भूगोल

... प्रो. बी.के. कुठियाला

सदियों पूर्व के हमारे विद्वान और वैज्ञानिक ऋषि-मुनियों ने पर्वतों, नदियों, झीलों, तालाबों को श्रद्धा केंद्रों की तरह विकसित किया। साथ ही साथ भारत के इतिहास में लगातार मनुष्य निर्मित धार्मिक और आध्यात्मिक स्थान भी भारतीय जनमानस के श्रद्धा केंद्र बने।

महात्मा व्यास दृष्टि विहीन धृतराष्ट्र को महाभारत युद्ध का आंखों देखा हाल सुनाने के लिए संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान करते हैं। धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय इस सृष्टि में भारत देश की व्याख्या करते हैं और बताते हैं कि किस प्रकार से मेरू पर्वत (हिमालय) से लेकर दक्षिण में महासागर तक जो धनुष की कमान की आकृति का विशाल भू-खंड है, उसे भारत कहते हैं। संजय बताते हैं कि किस प्रकार से कमल के फूल की तरह पृथ्वी की सात पंखुड़ियों में से एक पंखुड़ी भारत है। भारतवर्ष के पर्वतों, नदियों की विस्तृत व्याख्या भी संजय ने की है। महाभारत के बाद सैकड़ों वर्षों के इतिहास में भारत ने अनेक दिशाओं में विकास के मार्ग में विश्व में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। परन्तु भारत की एक विशिष्टता जो अन्य किसी समाज या देश में विकसित नहीं हुई, वह है इसके आध्यात्मिक भूगोल की।

सदियों पूर्व के हमारे विद्वान और वैज्ञानिक ऋषि-मुनियों ने पर्वतों, नदियों, झीलों, तालाबों को श्रद्धा केंद्रों की तरह विकसित किया। साथ ही साथ भारत के इतिहास में लगातार मनुष्य निर्मित धार्मिक और आध्यात्मिक स्थान भी भारतीय जनमानस के श्रद्धा केंद्र बने। जहां हिमालय पर्वत को मातृभूमि का मुकुट माना वहीं गंगा सहित सभी नदियों को मां के समान सम्मान एवं श्रद्धा का स्थान दिया। प्रकृति की भौगोलिक विविधता को उत्सव मनाने की परम्पराएं हमारे पूर्वजों ने बनाई। प्रकृति की अनेक रूपता की समृद्धि करते हुए हमारे पूर्वजों ने मनुष्य निर्मित श्रद्धा स्थान देवालयों का बड़ी संख्या में निर्माण किया। वृहद् दृष्टि से देखें तो इन सब श्रद्धा के स्थानों में आपस में कोई तालमेल नहीं दिखता और अव्यवस्था का आभास होता है। परन्तु जरा सी गहराई में जाने पर ही यह सब एक सुनियोजित और बहुत ही विवेकपूर्ण रचना दिखती है।

भारतीय समाज में जो सैकड़ों सालों से चली आ रही तीर्थ यात्रा की परम्पराएं हैं वास्तव में वह भारत के भूगोल को एक सुंदर, आध्यात्मिक राष्ट्र का रूप देती हैं। हिमालय की चोटियों से लेकर समुद्र के अंतिम छोर तक और कच्छ के रण से लेकर ब्रह्म देश तक, कंधार से लेकर सुदूर उत्तर पूर्व तक पूरा भारत देश छोटे-बड़े अनेक देवालयों और मंदिरों का एक विशाल भूभाग है। परन्तु यह सब श्रद्धा के स्थान 'स्टैण्ड अलोन' नहीं हैं। तीर्थ की परम्पराएं भारत देश को एक छोर से दूसरे छोर की लम्बी यात्रा से लेकर आस-पास के मंदिरों की छोटी-छोटी यात्राओं के माध्यम से जोड़ती हैं। अद्‌भुत ताना-बाना है। हर भारतीय के संस्कार हैं कि उसके मन में जीवन में तीर्थाटन करने की एक प्रबल प्रेरणा एवं इच्छा सदैव बनी रहती है।

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि हर समय कम से कम 50 लाख श्रद्धालु तीर्थाटन के लिये घरों से निकले होते हैं और कभी-कभी तो ऐसे अवसर आते हैं, जब यह संख्या एक समय में 8-10 करोड़ तक पहुंच जाती है। हाल ही में आयोजित प्रयाग कुम्भ मेले में करीब 32 करोड़ श्रद्धालु तीर्थाटन के लिए आए। एक विदेशी लेखक ने अनुमान लगाया है कि महाराष्ट्र में पंढरपुर स्थित विठोवा मंदिर में दसों दिशाओं से आए भक्तों की संख्या 50 लाख तक पहुंच जाती है। यह तीर्थ और तीर्थयात्री इस भारत देश को एक आध्यात्मिक और धार्मिक राष्ट्र की पहचान देते हैं। आदिगुरु शंकराचार्य ने तो हिंदू समाज के लिये निर्देशित किया कि चार धाम की यात्रा करनी ही चाहिए। उन्होंने इतनी बड़ी कल्पना राष्ट्र को आध्यात्मिक आधार पर जोड़ने के लिए की थी।

सुदूर दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में द्वारका, उत्तर में हिमालय की चोटी पर बद्री धाम और पूर्व में जगन्नाथ मंदिर किसी भी तीर्थ यात्री को विशाल राष्ट्र का नागरिक होने का आभास करवाती है। बात यह है कि इन स्थानों पर कहीं भी मंदिर प्रवेश में जाति के आधार पर व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ता। एक राष्ट्र की बड़ी कल्पना को साकार करने की इससे बड़ी और प्रभावी व्यवस्था क्या हो सकती है?

आध्यात्मिक भारत राष्ट्र की वास्तविकता केवल इतनी ही नहीं है। सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो भारत को राष्ट्र का स्वरूप देने के लिये मुख्यत: पांच आध्यात्मिक आधार स्पष्ट दृष्टि में आते हैं। भारत के किसी भी हिस्से में चले जाएं, यहां तक कि जनजाति समाज में भी, शिव मंदिर छोटे या बड़े, लाखों की संख्या में नित्य नए मंदिरों का निर्माण हो रहा है। देश में लाखों शिवलिंग तो स्थापित हैं ही, लेकिन 12 ज्योतिर्लिंग हिमालय के केदार धाम से लेकर दक्षिण के रामेश्वरम् तक एक सीधी रेखा में हैं और ये अत्यन्त प्राचीन हैं। क्या इन्हें आध्यात्मिक राष्ट्र की

सुदूर दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में द्वारका, उत्तर में हिमालय की चोटी पर बद्री धाम और पूर्व में जगन्नाथ मंदिर किसी भी तीर्थ यात्री को विशाल राष्ट्र का नागरिक होने का आभास करवाती है। बात यह है कि इन स्थानों पर कहीं भी मंदिर प्रवेश में जाति के आधार पर व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ता। एक राष्ट्र की बड़ी कल्पना को साकार करने की इससे बड़ी और प्रभावी व्यवस्था क्या हो सकती है। आध्यात्मिक भारत राष्ट्र की वास्तविकता केवल इतनी ही नहीं है। सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो भारत को राष्ट्र का स्वरूप देने के लिये मुख्यत: पांच आध्यात्मिक आधार स्पष्ट दृष्टि में आते हैं।

रीढ़ नहीं माना जा सकता? ये शिव मंदिर गिलगिस्तान में हों या इंडोनेशिया, कम्बोडिया में उनका स्वरूप और आराधना की विधि समान ही है।

इसी प्रकार भारत में सात मुख्य नदियों को मातृ श्रद्धा के भाव से देखने की परम्परा है। इसी श्रद्धा ने इन नदियों पर स्थान-स्थान पर तीर्थ स्थलों का प्रादुर्भाव कर दिया है। भारतीय समाज में सैकड़ों वर्षों से इन तीर्थ स्थलों पर डुबकी लगाने की परम्परा है। कुछ श्रद्धालु अपने आस-पास के जलाशय या नदी में स्नान करके श्रद्धा प्रकट कर लेते हैं तो अनेक लोग तो दूर-दूर की नदियों में तीर्थाटन करते हैं। हर नदी का उद्गगम स्थान भी तीर्थ स्थल ही माना जाता है।

इसी श्रृंखला में एक अद्भुत तथ्य सामने आता है कि पारम्परिक विश्वास के अनुसार शक्ति की प्रतीक देवी के शरीर के अंग जहां-जहां गिरे या जहां-जहां उनका पदार्पण हुआ वहां भी मंदिर बने और श्रद्धा के केंद्र विकसित हुए। पुराणों की ही मानें तो जहां-जहां देवी सती के अंग के टुकड़े वस्त्र और गहने गिरे वहां-वहां मां के शक्ति पीठ बन गए। ये शक्ति पीठ पूरे जम्बूद्वीप में फैले हैं। देवी भागवत में 108 और देवी गीता में 72 शक्ति पीठों का जिक्र है। वहीं देवी पुराण में 51 शक्तिपीठ बताए गए हैं।वैष्णो देवी से लेकर कामाख्या तक पूरे भारत में शक्ति पीठों का जाल बिछा है। परन्तु परम्पराएं ऐसी बनीं कि इन बड़े श्रद्धा के केन्द्रों के छोटे-बड़े स्वरूप भारत के हर गांव, नगर में मिलते हैं। इतना ही नहीं जहां-जहां विदेशों में भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या बढ़ती है वहां भी शिव और देवी के श्रद्धा केन्द्र स्थापित हो जाते हैं। देवी-देवताओं के प्रति यह श्रद्धा सम्पूर्ण भारतीय समाज को जोड़कर एक आध्यात्मिक राष्ट्र का रूप देती है, जो पश्चिम से प्रभावित विदेशी और भारतीय विद्वानों को दिखता ही नहीं है।

इसी प्रकार हनुमान के मन्दिर भारत के कोने-कोने में मिलेंगे। प्रतिष्ठित मूर्तियों की शक्ल-सूरत भिन्न होते हुए भी उनमें एकरूपता स्पष्ट है। मुख्यत: पवनपुत्र हनुमान रामभक्त के रूप में पूजनीय हैं। अनेक जनजातियों में हनुमान की अर्चना का रिवाज है, बेशक वह किसी पेड़ के नीचे अनगढ़े पत्थर के रूप में ही क्यों न हों। मर्यादा पुरूषोत्तम राम की कथा रामायण और अधर्म पर धर्म की विजय की कथा महाभारत भी पूरे भारतीय समाज की आध्यात्मिक एकरूपता के प्रतीक हैं। विभिन्न भाषाओं में सौ से अधिक रामायण रची गई हैं। परन्तु मूल विषय एक ही है, कहानी में कुछ-कुछ भिन्नता स्थान व काल के अनुसार हो सकती है। इसी प्रकार गीता भी पूरे भारतीय जनमानस की बौद्धिक सम्पदा है। गीता के उपदेश की एक ही तरंग हर भारतीय के मन मस्तिष्क में प्रवाहित है। समझने की बात यह है कि पश्चिम की 'नेशन' की परिकल्पना भारत की राष्ट्र की व्याख्या से बिलकुल भिन्न है। नेशन का आधार राजनीति है परन्तु राष्ट्र की आत्मा अध्यात्म और संस्कृति है। इसलिए लिखने-बोलने में हमें दोनों शब्दों को समानार्थक प्रयोग में नहीं करना चाहिए। हिन्दी में हम नेशन शब्द को ले लें और अंग्रेजी में राष्ट्र शब्द को।◆◆◆

युद्ध स्मारक और राष्ट्रधर्म

... तरुण विजय

कुंभ में डुबकियां, मंदिर- अजान-चर्च सब ठीक है। लेकिन यदि सीमा, सैनिक और नागरिक लगातार आक्रमणों का शिकार हो रहे हों, तो कुछ भी ठीक नहीं रहता। भारतीय समाज स्मृति-लोप में जीता है या शायद इतने अधिक बर्बर आक्रमणों का, सदियों से वह शिकार बनता आया है कि वह न पानीपत का परिणाम याद करता है, न. 1947 की विभाजन की विभीषिका और उसके दो महीने बाद पाकिस्तानी हमले में गिलगित-बाल्टिस्तान गंवाना और मीरपुर का हिंदू नरसंहार झेलना। इसलिए आश्चर्य नहीं है कि चार-चार पूर्ण युद्ध और सात दशक लंबे अघोषित आतंकी हमलों को सहन करने वाले इस देश में हुतात्मा सैनिकों की याद में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक बनाने में सत्तर साल बीत गए। युद्ध स्मारक राष्ट्रीय समाज की अपने सैनिकों, उनके बलिदान और उनके परिजनों के प्रति सामूहिक सम्मान का ही प्रकटीकरण नहीं होता, बल्कि वह राष्ट्रीय स्वाभिमान और गौरव का ऐसा प्रतीक होता है, जिससे आने वाली पीढ़ियां प्रेरणा ग्रहण करती हैं। दिल्ली में 'अमर जवान ज्योति' उस इंडिया गेट की छाया में है, जो उन भारतीय सैनिकों की याद में ब्रिटिश साम्राज्य ने बनवाया था, जो ब्रिटिश और सहयोगी सेनाओं के लिए प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध में लड़े थे।

सरकार की सहायता के बिना चंडीगढ़ और बंगलूरू में सामाजिक सरोकर से जुड़े संस्थानों ने युद्ध स्मारक बनवाए। देहरादून में उत्तराखंड का सार्वजनिक क्षेत्र में युद्ध स्मारक बनाने के लिए छत्तीस वर्षों से (उत्तर प्रदेश के समय से ही)सैनिक संगठन मांग करते रहे। भारत सरकार में पूर्व रक्षा मंत्री के सहयोग से वहां राष्ट्रीय युद्ध स्मारक बनना शुरू हुआ, जिसमें इन पंक्तियों के लेखक ने अपनी सांसद निधि से 2.38 करोड़ रूपए दिए। फिर भी अनेक बाधाएं डाली गई। यह उस उत्तराखंड राज्य का हाल है, जहां प्राय: हर दूसरे घर से सैनिक और बलिदानी रणबांकुरे सीमा पर गए हैं और आज भी देश में आंकड़ों की दृष्टि से सर्वाधिक सैनिक इसी राज्य से भर्ती होते हैं। ब्रिटेन ने 1947 के बाद भी इस बात का ध्यान रखा कि भारत में उन सैनिकों की याद में बने स्मारकों, कब्रिस्तानों की वह अपने खर्च पर शानदार देखभाल करता रहे, जो ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति वफादार रहे और लड़े। दिल्ली से लेकर कोहिमा तक इनकी देखभाल के लिए 'कॉमनवेल्थ वार ग्रेव्ज कमीशन' तथा 'इंपीरियल वार ग्रेव्ज एंड सीमेट्री

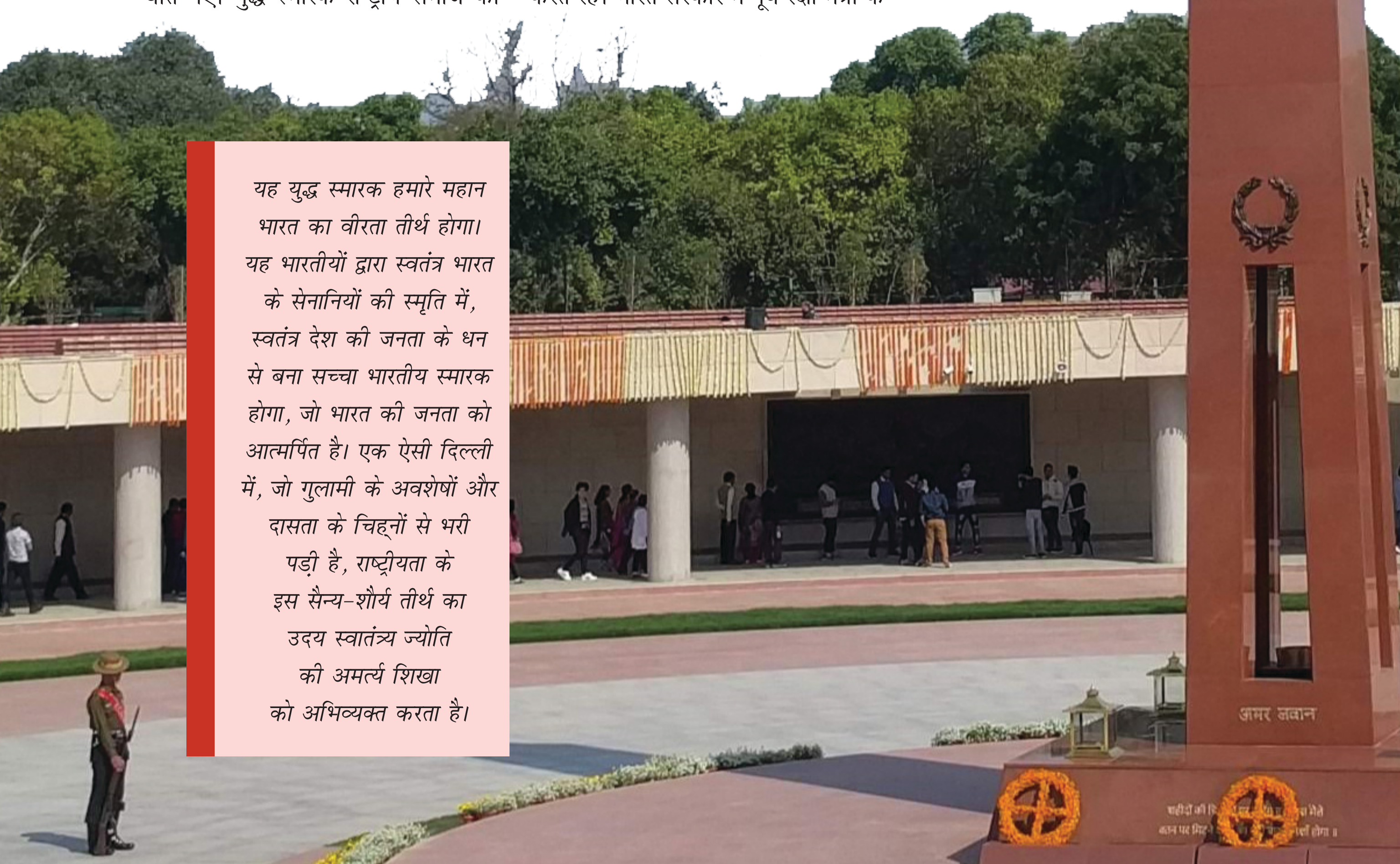

यह युद्ध स्मारक हमारे महान भारत का वीरता तीर्थ होगा। यह भारतीयों द्वारा स्वतंत्र भारत के सेनानियों की स्मृति में, स्वतंत्र देश की जनता के धन से बना सच्चा भारतीय स्मारक होगा, जो भारत की जनता को आत्मर्पित है। एक ऐसी दिल्ली में, जो गुलामी के अवशेषों और दासता के चिह्नों से भरी पड़ी है, राष्ट्रीयता के इस सैन्य-शौर्य तीर्थ का उदय स्वातंत्र्य ज्योति की अमर्त्य शिखा को अभिव्यक्त करता है।

ऑफ ब्रिटिश एम्पायर' जैसे संगठन करोड़ों पौंड के बजट पर चलते हैं। अपने साम्राज्य के लिए जान देने वाले 17 लाख सैनिकों (दुनिया के 153 देशों के लिए अंग्रेजों ने 2,500 स्मारक और कब्रें राष्ट्रमंडल के विभिन्न देशों में संभाली हुई हैं। लेकिन अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान तो हिंदुओं के रक्त, संस्कार और सभ्यता का अंश है। श्राद्ध, पितृ विसर्जन, तर्पण क्या वही नहीं है? इंडिया गेट के पास राष्ट्रीय युद्ध स्मारक निर्मित कर, एक प्रकार से अपने पुरखों के प्रति राष्ट्रीय ऋण की ही अदायगी की है। इसके लिए पांच सौ करोड़ रूपये की राशि बलिदानियों के प्रति दो बूंद अर्घ्य समान ही है। इस राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में 1947 के बाद से अद्यतन विभिन्न युद्धों- 1947-48, 1961 (गोवा), 1962 (चीन), 1965, 1971, 1987 (सियाचिन), 1987-88 (शांति सेना श्रीलंका), कारगिल-1999 व अन्य सैन्य अभियानों में बलिदान हुए सैनिकों के नाम उत्कीर्ण किए जाएंगे। इसके साथ ही एक राष्ट्रीय युद्ध संग्रहालय का निर्माण किया जाना भी प्रस्तावित है। यह युद्ध स्मारक हमारे महान भारत का वीरता तीर्थ होगा। यह भारतीयों द्वारा स्वतंत्र भारत के सेनानियों की स्मृति में, स्वतंत्र देश की जनता के धन से बना सच्चा भारतीय स्मारक होगा, जो भारत की जनता को आत्मर्पित है। एक ऐसी दिल्ली में, जो गुलामी के अवशेषों और दासता के चिह्नों से भरी पड़ी है, राष्ट्रीयता के इस सैन्य-शौर्य तीर्थ का उदय स्वातंत्र्य ज्योति की अमर्त्य शिखा को अभिव्यक्त करता है। भारत में स्मृति-लोपी सेक्युलर प्रभाव खत्म होना चाहिए। पूर्वजों के संघर्ष, जय-पराजय, दुख-सुख और पराक्रम की स्मृति राष्ट्र तथा समाज का प्राण होती है। सड़क, पानी, बिजली जीवन की आवश्यकताएं हैं, लेकिन मनुष्य काया की तरह राष्ट्र का एक मन, एक आत्मा होती है, जिसे स्मृति जिंदा रखती है। जिस देश को खत्म करना हो, वहां उसकी स्मृति, यानी सामूहिक स्मृति और जन-चैतन्य को मार दिया जाता है। आवश्यकता है कि अब विदेशी आक्रमणों के विरूद्ध भारतीय समाज के गौरवशाली प्रतिरोध, विजय-गाथाओं, हम पर हुए अत्याचारों और नरसंहारों के बाद क्रांतिकारी आंदोलनों को समेटे हुए स्वतंत्रता दिवस तक की यात्रा को 'विशाल-विराट भारतीय स्वतंत्रता-संग्रहालय में प्रस्तुत किया जाए।

आज तक आसेतु हिमाचल, कश्मीर से अंडमान, तवांग से ओखा तक भारतीय संघर्ष के महान अप्रतिम विश्व में अन्यत्र दुर्लभ उदाहरणों को एक साथ कहीं भी प्रस्तुत नहीं किया गया है। राजनेता अपने चुनावों पर दस-बीस हजार करोड़ रूपये खर्च करना सामान्य मानते हैं। एक सांसद लोकसभा चुनाव में 25-50 करोड़ तो यों ही खर्च कर देता है। हमारे देश के महिमावान सांसदों, विधायकों और पार्षदों के चुनाव में आज तक कितने अरब रूपये पोस्टरों, बैनरों तथा जन-एकत्रीकरण पर खर्च हुए। इसका 00.01 प्रतिशत भी यदि भारत अपने हुतात्माओं को श्रद्धांजलि देने और उनकी स्मृतियों को संजोने पर खर्च करे, तो यह वास्तविक राष्ट्रधर्म का निर्वाह होगा। और तभी कुंभ, नमाज-अजान, चर्च सुरक्षित रह पाएंगे। इन सबका क्रम 'जय हिंद' के बाद ही आता है। ◆◆◆

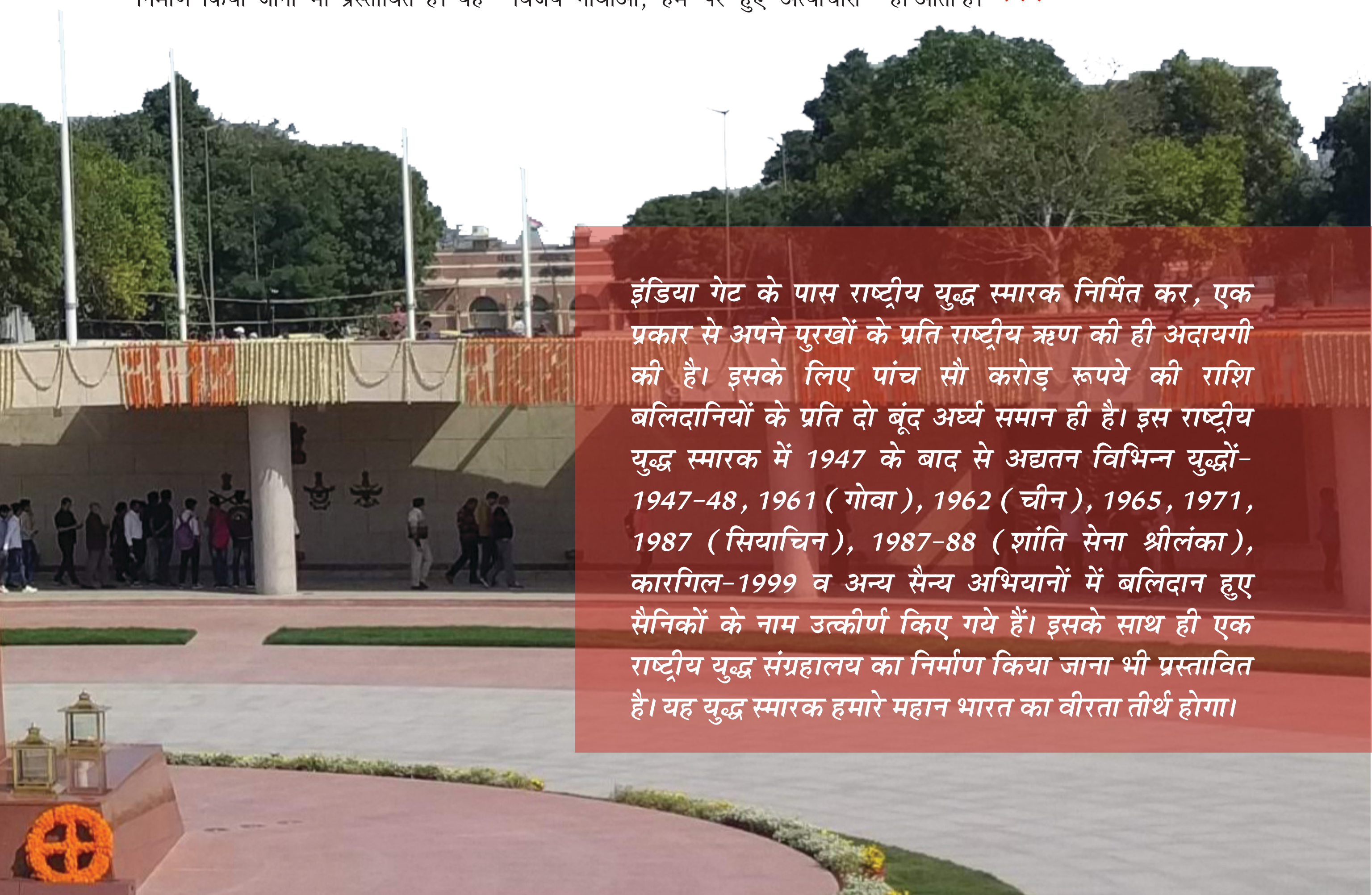

> *इंडिया गेट के पास राष्ट्रीय युद्ध स्मारक निर्मित कर, एक प्रकार से अपने पुरखों के प्रति राष्ट्रीय ऋण की ही अदायगी की है। इसके लिए पांच सौ करोड़ रूपये की राशि बलिदानियों के प्रति दो बूंद अर्घ्य समान ही है। इस राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में 1947 के बाद से अद्यतन विभिन्न युद्धों- 1947-48, 1961 (गोवा), 1962 (चीन), 1965, 1971, 1987 (सियाचिन), 1987-88 (शांति सेना श्रीलंका), कारगिल-1999 व अन्य सैन्य अभियानों में बलिदान हुए सैनिकों के नाम उत्कीर्ण किए गये हैं। इसके साथ ही एक राष्ट्रीय युद्ध संग्रहालय का निर्माण किया जाना भी प्रस्तावित है। यह युद्ध स्मारक हमारे महान भारत का वीरता तीर्थ होगा।*

युवा-आदर्शों का विस्मृत अध्याय

वज़ीर राम सिंह पठानिया

... डॉ. जय प्रकाश सिंह

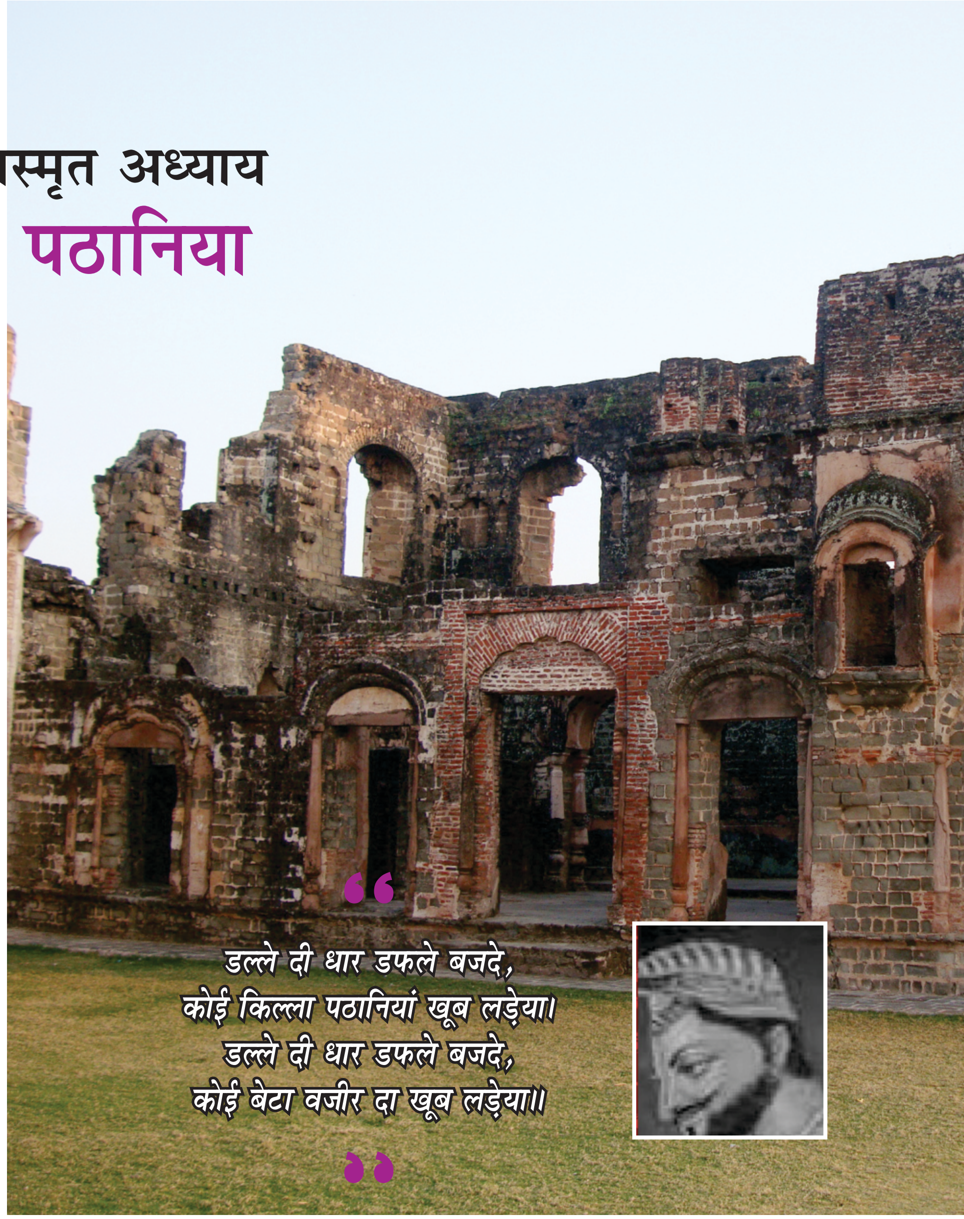

सुविधा भोगी सन्नाटों के बीच सच के रास्ते को चुनने, और उस पर चलने का काम कुछ धीर-वीर ही कर पाते हैं। इसके साथ एक हकीकत यह भी है कि जो ऐसे रास्ते पर अकेले चलने की हिम्मत जुटा लेते हैं वह नायक बनकर लोकस्मृति में दर्ज हो जाते हैं। तभी तो विश्वकवि 'तोर दक शुने केऊ ना ऐसे तबे एकला चला रे' के जरिए लोगों से अकेला चलने की गुहार लगाते हैं और हिमाचली मानस 'किल्ला पठानियां खूब लड़ेया' के जरिए वीर राम सिंह पठानिया को याद करता है। अंग्रेजों के दमनचक्र के खिलाफ अगर 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन हुआ, तो उसकी पहली चिंगारी वजीर राम सिंह पठानिया के रूप में फूटी थी। विधर्मी अंग्रेजी हुकूमत की ज्यादतियों के खिलाफ पहली तलवार वजीर राम सिंह पठानिया की उठी, जिन्होंने नूरपुर रियासत को अंग्रेजों से स्वतंत्र करवा लिया था। किशोरवय उम्र में वीर राम सिंह पठानिया ने यह दिखा दिया कि अकेले चलकर भी विरोध की ऐसी चिंगारी पैदा की जा सकती है जो अन्याय की हुकूमत को घुटने के बल पर खड़ा कर दे। उन्होंने छोटी सी उम्र में ही जिस धीरता-वीरता का परिचय दिया वह आज भी लाखों-करोड़ों युवाओं को देशभक्ति की भावना से भर देती है। दुर्भाग्य यह है कि हिमाचल के इस वीर सपूत की शौर्य गाथा से आज की नई पीढ़ी अपरिचित है।

राम सिंह पठानिया का जन्म नूरपुर के बासा वजीरां में वजीर शाम सिंह एवं इंदौरी देवी के घर 1824 में हुआ था। उस समय अंग्रेजों की ललचाई आंखें पंजाब समेत पूरे भारत पर थी। पिता के बाद इन्होंने 1848 में वजीर का पद संभाला। उस समय रियासत के राजा वीर सिंह का देहांत हो चुका था। उनका बेटा जसवंत सिंह केवल दस साल का था। अंग्रेजों ने जसवंत सिंह को नाबालिग बताकर राजा मानने से इनकार कर दिया तथा उसकी पगार 20,000 रूपए वार्षिक निर्धारित कर दी। यह शर्त भी थोप दी थी कि वह नूरपुर से बाहर आकर रहें।

राम सिंह पठानिया और उनके पिता को अंग्रेजों की ये शर्तें मंजूर नहीं थीं। इसलिए जालंधर के कमिश्नर जॉन लारेंस और हर्सकान ने इस रियासत पर सख्ती बरतनी शुरू कर दी। बाद में लोभ पैदा करने के लिए जॉन लॉरेंस ने इतनी रियायत दे दी कि नूरपुर का राजा जहां भी रहना चाहे रह सकता है, बशर्ते वह वजीर शाम सिंह और उसके पुत्र राम सिंह को पद से हटा दें। अंग्रेजों की यह धूर्तता राम सिंह को पसंद नहीं आई और इसका उचित जवाब देने का मन बना लिया। उन्होंने अंग्रेजी षड्यंत्र का जवाब देते हुए जसवंत सिंह को नूरपुर का राजा और खुद को उसका वजीर घोषित कर दिया। उनके विद्रोह की खबर जब होशियारपुर पहुंची, तो अंग्रेजों ने शाहपुर किले पर हमला कर दिया। जब अंग्रेजी सेना का दबाव बढ़ा, तो मजबूरी में राम सिंह और उनके साथियों को रात के समय किला छोड़ना पड़ा। उन्होंने जम्मू से मन्हास, जसवां से जसरोटिये, अपने क्षेत्र से पठानिये और कटोच राजपूतों को एकत्र

> *हिमाचली मानस 'किल्ला पठानियां खूब लड़ेया' के जरिए वीर राम सिंह पठानिया को याद करता है। अंग्रेजों के दमनचक्र के खिलाफ अगर 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन हुआ, तो उसकी पहली चिंगारी वजीर राम सिंह पठानिया के रूप में फूटी थी। विधर्मी अंग्रेजी हुकूमत की ज्यादतियों के खिलाफ पहली तलवार वजीर राम सिंह पठानिया की उठी, जिन्होंने नूरपुर रियासत को अंग्रेजों से स्वतंत्र करवा लिया था। किशोरवय उम्र में वीर राम सिंह पठानिया ने यह दिखा दिया कि अकेले चलकर भी विरोध की ऐसी चिंगारी पैदा की जा सकती है जो अन्याय की हुकूमत को घुटने के बल पर खड़ा कर दे। उन्होंने छोटी सी उम्र में ही जिस धीरता-वीरता का परिचय दिया वह आज भी लाखों-करोड़ों युवाओं को देशभक्ति की भावना से भर देती है।*

किया। 14 अगस्त, 1848 की रात में इन सभी ने शाहपुर कंडी दुर्ग पर हमला बोल दिया। वह दुर्ग उस समय अंग्रेजों के अधिकार में था। भारी मारकाट के बाद 15 अगस्त को राम सिंह ने अंग्रेजी सेना को खदेड़कर दुर्ग पर अपना झंडा लहरा दिया। कहा जाता है कि राम सिंह पठानिया की 'चंडी' नामक तलवार 25 सेर वजन की थी। पठानिया की वीरता और उनकी तलवार का खौफ अंग्रेजों के सिर चढ़कर बोलता था।

अपने हौसले और वीरता से वजीर राम सिंह पठानिया ने अंग्रेजों के नाक में दम कर रखा था। आमने-सामने की कई लड़ाइयों में मुंह की खाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाए। उन्हीं के एक पुरोहित मित्र ने अंग्रेजों के लालच में आकर उन्हें पकड़ने का भेद बता दिया कि राम सिंह पूजा के वक्त अपने पास कोई हथियार नहीं रखते। पूजा के वक्त जब उन्हें घेर लिया, तो अपने कमंडल से ही उन्होंने नौ ब्रिटिश सैनिकों को मार डाला था। एक युद्ध में कई अंग्रेजों ने मिलकर षड्यंत्रपूर्वक घायल वीर रामसिंह को पकड़ लिया। उन पर फौजी अदालत में मुकदमा चलाकर आजीवन कारावास के लिए पहले सिंगापुर और फिर रंगून भेज दिया गया। रंगून की जेल में ही 17 अगस्त, 1849 को इस वीर सपूत ने अपने प्राण त्याग दिए। वजीर राम सिंह पठानिया की शहादत के प्रति इससे बड़ा और अन्याय क्या हो सकता है कि वर्तमान पीढ़ी उनके बारे में अनभिज्ञ हो। इसके कसूरवार वे तमाम इतिहासकार हैं, जिन्होंने जानबूझ कर भारतीय इतिहास के इस पराक्रमी किरदार को पाठ्यक्रम में जगह नहीं दी। आज जब देश, धर्म का संघर्ष हथियारों से अधिक विचारों से लड़ा जा रहा है और युवाओं के सामने आदर्शों के अकाल की स्थिति पैदा कर दी गई है, वीर राम सिंह पठानिया की वीरगति को याद किया जाना आवश्यक हो गया है। उनका स्मरण युवाओं में ऊर्जा का नव स्रोत उत्पन्न कर सकता है। राम सिंह पठानिया ने जब क्रान्ति का बिगुल फूंका था तो उनकी उम्र महज 23 वर्ष थी। उनकी मां चण्डी में अगाध श्रद्धा थी। अपने धर्म के प्रति वह बहुत सजग थे और देश के लिए सब कुछ समर्पित करने का संकल्प भी उनके पास था। वर्तमान समय में युवाओं को भ्रमित करने की कोशिशें चल रही हैं, नशे का दलदल गहरा होता जा रहा है, शैक्षणिक संस्थानों में विभाजनकारी प्रवृतियां पल रही हैं, वीर राम सिंह पठानिया के आदर्श को युवाओं के सामने रखना राष्ट्रीय कर्म बन जाता है।

◆◆◆

मातृवन्दना के समस्त पाठकों को विक्रमी संवत् भारतीय नववर्ष 2076 की हार्दिक शुभकामनाएं

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

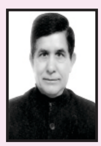

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

राष्ट्रीय तीर्थ
सोमनाथ

... सुभाष चन्द्र सूद

भारत के पश्चिमी तट पर सौराष्ट्र क्षेत्र गुजरात प्रान्त में वेरावल बन्दरगाह के प्रभास पाटन क्षेत्र स्थित सोमनाथ का प्राचीन मन्दिर हमारे सनातन हिन्दू धर्म के उत्थान, वैभव, विध्वंस एवं पुनर्निमाण का अद्भुत अर्वाचीन संगम है। द्वादश ज्योर्ति- लिंगों में से सर्व प्रथम शाश्वत, तेजोमय प्रकाशवान ज्योर्तिलिंग यह अनुपम राष्ट्रीय धार्मिक तीर्थ स्थल है।

प्राचीन काल में वेरावल बंदरगाह से ईरान, अफ्रीका के साथ इसके विशेष व्यापारिक, सामुद्रिक सम्बन्ध थे इसलिए विदेशी पर्यटकों, यात्रियों ने भी इसकी सम्पन्नता एवं वैभव से आकर्षित होकर अनेकों वृतान्त लिखे। अरबी यात्री अलबरूनी एवं यूरोपीय मार्को पोलो ने इस स्थान का वर्णन प्राचीन, अति समृद्ध एवं वैभवशाली मन्दिरों के रूप में किया है। उनके यात्रा विवरण के अनुसार इसके निर्वाह हेतु 10,000 गांव 1000 पुजारी अर्चक रूप में कार्यरत थे। अभिषेक हेतु गंगाजल काशी से आता था तथा केसर, कमल पुष्प कश्मीर से स्वर्ण शिवलिंग युक्त गर्भगृह में सोने, हीरे, जवाहरात के बहुमूल्य आभूषणों से सुसज्जित अनेक मूर्तियां विद्यमान थी।

दूसरी शताब्दी में देश के राष्ट्रीय स्वरूप में शिथिलता आने से अरबी मुसलमानों के जिहादी मुस्लिम आक्रांताओं ने इस मन्दिर की वैभवता एवं सम्पन्नता पर कुदृष्टि डालकर बारम्बार इसे खंडित कर रक्तरंजित करने का दुष्कर्म किया। सन् 1024 में महमूद गजनी ने इसे लूटा एवं शिवलिंग खडिंत किया तत्पश्चात् अल्लाउद्दीन खिलजी गुजरात के मुहम्मद बेगरा एवं धर्मान्ध औरंगजेब ने इसे बारम्बार खंडित किया। 1024 से सन् 1783 तक इसके मूलस्थान पर विदेशी विध्वंस एवं पुनर्निमाण का राष्ट्रीय चक्र अनवरत चलता रहा। अन्तिम बार 1783 में इन्दौर की महारानी देवी अहिल्या बाई द्वारा इसका पुनर्निमाण कराया गया।

विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा इसके विध्वंस के समय स्थानीय राजा भीमदेव, सिद्धराज कुमार पाल ने इसकी रक्षा हेतु अनेकों युद्ध किये एवं पुनर्निमाण कार्य भी कराया। राणा हमीरदेव गोविल का प्रतिकार रूप आज भी उनकी आदम कद मूर्ति के रूप में प्रस्थापित, उनके शौर्य की याद दिलाता है। सोमनाथ मन्दिर अरब सागर के किनारे तट पर व्यवस्थित अर्पूव सागरीय सौन्दर्य एवं वैभव के साथ प्रस्थापित है जिसका एक कोना सुदूर दक्षिणी ध्रुव तक परिलक्षित है।

सन् 1947 में भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति एवं 558 देशी राज्यों के भारत में विलय के साथ तत्कालीन उपप्रधानमन्त्री एवं गृहमन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने जूनागढ़ के विलय के साथ पट्टन क्षेत्र स्थित भग्नावशेष सोमनाथ मन्दिर का प्रवास किया। उनके साथ जाम साहेब, कन्हैया लाल म0 मुन्शी, यू.एन ढेवर एवं न. ह.गाडगिल सदृश वरिष्ठ केन्द्रीय मन्त्री भी साथ थे। सोमनाथ मन्दिर के विध्वंसक भग्नावशेष, जीर्ण-शीर्ण मन्दिर अवशेष एवं स्थान-स्थान पर कब्रों का हृदय विदारक स्वरूप देखकर उनका लौह हृदय भी चीत्कार कर उठा तथा उन्होंने सबके सन्मुख समुद्र का जल लेकर अपने सहयोगी साथियों के साथ भगवान

सोमनाथ के मन्दिर के पुनर्निर्माण का संकल्प व्रत लिया तथा सामुद्रिक अभिषेक किया।

पुरातत्व विभाग द्वारा इसके मूलस्थान पर उत्खनन कर अवशेषों को स्थानीय म्यूजियम में सुरक्षित रखा गया। 800 साल बाद नागरशैली में निर्मित इस भव्य मन्दिर का पुनर्निर्माण प्रसिद्ध वास्तुकार प्रभाशंकर सोमपुरा ने किया। 1155 फीट ऊंचे 72 खम्भों वाले इस विस्तीर्ण मन्दिर का लोकार्पण सन् 1950 को स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रभास पाटन क्षेत्र स्थित भगवान सोमनाथ का मन्दिर हमारी धार्मिक राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एकता का अद्भुत राष्ट्रीय संगम है। भगवान कृष्ण का भालका तीर्थ क्षेत्र यहीं स्थित है। जहां उन्होंने देहावसान तथा स्वर्गारोहण किया। यह क्षेत्र प्राचीन काल में बौद्ध धर्म एवं पाशुपात सम्प्रदाय का भी महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल था। यह कृष्ण, राम एवं परशुराम की भी विशेष स्थली थी। यह बल्लभाचार्य की 65वीं हरिहर बैठक की एवं शैव, वैष्णव सम्प्रदाय की भी अद्भुत मिलन स्थली रही है। भगवान सोमनाथ का मन्दिर हमारे राष्ट्रीय उत्थान, वैभव, विदेशी विध्वंस एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं राष्ट्रीय अस्मिता की गौरव रक्षा हेतु किये गये संघर्षों, बलिदानों की अमर याद दिलाता रहता है। प्रत्येक भारतीय के लिये यह एक पर्यटन स्थल एवं तीर्थ यात्रा हेतु एक अविस्मरणीय श्रेष्ठ राष्ट्रीय तीर्थ स्थल है। ◆◆◆

> *प्राचीन काल में बौद्ध धर्म एवं पाशुपत सम्प्रदाय का भी महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल था। यह कृष्ण, राम एवं परशुराम की भी विशेष स्थली थी। यह वल्लभाचार्य की 65वीं हरिहर बैठक की एवं शैव, वैष्णव सम्प्रदाय की भी अद्भुत मिलन स्थली रही है। भगवान सोमनाथ का मन्दिर हमारे राष्ट्रीय उत्थान, वैभव, विदेशी विध्वंस, पुनर्निर्माण एवं अस्मिता की गौरव रक्षा हेतु किये गये संघर्षों, बलिदानों की अमर याद दिलाता रहता है। प्रत्येक भारतीय के लिये यह पर्यटन स्थल व तीर्थ यात्रा हेतु एक अविस्मरणीय श्रेष्ठ राष्ट्रीय तीर्थ स्थल है।*

पुलवामा शहीदों के सम्मान में 501 कुण्डीय यज्ञ

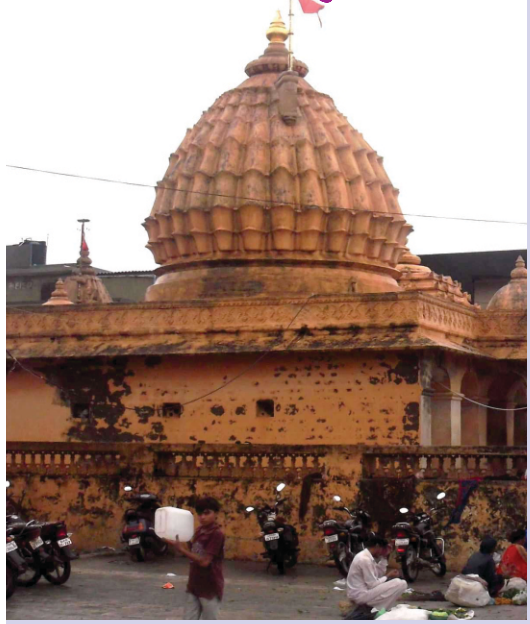

हरिद्वार में भारत माता मन्दिर के अधिष्ठाता स्वामी सत्यामित्रानंद के सानिध्य एवं अध्यक्षता में गत 8 मार्च से 13 मार्च 2019 तक 501 कुण्डीय यज्ञशाला का भव्य आयोजन पुलवामा के 42 शहीद सैनिकों के सम्मान में आयोजित किया गया। देश के विभिन्न भागों एवं इंग्लैण्ड, कनाडा, कीनिया, उगांडा अफ्रीका से लगभग एक लाख लोगों एवं यज्ञ के सहभागियों ने भी इसमें भाग लिया। उन्होंने शहीदों के सम्मान की रक्षा एवं बलिदानों को अक्षुण्ण बनाये रखने तथा देश की आर्थिक, सैनिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता के व्रत का संकल्प लिया। राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में बाबा रामदेव, पूर्व शंकराचार्यो, महामण्डलेश्वरों एवं विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों ने भी भाग लिया। अन्तिम दिन संगीत संध्या कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध गायिका अनुराधा पौडवाल द्वारा सुमधुर प्रस्तुति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में उत्तराखण्ड व हिमाचल के विविध लोकनृत्य तथा गायन प्रस्तुत कर शहीदों को श्रद्धांजंलि अर्पित की गई। ◆◆◆

आतंकवाद को कुचलने के लिए ठोस कदम

... नरेन्द्र सहगल

> "भारतवासियों की पुरजोर मांग है कि भारत सरकार धारा 370 को हटाए, पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करे और इस नापाक मुल्क को नेस्तनाबूद करने के लिए अभियान छेड़े।"

पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से निपटने के लिए भारत सरकार ने अनेक ठोस/सख्त कदम उठाए हैं। पाकिस्तान को दिए गए 'सर्वाधिक तरजीही देश' का दर्जा वापस लेना, सेना को सैन्य कार्यवाही के लिए खुली छूट, पाकिस्तान के साथ राजनयिक सम्बन्धों को सीमित करना, अलगाववादी सरगनाओं से सरकारी सुरक्षा तथा सुविधाएं वापस लेना, मात्र 100 घंटों में पुलवामा हमले के गुनहगार गाजी को मार गिराना, पाकिस्तान को दान में दिए जा रहे भारत की नदियों के पानी को रोकना और विश्व के प्राय: सभी राष्ट्रों से समर्थन जुटा लेना इत्यादि ऐसे ठोस कदम हैं जिससे पाकिस्तान के परखच्चे उड़ने शुरू हो गए हैं। साहस, शौर्य और हिम्मत के धनी भारत के प्रधानमंत्री ने आतंकवाद को समाप्त करने में विश्व जनमत जुटा लेने में सफलता प्राप्त कर ली है। अब सवा सौ करोड़ (कुछ गद्दारों को छोड़कर) भारतवासियों की पुरजोर मांग है कि भारत सरकार धारा 370 को हटाए, पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करे और इस नापाक मुल्क को नेस्तनाबूद करने के लिए अभियान छेड़े।

सारा देश (कुछ राजनीतिक कुबुद्धियों को छोड़कर) सरकार के साथ खड़ा है। पाकिस्तान के साथ अब दो-दो हाथ करने से परहेज करने की कोई जरूरत नहीं है। परन्तु यह आमने-सामने की जंग अब निर्णायक होनी चाहिए। पाकिस्तान के घुटने टिकवाने नहीं, उसके घुटने तोड़ने होंगे। यहां पर यह याद दिलाना भी जरूरी है कि पाकिस्तान के साथ हुए अब तक के चार युद्धों में भारत की सेनाएं विजयी रही, जवानों ने अपने बलिदान देकर पाकिस्तान के छक्के छुड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी परन्तु युद्ध के बाद वार्ता की मेज पर हमने इस विजय को पराजय में बदल कर दुश्मन पाकिस्तान को प्राणदान दिये। 1948 के युद्ध में मोर्चे पर आगे बढ़ते

हुए हमारे जवानों के कदमों में यू.एन.ओ. की बेड़ियां डाल दी गईं। एक तरफा युद्ध विराम करके हमने 2/3 कश्मीर को पाकिस्तान को सौंप दिया। अगर उस समय एक धक्का और लग जाता तो पाकिस्तान की कमर ही टूट जाती। नतीजा सबके सामने है। हम 70 साल बाद भी अपने उस कश्मीर को पाकिस्तान के कब्जे से छुड़ा नहीं सके। 1965 के भारत-पाक युद्ध में हमारी फौजें अंतरराष्ट्रीय सीमा और युद्ध विराम रेखा को पार करके पाकिस्तान के सीने पर चढ़ गईं थीं।

हमने फिर समझौते की मेज पर बैठकर भारतीय जवानों द्वारा अपना खून बहाकर अर्जित किए क्षेत्रों को पाकिस्तान के हवाले कर दिया। अगर उस समय युद्ध विराम न करते तो पाकिस्तान के प्राण निकल जाते। हम यहां भी चूक गए। 1971 के भारत-पाक युद्ध में हमारे बहादुर सैनिकों ने पूर्वी पाकिस्तान को आजाद करवा कर पाकिस्तान के दो टुकड़े तो कर दिए परन्तु बाद में क्या हुआ? पाकिस्तान के प्रधानमंत्री मियां भुट्टो जब शिमला में भारत के आगे गिड़गिड़ाने आए तो हमने भारतीय सेना द्वारा बंदी बनाए गए पाकिस्तान के 93 हजार सैनिकों को वापस करने के साथ अपने द्वारा अर्जित क्षेत्रों को फिर वापस कर दिया। 1999 के कारगिल युद्ध के समय हमारे वीर सैनिकों ने विकट परिस्थितियों में भी ऊंची पहाड़ियों पर मोर्चों में तैनात पाकिस्तान के सभी घुसपैठियों (फौजियों) को मार गिराया था।

अगर उस समय और भी ज्यादा कठोर कार्यवाही करके कृत्रिम नियंत्रण रेखा को लांघ कर पाकिस्तान के गिरेवान तक पहुंचा गया होता तो उस नापाक देश की तबाही लगभग तय थी। हमने वहां भी भयंकर चूक कर डाली। पाकिस्तान के साथ हुए पहले युद्ध में कश्मीर के जिस हिस्से को हमने अपनी भूलों के कारण गंवा दिया था, उस कश्मीर को हम आगे के तीन युद्धों में मुक्त क्यों नहीं करवा सके? इसका एक ही उत्तर है कि हमारे सामने युद्ध का कोई उद्देश्य नहीं था। हम केवल रक्षात्मक रणनीति के तहत अपनी सैनिक कार्यवाही करते रहे। पाकिस्तान ने यह सभी युद्ध हमारे कश्मीर पर कब्जा करने के उद्देश्य से किए, परन्तु हम विजयी होकर भी पाक अधिकृत कश्मीर को वापस नहीं ले सके। अब फिर नापाक पड़ोसी देश को तोड़ने का समय आ पहुंचा है। समस्त भारतवासी उम्मीद करते हैं कि इस बार हमारी सरकार हमारे वीर सैनिकों की बहादुरी को समझौते की मेज पर बैठकर कलम के एक ही झोंके से साफ नहीं कर देगी। इस बार की जंग चाहे वह किसी भी रूप में हो (छोटी या बड़ी) निर्णायक होनी चाहिए। ◆◆◆

पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से निपटने के लिए भारत सरकार ने अनेक ठोस/सख्त कदम उठाए हैं। पाकिस्तान को दिए गए 'सर्वाधिक तरजीही देश' का दर्जा वापस लेना, सेना को सैन्य कार्यवाही के लिए खुली छूट, पाकिस्तान के साथ राजनयिक सम्बन्धों को सीमित करना, अलगाववादी सरगनाओं से सरकारी सुरक्षा तथा सुविधाएं वापस लेना, मात्र 100 घंटों में पुलवामा हमले के गुनहगार गाजी को मार गिराना, पाकिस्तान को दान में दिए जा रहे भारत की नदियों के पानी को रोकना और विश्व के प्रायः सभी राष्ट्रों से समर्थन जुटा लेना इत्यादि ऐसे ठोस कदम हैं जिससे पाकिस्तान के परखच्चे उड़ने शुरू हो गए हैं। साहस, शौर्य और हिम्मत के धनी भारत के प्रधानमंत्री ने आतंकवाद को समाप्त करने में विश्व जनमत जुटा लेने में सफलता प्राप्त कर ली है।

आईए!
राष्ट्रभाव की जोत जगाएं

... चेतन कौशल

राष्ट्रीय भावना हर व्यक्ति के हृदय में जन्म से ही विद्यमान होती है। उसे आवश्यकता होती है तो मात्र सही मार्गदर्शन की। सही दिशा-बोध होने पर ही वह व्यक्ति जीवन में अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हो पाता है। ऐसे में एक सजग नागरिक का हृदय कह सकता है-

हम सब भारत के नागरिक हैं तो हमारा यह भी दायित्व बन जाता है कि हम देशहित में ही कार्य करें। हम जो भी कार्य कर रहे हैं, देश हित में कर रहे हैं। इस सोच के साथ हर कार्य करने से देश का विकास होना निश्चित है। हम अपने घर को अच्छा बना सकते हैं तो अपने देश भारत को क्यों नहीं? अगर देश और समाज में कहीं अशांति हो तो हम शांति से कैसे रह सकते हैं। भारतीय होने का दम भरने वाले हम भारत विरोधी शक्तियों को अलग-थलग कर सकते हैं। हमारा उन माताओं को शत-शत नमन है जो राष्ट्रहित में सोचती हैं और अपनी संतानों को राष्ट्रहित के कार्य करने के योग्य बनाती हैं। उन गुरूओं को हमारा कोटि-कोटि नमन जो विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भाव जागृत करते हैं और उन्हें जीवन की हर चुनौति का सामना करने में सक्षम बनाते हैं। उन नेताओं को शत-शत प्रणाम जो क्षेत्र, राज्य और राष्ट्रको अपना समझते हैं और जनता के साथ बिना भेद-भाव, एक समान व्यवहार करते हैं। हम उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं जो मातृभूमि की रक्षा हेतु अपना शीश न्यौछावर करते हैं। किसान देश का अन्नदाता है, उसको शत-शत नमन। विविध क्षेत्रों में कार्यरत एवं कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मठ देशवासियों को जो

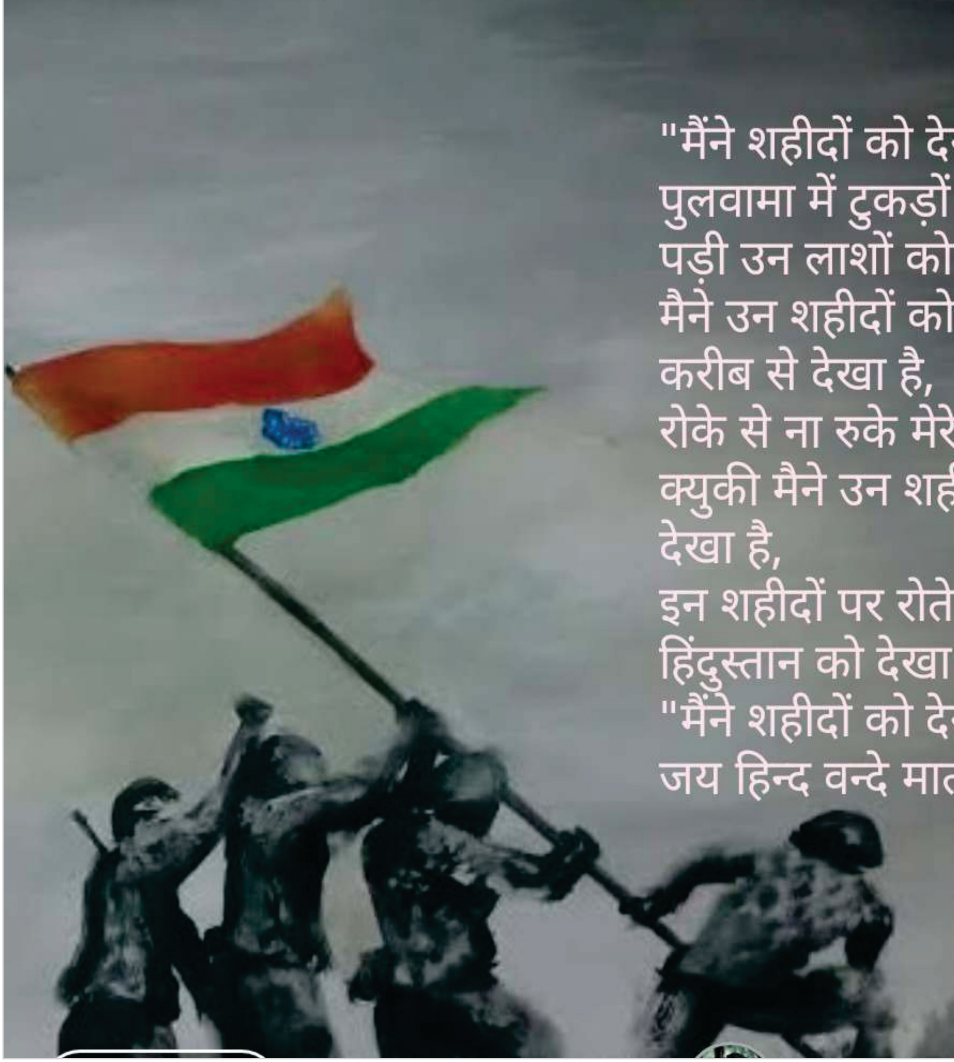

राष्ट्र के विकास में सतत क्रियाशील हैं तथा ज्ञात-अज्ञात सभी शहीदों और सीमा की रक्षा में तत्पर शत्रुओं के दांत खट्टे करने में सक्षम वीर सैनिकों को शत-शत नमन।

देश के प्रति दुर्भावना

दुर्भाग्य से देश भर में कुछ धर्म और जातियों के ठेकेदारों के द्वारा देश को धर्म और जातियों में विभक्त करने का षड्यंत्र जारी है। वे देश को बांटने के नित नये-नये हथकंडे व बहाने ढूंढ रहे हैं। धर्म, क्षेत्र और जातियों की आड़ में उनका उद्देश्य लोगों को एक दूसरे के विरूद्ध भड़काना है। देश को खण्डित करना है। वे भूल गए हैं कि हमने जो आजादी प्राप्त की है उसकी हमें कितनी कीमत चुकानी पड़ी है?

कोई व्यक्ति जिस थाली में खा रहा हो, अगर वह उसी में छेद करना शुरू कर दे तो उसे देश का शत्रु नहीं तो और क्या कहें? जिनके मुंह से कभी 'जयहिन्द' 'वन्देमातरम्', 'भारत माता की जय', नहीं निकलता वे देश के हितैषी कैसे हो सकते हैं? शत्रु छोटा हो या बड़ा, भीतर हो या बाहर, उसे कभी कम नहीं आंका जा सकता। हमारे संग 'भारत माता की जय', 'जय भारत', 'जयहिंद', 'वंदेमातरम' बोल कर दिखाओ, मान जाएंगे कि तुम भारतीय हो। देश ने आजादी वीर/वीरांगनाओं का खून देकर पाई है। किसी के भी द्वारा देश को धर्म या जातियों में बांटना हमें अब स्वीकार नहीं है।

आजादी मिलने के पश्चात् देश भर में जहां राष्ट्रीय भावना में वृद्धि होनी चाहिए थी वहां उसमें समय के साथ-साथ भारी गिरावट देखी जा रही है। स्थिति गंभीर ही नहीं, अति चिंतनीय है। अब तो देश के समझदार एवं सजग नागरिकों के मन में ऐसे प्रश्न पैदा होने लगे हैं। देशहित की भावना देशभक्तों में नहीं होगी तो क्या

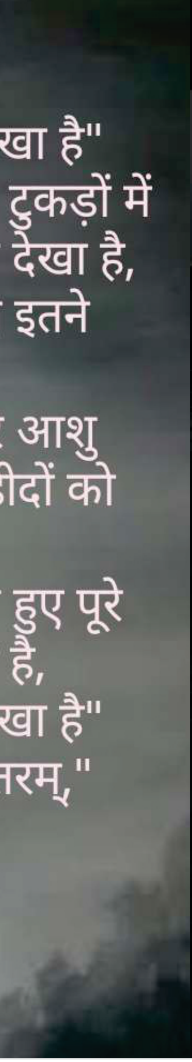

गद्दारों में होगी? व्यक्ति परिवार के बिना, परिवार समाज के बिना और समाज सुव्यवस्था के बिना सुखी नहीं रह सकते। तिनका-तिनका जोड़ने से घोंसला बनता है तो राष्ट्र हित में देशवासियों द्वारा दिया गया योगदान राष्ट्र निर्माण में सहायक होगा। शिक्षित एवं सभ्य अभिभावक बच्चों को संस्कारवान बना सकते हैं तो भावी नागरिकों को देश की एक सशक्त शिक्षा-प्रणाली क्यों नहीं? भवन का निर्माण ईंटों के बिना, राष्ट्र का विकास जन सहयोग के बिना संभव कैसे हो सकता है? धर्म व जाति के नाम पर समाज को क्षति पहुंचाने वाले, क्या कभी राष्ट्र के हितैषी हो सकते हैं? देश की सीमाएं सजग सेना के बिना और समाज आत्मरक्षा किए बिना सुरक्षित कैसे रह सकता है?

आवश्यकता है पुनः विचार करने की

हर युग में राम होते हैं, रावण भी होते हैं, वही लोग अपने जीवन में अपना एक नया इतिहास रच जाते हैं, जो इतिहास रचने की क्षमता रखते हैं। सक्षम बनो, अक्षम नहीं। समाज में शांति बनाए रखना भी धर्म का ही कार्य है, उसकी रक्षा हेतु हम सबको हर पल तैयार रहना चाहिए। वीर पुरूष शेर की तरह जिया करते हैं। वे शहीद हो जाते हैं या फिर वे एक नया इतिहास रच देते हैं। जुड़ा हुआ है जो निरंतर काम से, आज उम्मीद है देश को उसी से? हमेशा सजग रहो और स्वयं सुरक्षित रहो। सक्षम लोग ही अक्षमों को सक्षम बना सकते हैं। समाज की आपसी एकता ही उसके राष्ट्र की अखण्डता होती है। राष्ट्र है तो हम हैं, राष्ट्र नहीं तो हम और तुम भी नहीं रहेंगे। आइए! राष्ट्रीय भावना की अखण्ड जोत जगाएं, असामाजिक तत्वों को दूर भगाएं। ◆◆◆

> “ *हम सब भारत के नागरिक हैं तो हमारा यह भी दायित्व बन जाता है कि हम देशहित में ही कार्य करें। हम जो भी कार्य कर रहे हैं, देश हित में कर रहे हैं। इस सोच के साथ हर कार्य करने से देश का विकास होना निश्चित है। हम अपने घर को अच्छा बना सकते हैं तो अपने देश भारत को क्यों नहीं? अगर देश और समाज में कहीं अशांति हो तो हम शांति से कैसे रह सकते हैं। भारतीय होने का दम भरने वाले हम भारत विरोधी शक्तियों को अलग-थलग कर सकते हैं। भारतीय होने का दम भरने वाले हम भारत विरोधी शक्तियों को अलग-थलग कर सकते हैं। हमारा उन माताओं को शत-शत नमन है जो राष्ट्रहित में सोचती हैं और अपनी संतानों को राष्ट्रहित के कार्य करने के योग्य बनाती हैं।* ”

एक ग्रह ऐसा भी जहां दिन में तीन बार होता है सूर्योदय

कहां

बच्चों, क्या आपको पता है कि हमारी पृथ्वी से मात्रा 340 प्रकाश वर्ष दूर एक ऐसा ग्रह भी है जिस पर तीन बार सूर्योदय और तीन बार सूर्यास्त होता है। यह ग्रह तारामंडल सेंटोरस में स्थित है जो करीब 1.6 करोड़ साल पुराना है। यह ग्रह आज तक खोजे सबसे नये ग्रहों में से एक है। इस ग्रह का द्रव्यमान पृथ्वी और बृहस्पति ग्रह से चार गुना अधिक है। यह ग्रह तीन तारों की परिक्रमा लगता है और हर दिन इस ग्रह पर तीन बार सूर्योदय और सूर्यास्त देखने को मिलते हैं। इस ग्रह को 'एचडी 131399एबी' नाम दिया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार हालांकि यह ग्रह विशाल है लेकिन इसका द्रव्यमान ग्रहों की सीमा में ही है। यह प्रमुख तारे की परिक्रमा कर रहा है और अपने मातृ तारे से यह करीब 12 अरब किमी दूर है।

वेदों में राष्ट्रीयता का उदात्त स्वरूप

... वासुदेव शर्मा

हमारे इस राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता गुरू अध्ययनशील ब्रह्मवर्चस्व व तेज से युक्त हों। यहां के शूरवीर शत्रु पर विजय प्राप्त करने की क्षमता रखते हों। वे धनुर्विद्या में प्रवीण हों और अति संहारक लक्ष्यधारी हों महारथी हों। इनमें ही परमवीर राजा या राजपुत्र हों। नवप्रसूता गायें हों जो अधिक दूध देने वाली हों। बैल बलशाली और अधिक बोझ ढोने वाले हों। अश्व तीव्रगामी हों। स्त्रियां विवेकशील एवं पातिव्रत्य धर्म निभाने वाली हों। रथ पर आरूढ़ वीर सर्वदा विजयी होने में दृढ़ निश्चयी हों। यहां युवा सभ्य, सुशिक्षित एवं सदाचारी हों। समय-समय पर मेघ बरसते रहें जिससे अन्न-फल, वनस्पतियां तथा औषधियां हमें प्रचुर मात्रा में मिलती रहें। योग और क्षेम का हमें सामर्थ्य प्राप्त हो

भारत विश्व का प्राचीनतम राष्ट्र है। राष्ट्र सबके लिए श्रद्धेय जीवंत सत्ता है। राष्ट्रवाद सकारात्मक अवधारणा है। भारत मूलतः सांस्कृतिक राष्ट्र है। राष्ट्रीय भाव का सम्बन्ध न केवल अपनी भौगोलिक इकाई के प्रति स्वराज अथवा स्वतन्त्रता की भावना से है अपितु एक समग्र आदर्श जीवन और सांस्कृतिक अनुभूति से भी उतना ही अधिक है। सामाजिकता के तत्व को निरन्तर रसमय आनन्दमय, एकात्ममय और समरसमय बनाने का मनुष्य कर्म ही वास्तव में संस्कृति का रूप धारण करता है। भारत का अन्तर्मन त्याग, बलिदान और परमसत्य की खोज से विराट हुआ है। हिन्दुत्व उसका स्वभाव रहा है। हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति है जिसके मूल में वेद हैं। कहा भी है- 'वेदोऽखिलोधर्म मूलम्'। सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति का मूल आधार स्तम्भ विश्व का अति प्राचीन और सर्वप्रथम वाङ्मय 'वेद' माना गया है। मानवजाति के लौकिक तथा पारमार्थिक अभ्युदय हेतु प्राकट्य होने से वेद को अनादि एवं नित्य कहा गया है। मुख्यतः वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

वेदों में राष्ट्रीयता की उदात्त भावना परिलक्षित होती है। राष्ट्र की रक्षा में और उसकी महत्ता में ऐसी अनेक ऋचाएं हैं जो राष्ट्रीय-भावों को उजागर करती हैं। ऋग्वेद में भूमि को माता की संज्ञा दी गई है 'उपसर्प मातरं भूमिम्' (10/18/10) अर्थात् अपनी मातृभूमि की सेवा करो। ऋग्वेद के इन्द्र सूक्त (10/47/2) में जगदीश्वर से स्वराष्ट्र केलिए धन-धान्यवान पुत्रों से समृद्ध होने की कामना की गई है। मन्त्र है 'स्वायुधं स्ववसं सुनीथं. ....' अर्थात् हे ईश्वर! आप हमें अमोघ शस्त्रधारी चारों समुद्रों से घिरे आर्यावर्त (भारत) राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ सदाचारी एवं जन समूह का नेतृत्व करने वाली, नाना प्रकार के धन से सम्पन्न अद्भुत गुणों वाली संतान देना। ऋग्वेद के एक अन्य मन्त्र (10/19/4)में राष्ट्र की सुदृढ़ता के लिए परस्पर ऐक्य भाव हेतु

प्रार्थना की गई है जिसका भावार्थ है कि हम सब के जीवन का लक्ष्य एक हो, यजुर्वेद का मन्त्र 'वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:।' (9/23) हमें अपने राष्ट्र केप्रति सजग होने की चेतावनी देता है और अपेक्षा रखती है। कि हम अपने राष्ट्र में सावधान होकर ही नेता बनें। पुरोहित का अर्थ है सबसे पहले हित करने व चाहने वाला। अभिप्राय स्पष्ट है कि नेता बनने का उसी को अधिकार है जो अपने हित को दर किनार रख कर सबसे पहले राष्ट्र और समाज हित को अधिमान दे। शुक्ल यजुर्वेद काण्व संहिता के अष्टम् अनुवाक् का चौबीसवां मंत्र राष्ट्र की संकल्पना और राष्ट्रकी सर्वोच्च भावना का अन्यतम उदाहरण है। मन्त्र इस प्रकार से है–

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी
जायतामा राष्ट्रे राजन्य:।
शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो
जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानडवानाशु
सप्ति: पुरधिर्न्योषा।
जिष्णू रथेष्ठास्सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम्।
योग क्षेमो न: कल्पताम्।

अर्थात् हमारे इस राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता गुरू अध्ययनशील ब्रह्मवर्चस्व व तेज से युक्त हों। यहां के शूरवीर शत्रु पर विजय प्राप्त करने की क्षमता रखते हों। वे धनुर्विद्या में प्रवीण हों और अतिसंहारक लक्ष्यधारी हों महारथी हों। इनमें ही परमवीर राजा या राजपुत्र हों। नवप्रसूता गायें हों जो अधिक दूध देने वाली हों। बैल बलशाली और अधिक बोझ ढोने वाले हों। अश्व तीव्रगामी हों। स्त्रियां विवेकशील एवं पातिव्रत्य धर्म निभाने वाली हों। रथ पर आरूढ़ वीर सर्वदा विजयी होने में दृढ़ निश्चयी हों। यहां युवा सभ्य, सुशिक्षित एवं सदाचारी हों। समय-समय पर मेघ बरसते रहें जिससे अन्न-फल, वनस्पतियां तथा औषधियां हमें प्रचुर मात्रा में मिलती रहें। योग और क्षेम का हमें सामर्थ्य प्राप्त हो अर्थात् जो हम प्राप्त नहीं कर पाये, उसे प्राप्त करने की चेष्टा और प्रयास करें जो प्राप्त है उसका हम संरक्षण कर सकें।

राष्ट्र कल्याण का उस काल का इससे उत्तम उदाहरण इससे अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं हो सकता। अथर्ववेद के 'भूमिसूक्त' में देश को अपनी मातृभूमि स्वीकार करते हुए उसे 'माता' अथवा 'भारत माता' की संज्ञा दी गई है और वेदज्ञाता ऋषि स्वयं को उस माता का पुत्र स्वीकार करता है।– 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:। (अथर्व 12/1/12)
'सा नो भूमिर्वी सृजतां माता पुत्राय मे पय:, अथर्व (12/1/10) अर्थात् मातृभूमि अपने इस पुत्र के लिए पुष्टिकारक पदार्थ दुग्ध आदि प्रदान करे। एक अन्य मंत्र में मातृभूमि से सम्यक् रूपेण प्रतिष्ठित होने की प्रार्थना की गई है। अथर्ववेद का यह मन्त्र भी स्मरणीय है जिसमें मातृभूमि की रक्षा हेतु आत्म बलिदान करने के लिए तत्पर रहने का संदेश मिलता है–

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं
सन्तु पृथिवि प्रसूता:।
दीर्घं न आयु: प्रतिबुध्यमाना वयं
तुभ्यं बलिहृत: स्याम।। (अथर्व
12/1/62)

अर्थात् हे मातृभूमि! तेरी सेवा करने के लिए हम नीरोग और आरोग्यपूर्ण हों। तुमसे उत्पन्न हुए समस्त भोग हमें प्राप्त हों। हम ज्ञानी, विवेकशील और दीर्घायु हों और तेरी सुरक्षा हेतु आत्मोत्सर्ग करने के लिए भी सदा सन्नद्ध रहें।। अथर्ववेद के 'सत्यं बृहदृतमुग्रं..... पृथिवी न: कृणोतु।।' (12/1/1) मन्त्र में स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है कि मानव जीवन के आचार से ही मातृभूमि का उत्कर्ष सम्भव है। अर्थात् सत्य पालन, हृदय की विशालता, सरल आचरण, वीरता, कार्यदक्षता, सहिष्णुता, ज्ञान-विज्ञान सम्पन्नता आदि गुण ही मातृभूमि की रक्षा करते हैं। तीनों काल में रक्षा करने वाली मातृभूमि का तभी विस्तार भी सम्भव है।

राष्ट्र की उन्नति प्रतिभा के बिना असम्भव है। देश की प्रतिभाओं को अपने राष्ट्र के लिए ही अपनी मेधा का उपयोग करना चाहिए। यह सन्देश भी हमें मेधामहं प्रथमां वेद मंत्र से उपलब्ध होता है। इसी प्रकार संवेश्य बृहद् राष्ट्रकी अवधारणा को सुस्पष्ट करते हुए मंत्रद्रष्टा कहते हैं कि 'अस्मभ्यं... बृहद् राष्ट्रसंवेश्यं दधातु' (अथर्व 3/8/1)सब देशवासी कर्मशील हों तथा समर्थ बन कर दानवीर हों। 'शतहस्त समाहर सहस्त्र हस्त संकिर, (अथर्व 3/24/5)अर्थात् सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से बांट दो।' अथर्ववेद में वीरपुत्रों की मां की प्रशंसा की गई है क्योंकि उसी का पुत्र राष्ट्र के निर्माण में अग्रगामी होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ज्ञान के महासागर विश्व वाङ्मय की अमूल्य निधि एवं भारतीय संस्कृति के मूल आधार वेदों में राष्ट्रीयता की उदात्त भावना समाहित है। राष्ट्र हित में सभी देशवासी ऋग्वेद के इस मंत्र की शिक्षा को अपने आचरण में अवश्य ग्रहण करें कि हम मिल कर साथ चलें और मिलकर बोलें, एक दूसरे के मन को जानें। देववत् अपना-अपना कर्तव्य निभाते हुए, स्वयं किए श्रम का लाभ अर्जित करते हुए राष्ट्रहित में सहयोगी बनें। ◆◆◆

इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है, जिसमें 500 रुपए तक की पुस्तकें या नकद राशि प्रदान की जा सकेगी। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।

... डॉ.उमेश कुमार पाठक

राष्ट्रीयता और नागरिकता

राष्ट्रीय जागरण पर विचार करते हुए जो समकालीन भारतीय परिदृश्य हैं, उस पर विचार करना अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। वर्तमान समय में भयानक व्यथा, हताशा एवं निराशा का दौर है। राष्ट्रीय व सामाजिक एकता के समक्ष अभूतपूर्व अनपेक्षित दरारों की चुनौतियां हैं। एक तरफ क्षेत्रीयता की तनी हुई छातियां हैं तो दूसरी तरफ वह समुदाय विशेष भी हैं जो एक समतावादी समाज व राष्ट्र की संकल्पना एवं स्वरूप को नष्ट करने में लगे हुए हैं। भौतिक साधनों की संपन्नता में वृद्धि के बावजूद तमाम तरह की असमानताएं बढ़ी हैं। आज हमारा देश राष्ट्रीय जागरण की व्यथापूर्ण स्थिति से गुजर रहा है। सबसे बड़ा संकट है कि मूल्यों, परिभाषाओं के धरातल पर पहली बार साधारण आदमी प्रदत्त संस्थाओं की निरर्थकता एवं असमानता का सामना कर रहा है। आज विकराल रूप धारण कर चुकी सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, व्यापक भ्रष्टाचार, नैतिक एवं जीवन मूल्यों का अवमूल्यन, धर्मांतरण की विकट समस्या आदि ने पूरे जनमानस को अंदर से झकझोर दिया है। ऐसे में राष्ट्रीय जागरण के संदर्भ बेहद प्रासंगिक एवं अत्यंत व्यापक हो जाते हैं।

सामान्यत: अनेक व्याख्यायें प्रचलित हैं। पूरी चिंतन प्रक्रिया, संरचना एवं अनुभूति दरअसल तीन भागों में सन्निहित है- अतीत, वर्तमान और भविष्य। अस्मिता बोध, उदात्त चेतना एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक गौरव की स्थापना को राष्ट्रीय जागरण के मूल में सहज ही महसूस किया जा सकता है। इसलिए राष्ट्रीय जागरण की जो मूल अंतर्वस्तु है वह काल के तीनों आयामों में एक समाज, एक राष्ट्र की समग्र चिंता से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में जुड़ी हुई हैं। जहां राष्ट्र के चिंतन का एक छोर अतीत है तो दूसरा वर्तमान है, लेकिन उसका तीसरा पक्ष भविष्य भी कम उल्लेखनीय नहीं है। क्योंकि, अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की विराटता भविष्य की महत्वपूर्ण संभावनाओं को भी अपने में समाहित कर लेती है। चूंकि, हम अपने इतिहास के प्रति राष्ट्र के नियतिवादी दृष्टिकोण के आलोक में किसी भी परिवर्तन को परिस्थितियों एवं सामाजिक जटिलता के विश्लेषण में ईमानदारी पूर्वक नहीं समझ पाते हैं, इसलिए 'जो आज एक अनाथ है नर नाथ कल होता वही', यही इतिहास का नियम है तथा इसे ही इतिहास की नियतिवादी धारणा स्वीकार कर लेते हैं। दरअसल इस परिवर्तन में व्यक्ति की शायद कहीं भूमिका नहीं होती है। शायद यही परिवर्तन का नियम है अथवा इसे ही परिवर्तन का नियम कहा गया है।

उत्थान और पतन यदि दोनों प्रकृति के नियम हैं तो किसी भी स्थिति को लेकर बहुत दुखी होने का कारण मूल में नहीं होना चाहिए। हमारा अतीत गौरवशाली है, समृद्ध है। यह स्वीकारने में भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए और,

हमारा राष्ट्रीय-सांस्कृतिक गौरव कालचक्र के उस दौर में कितना महत्वपूर्ण होगा, यह समझना आज अपेक्षाकृत और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में हमें राष्ट्रीयता का गर्व कहीं-न-कहीं भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के मनोविज्ञान में सहज ही अनुभूत है। एक हारी और पराजित जाति के गर्व के मनोविज्ञान का रचनात्मक निर्वाह एक रचनात्मक चिंतन व व्यवहार द्वारा ही संभव हो सकता है। लेकिन वर्तमान संदर्भ में हमारे राष्ट्रीय गर्व का आवेशपूर्ण परिस्थितियों के प्रायोजित विश्लेषण के जरिए तथाकथित हमारे कतिपय विद्वानों ने हमारे अपेक्षित मानस एवं विवेक को भरसक धुंधला ही किया है।

अस्मिता बोध का प्रश्न मूलतः भारतीयता से जुड़ा है, हमारी राष्ट्रीयता से जुड़ा है। इसलिए अस्मिता बोध का प्रश्न कालजयी हो जाता है हमारे लिए, राष्ट्रीय जागरण के आलोक में अस्मिता बोध की चिंता केंद्रीय चेतना है जहां अस्मिता बोध तथा भारतीयता का प्रश्न एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सवाल बनकर भी हमारे मानस पटल पर उभरता है। राष्ट्रीय जागरण की प्रक्रिया के तमाम पहलुओं में यह समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि हमारी राष्ट्रीयता की सबसे बड़ी चुनौती क्योंकि है। आज अस्मिता का सबसे बड़ा शत्रु कौन है। आज हमारा युवा अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति को समझने की बजाय यह सवाल करता है कि जिन महान पूर्वजों की यह स्मृति है, उन्हीं महान पूर्वजों की परंपरा में राम को वनवास दिया गया था। उन्हीं की परंपरा में महाभारत हुआ था। उन्हीं की परंपरा में एकलव्य का अंगूठा मांगा गया था। लेकिन आज का युवा यह समझने की कोशिश नहीं करता है कि हमारे यहां आर्य चेतना केवल आर्य श्रेष्ठता के भाव तक ही सीमित नहीं है, अपितु उसका फलक विस्तृत एवं व्यापक है। आर्य श्रेष्ठता की बार-बार बात की जाती है जिसके गहरे निहितार्थ हैं।

> “
>
> *सामान्यतः अनेक व्याख्यायें प्रचलित हैं। पूरी चिंतन प्रक्रिया, संरचना एवं अनुभूति दरअसल तीन भागों में सन्निहित है- अतीत, वर्तमान और भविष्य। अस्मिता बोध, उदात्त चेतना एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक गौरव की स्थापना को राष्ट्रीय जागरण के मूल में सहज ही महसूस किया जा सकता है। इसलिए राष्ट्रीय जागरण की जो मूल अंतर्वस्तु है वह काल के तीनों आयामों में एक समाज, एक राष्ट्र की समग्र चिंता से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में जुड़ी हुई हैं। जहां राष्ट्र केचिंतन का एक छोर अतीत है तो दूसरा वर्तमान है, लेकिन उसका तीसरा पक्ष भविष्य भी कम उल्लेखनीय नहीं है। क्योंकि, अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की विराटता भविष्य की महत्वपूर्ण संभावनाओं को भी अपने में समाहित कर लेती है।*
>
> ”

दरअसल में आर्य श्रेष्ठता, विराट हिंदू चेतना और वैदिक भावबोध की सम्मिलित भूमिका को रेखांकित किया जा सकता है। राष्ट्रीय जागरण की एक और विशेषता मानी जा सकती है कि इसकी प्रकृति कहीं-न-कहीं आस्तिक है। उदाहरण के तौर पर जवाहरलाल नेहरू जो हिंदुस्तान बनाना चाहते थे उसमें कहीं ईश्वर नहीं था। ठीक इसके विपरीत महात्मा गांधी जो हिंदुस्तान बनाना चाहते थे, उसमें ईश्वर था। इसलिए गांधी का बल बार-बार इस बात पर है कि प्रार्थना को शामिल किया जाना चाहिए। प्रार्थना विराट अथवा ईश्वर के साथ संवाद का माध्यम है। गांधीजी दरअसल एक आस्तिक भारत के आग्रही प्रतीत होते हैं। ऐसे में राष्ट्र के वर्तमान खंड में शिक्षा के स्तर, समाज के स्तर पर, राजनीति के स्तर पर तमाम तरह की अवनतियों, दुर्गति और पतन के संदर्भ में राष्ट्रीय जागरण को देखा जा सकता है, समझा जा सकता है। क्योंकि, वर्तमान की चिंता हमें राष्ट्रीय जागरण के आधारभूत सरोकारों से जोड़ती है। राष्ट्रीय जागरण वस्तुतः कहीं-न-कहीं सांस्कृतिक मुठभेड़ की चेतना भी है। बिना किसी जीवंत प्रेरणास्पद आत्मबिंब के, अपने स्वरूप में अत्याधुनिक, यह लड़ाई आसानी से नहीं लड़ी जा सकती है। और, फिर से भारतीय इतिहास की गौरवशाली परंपराओं पर आधारित आत्मबिंब का निर्माण ही इस मायने में कारगर साबित हो सकता है। आत्मबिंब को अस्मिता के रूप में, अस्मिता को भारत माता के रूप में अभिव्यक्त करके राष्ट्र के उदात्त स्वरूप को बचाया जा सकता है। एक और बात जो राष्ट्रीय जागरण के संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण है, वह है शिक्षा। क्योंकि, जब तक अज्ञान, चाहे वह किसी प्रकार का हो, खत्म नहीं किया जाएगा, तब तक राष्ट्रीयता की पहचान संभव नहीं है। इसलिए शिक्षा ही सही मायने में अंतः स्वरूप हमारे राष्ट्र को नई मंजिलों की तरफ जाने के लिए अभिप्रेरित करेगी। यही शिक्षा राष्ट्रीय अस्मिता का भावबोध पैदा करेगी। शिक्षा के द्वारा अनेक तरह की बात होगी। ज्ञान विकसित होगा, राष्ट्रीयता की प्रबल अवधारणा विकसित होगी। सारांशतः राष्ट्रीय जागरण कोई वैयक्तिक आकांक्षा नहीं है, अपितु यह संपूर्ण भारतीय मनुष्य की सद् इच्छा है कि ऐसा हो। इस प्रकार समकालीन राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक चेतना एवं विराट हिंदू दर्शन का ही घोषणा पत्र है। ◆◆◆

मातृवन्दना पत्रिका में अप्रैल 2019 से मार्च 2020 के बीच प्रत्येक अंक में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ संपादक के नाम पत्र लेखकों को सम्मानित करने की योजना है। अतः इच्छुक पाठक अपनी प्रतिक्रिया अपने पूर्ण पते के साथ संपादक कार्यालय, मातृवन्दना संस्थान, डॉ० हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को प्रति माह भेजते रहें। इस प्रकार भेजे हुए पत्रों को आगामी अंकों में क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा

अराष्ट्रीय भाव ही आंतकवाद की जड़

... राजेश वर्मा

आतंकवाद शब्द सुनते ही हम सबके मन में एक ऐसा खौफ भर जाता है जैसे मानो लगता है सब कुछ लुटने वाला है, हमारे दिलो दिमाग में इसका नाम सुनते ही खून से लथ-पथ मानवीय चेहरे और घरों व भवनों से उठते हुए धुएं का मंजर छाने लग जाता है किन्तु कभी हमने यह सोचा है कि देश में इस आतंकवाद की जड़ें क्यों गहरी हो रही हैं? क्यों हम दिन-प्रतिदिन इसके शिकार बनते जा रहे हैं गहन चिंतन से यही बोध होता है कि अराष्ट्रीय भाव ही आतंकवाद की जड़ है। यह आतंकवाद कश्मीर एवं पूर्वोत्तर राज्यों में अधिक फैला हुआ है। आतंकवाद से सर्वाधिक ग्रसित कश्मीर में पाकिस्तान तथा वहां के अलगाववादी नेताओं के बहकाने में आए कश्मीर वासियों में राष्ट्रीय भावना का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। अपने मुल्क को वे अपना मुल्क नहीं मानते। यही कारण है कि यह आतंकवाद थमता नजर नहीं आ रहा। देश में जब भी कोई आतंकी हमला होता है हम अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी के सामने गिड़गिड़ाने के अलावा कुछ नहीं कर पाते, दुश्मन आता है हमारे ही देश में घुस कर हमारे ही लोगों का खून बहा जाता है लेकिन हम फिल्मी डायलॉग 'सबूत-सबूत' चिल्लाते रहते हैं।

अब हमें कुंठित होने की बजाय एकजुट होकर आतंकवादियों का मुकाबला करना होगा। यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति अप्रतिम भाव से निष्ठ होंगे और आतंकवाद से लड़ने वाले सैनिकों के प्रति हमारे मन में पीड़ा होगी।

ऐसे आतंकी हमले किसी एक सरकार के समय ही नहीं हुए हर सरकार के समय ऐसे हमले होते आए लेकिन जबाबी परिणाम शून्य रहे। अब तक के देश पर सबसे बड़े आतंकी हमलों में से मार्च 1993 मुंबई सीरियल ब्लास्ट, फरवरी 1998 को कोयम्बटूर में धमाका, अक्तूबर 2001 में जम्मू कश्मीर विधानसभा भवन पर हमला, दिसंबर 2001 भारतीय संसद पर हमला देश के लोकतंत्र को तार-तार कर गया, मई 2002 जम्मू के कालूचक में सेना की छावनी पर भी फिदायीन हमले में 36 लोग मारे गए थे और 48 अन्य घायल हुए। इसी तरह सितंबर 2002 अक्षरधाम मंदिर पर हमला, अक्तूबर 2005 दिल्ली सीरियल बम-ब्लास्ट, जुलाई 2006 मुंबई ट्रेन धमाका, मई 2008 जयपुर ब्लास्ट, अक्तूबर 2008 असम में धमाके और वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 26/11 आतंकी हमला आदि इस तरह सैकड़ों छोटे-बड़े हमले देश पर होते आए हैं। 3 साल पहले गुरदासपुर पुलिस थाने के अंदर के आतंकी हमले व पठानकोट में वायु सेना के एयरवेस में हुए आतंकी हमले ने देश की सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगा दी थी। इसी कड़ी में सितम्बर 2016 को उड़ी में सेना मुख्यालय पर हमले में 20 के लगभग जवान शहीद हुए और 30 घायल हुए थे। इस हमले से तो पूरे देश में दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने की आवाज उठ खड़ी हुई, फलस्वरूप आक्रोश का परिणाम था कि भारतीय सेना ने सर्जिकल

स्ट्राइक को अंजाम दिया। सीमा पार आतंकी कैंपों को नेस्तनाबूद किया। हमें लगा कि अब पड़ोसी को अहसास हो गया होगा कि सहिष्णुता हमारी कमजोरी नहीं है लेकिन शायद यह हमारी ही भूल थी। इसी भूल का परिणाम है कि पिछले दो दशकों में अब तक का सेना पर सबसे बड़ा आतंकी हमला जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में देखने को मिला। इस फिदायीन हमले में सीआरपीएफ के 44 जवान शहीद हुए और दो दर्जन के लगभग जवान जख्मी हुए।

इन हमलों में भी पहले की तरह हमने पड़ोसी देश पर चिल्लाने के बजाय प्रतिक्रिया स्वरूप ठोस जवाबी कार्यवाही की दिशा में योजना पर काम शुरू किया। पहले की तरह यह हमला उसने करवाया, ये उसकी एजेंसियों की मिलीभगत से हुआ, शायद यही हमारी आदत भी बन गई थी। क्या हमने ही सहिष्णुता का ठेका ले रखा है कि आप आओ हमले करो हम तो बस जबाव में सबूत-सबूत चिल्लाएंगे। हम अपने राजनैतिक भाषणों से देश की जनता को तो बहला फुसला सकते हैं परंतु गले मिलकर भी पड़ोसी को नहीं समझा पाएंगे। पाकिस्तान पर चिल्लाने भर से हम अपनी भड़ास निकाल कर संतुष्ट हो जाते रहे हैं। आतंकवाद के लिए पाकिस्तान से ज्यादा हमारी पहले की सरकारें दोषी रही हैं, क्योंकि हमने इसे झेलने की आदत सी बना ली थी। पाकिस्तान से तो खुद अपने देश में भी आतंकी हमले नहीं रूक रहे। पाकिस्तान में आंतकवाद को बढ़ावा देने की वजह सर्वविदित है। वहां की सेना और आतंकियों की आपसी सांठ-गांठ से ही आंतकवाद पनप रहा है। पड़ोसी की आदत हो गई थी कि हम हमले के बाद पांच दस दिन तक सबूत है सबूत है कहते रहेंगे और पड़ोसी ना ना करते हुए एक और हमले की तैयारी कर लेगा। यह सबूत मांगने की प्रवृत्ति न केवल सेना के मनोबल को कमजोर करती थी अपितु हमारी राष्ट्र के प्रति निष्ठा को भी संदेह के घेरे में खड़ा कर देती थी।

> **“**
> *कभी हमने यह सोचा है कि देश में इस आतंकवाद की जड़ें क्यों गहरी हो रही हैं? क्यों हम दिन-प्रतिदिन इसके शिकार बनते जा रहे हैं गहन चिंतन से यही बोध होता है कि अराष्ट्रीय भाव ही आतंकवाद की जड़ है। यह आतंकवाद कश्मीर एवं पूर्वोत्तर राज्यों में अधिक फैला हुआ है। आतंकवाद से सर्वाधिक ग्रसित कश्मीर में पाकिस्तान तथा वहां के अलगाववादी नेताओं के बहकाने में आए कश्मीर वासियों में राष्ट्रीय भावना का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। अपने मुल्क को वे अपना मुल्क नहीं मानते। यही कारण है कि यह आतंकवाद थमता नजर नहीं आ रहा।*
> **”**

अब हमें कुंठित होने की बजाय एकजुट होकर आतंकवादियों का मुकाबला करना होगा। यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक नागरिक राष्ट्र केप्रति अप्रतिम भाव से निष्ठ होंगे और आतंकवाद से लड़ने वाले सैनिकों के प्रति हमारे मन में पीड़ा होगी। उस सैनिक का क्या दोष था जो बिना युद्ध किए ऐसे छद्म युद्धों में शहीद हो गया। उसकी पत्नी का क्या कसूर था, जिसकी मांग सूनी हो गई, क्या कसूर था उस बच्चे का जिसके दुनिया में आने से पहले ही सिर से पिता का साया उठ गया, क्या कसूर था उस बहन का जिसकी राखी बंधने से पहले टूट गई, और क्या कसूर था उस बाप का जिसके सहारे की लाठी टूट गई। सरकारों द्वारा शहीद के परिवार को 5-10 लाख की मदद देकर फर्ज अदियागी की परंपरा छोड़नी होगी। क्योंकि आज की तारीख में कौन इंसान ऐसा होगा जो 5-10 लाख के लिए अपनी जान देना चाहेगा।

विगत सरकारें कहीं न कहीं कठोर निर्णय लेने में अक्षम प्रतीत हुई हैं। परिणाम स्वरूप इस देश के जान-माल और विशेषकर राष्ट्र स्वाभिमान को बहुत चोट पहुंची है। वर्तमान केंद्र सरकार ने अवश्य कड़े निर्णय लिए हैं। दहशतगर्दो की प्रशिक्षण एवं शरण स्थली में घुसकर हमारे वीर जांबाज सैनिकों ने पहले सर्जिकल स्ट्राईक और उसके बाद एयर स्ट्राईक कर शत्रु देश के मीलों अन्दर घुसकर पापी पाक को सबक सिखाया है। इस सरकार ने आतंकवाद के प्रति अपनी मन्शा प्रकट करने में कोई शंका नहीं रखी है। वह अब आतंकवाद के सामने झुकने वाली नहीं है अपितु उसे मिटा कर ही दम लेगी। 9/11 के आतंकी हमले के जवाब में अमेरिका ने जब तक उसके गुनहगार ओसामा बिन लादेन को जब तक उसके अंजाम तक नहीं पहुंचाया तब तक वह चैन से नहीं बैठा। इसी तरह रूसी यात्री विमान में मारे गए 224 लोगों के कातिलों को जब तक मार नहीं दिया गया तब तक राष्ट्रपति पुतिन ने चैन नहीं ली। फ्रांस के पेरिस हमले में 130 लोगों की जान के बदले पुतिन और फ्रांस्वा ओलांद ने सीरिया पर सैन्य कार्रवाई से देश और नागरिकों पर हुए हमलों का हिसाब सूद सहित वसूल किया। इन देशों ने बदला लेने की आज्ञा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से नहीं ली थी। इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय दबाव नहीं झेला और आखिरकार हमारी सरकार ने भी इस बार यह करके दिखाया है। लड़ाकू विमानों ने पाकिस्तान में 80 मील अन्दर घुसकर आतंकियों के अड्डों को ध्वस्त किया है। अब हमें पीछे नहीं हटना है। पाकिस्तान के आगोश में छिपे इन दहशतगर्दो को तथा इनके सरगना कुख्यात आतंकियों को ढूंढ कर वहीं नेस्तनाबूद करना है। यह तभी सम्भव है जब हम ओछी राजनीति का त्याग कर, एकजुट होकर, राष्ट्रीयता से प्रेरित होकर एक स्वर में मातृभूमि को जयघोष करेंगे और अपनी जान हथेली पर रखने वाले वीर सैनिकों का मनोबल बढ़ायेंगे। ◆◆◆

असमानता राष्ट्रीय विकास में बाधक

... डॉ. चमन लाल बंगा

असमानता राष्ट्रीय विकास में बहुत बड़ी बाधा है असमानताएं व्यक्ति द्वारा मूल्यवान समझे जाने वाले जीवन की पसंद को सीमित कर देती हैं। भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकेया नायडू ने वर्ष 2017 में कहा था कि जब तक देश में जाति विद्यमान रहेगी, तब तक हम भारत को विकसित राष्ट्र नहीं बना सकते। असमानता का मूल अहं और स्वार्थ है। राष्ट्र की भावानात्मक एकता के लिए हमें अहं और स्वार्थ का विसर्जन करना होगा। हम सभी को मिलकर विकास में भागीदार बनना चाहिए। वर्तमान में हमारे देश में सामाजिक असमानता, आर्थिक असमानता, शैक्षिक असमानता, क्षेत्रीय असमानता और औद्योगिक असमानता राष्ट्रीय विकास में बाधक है। समाज में व्याप्त असमानता के कारण आज हमारे समाज में आपसी प्रेम भाईचारा, मानवता और इन्सानियत और नैतिकता समाप्त होती जा रही है। व्यक्तिगत हितों के लिए हम समाज को जाति एवं धर्म के आधार पर बांट रहे हैं। हमारे समाज में दरिद्र जिस हाल में थे, आज भी वहीं पर खड़े हैं या फिर और गरीब होते जा रहे हैं। आर्थिक न्याय के बिना हम सामाजिक न्याय की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। औद्योगिक असमानता की स्थिति भी राष्ट्रीय विकास में बहुत बड़ी बाधा है। शैक्षिक असमानता के कारण ही हम समाज में वंचित वर्गों को अच्छी शिक्षा दे पाने में असफल साबित हो रहे हैं। क्षेत्रीय असमानता के कारण आज हम अपने राष्ट्र के सभी हिस्सों खासकर ग्रामीण क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने में विफल हो रहे हैं। राष्ट्र के लोगों में समानता तभी आएगी जब हम सबको समानता के अधिकार देंगे। वैचारिक जड़ता का मूल कारण अज्ञान तथा अशिक्षा है। विकास के लिए चरित्र-निर्माण अत्यावश्यक है। युवकों के समक्ष लक्ष्य स्पष्ट किए जाने चाहिए और उनकी प्राप्ति के लिए उन्हें प्रेरित किया जाना चाहिए। नई पीढ़ी को वैचारिक जड़ता से मुक्त कराने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने कहा है कि सभी इंसानों के लिए एक टिकाऊ दुनिया बनाने के वास्ते सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है। हमें मालूम है कि जिस समाज में आशा और अवसरों की कमी हो जाती है उस समाज में संघर्ष और अस्थिरता के लिए नाजुक

> *क्षेत्रीय असमानता के कारण आज हम अपने राष्ट्र के सभी हिस्सों खासकर ग्रामीण क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने में विफल हो रहे हैं। राष्ट्र के लोगों में समानता तभी आएगी जब हम सबको समानता के अधिकार देंगे। वैचारिक जड़ता का मूल कारण अज्ञान तथा अशिक्षा है। विकास के लिए चरित्र-निर्माण अत्यावश्यक है। युवकों के समक्ष लक्ष्य स्पष्ट किए जाने चाहिए और उनकी प्राप्ति के लिए उन्हें प्रेरित किया जाना चाहिए। नई पीढ़ी को वैचारिक जड़ता से मुक्त कराने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने कहा है कि सभी इंसानों के लिए एक टिकाऊ दुनिया बनाने के वास्ते सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है।*

माहौल बन जाता है। असमानता के कारण अपराध और बीमारियां पनपती हैं। साथ ही पर्यावरण को भी भारी नुकसान पहुंच सकता है। जिससे आर्थिक विकास के रास्ते में भी बाधा खड़ी हो सकती है। भारतीय समाज वर्षों से समानता और न्याय सुनिश्चित करने के प्रयास कर रहा है। हमारे देश के इतिहास में सामाजिक न्याय के क्षेत्र में सबसे समर्पित महापुरूषों में स्वामी विवेकानन्द, संत रविदास, महात्मा गांधी, वीर-सावरकर, बाबा साहेब अम्बेडकर, दयानन्द सरस्वती, डॉ. हेडगेवार इत्यादि सम्मिलित हैं। इन समाज सुधारकों के दृढ़ निश्चय और साहस के साथ ही हमारे देश के लोगों के समर्थन से अन्याय के खिलाफ मजबूत कार्यवाही करने का बल मिला है।

हमारे देश के संविधान में सामाजिक न्याय का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के मामले में प्रत्येक नागरिक को समान अवसर उपलब्ध कराना और असमानता रोकना है। हमारा देश दुनिया के तेज आर्थिक विकास वाले राष्ट्रों में सम्मिलित है पर इस विकास का लाभ गरीबों को नहीं मिल रहा है। इसका प्रभाव उसके विकास पर भी पड़ा। सामाजिक चुनौतियों के कारण गरीबी बढ़ रही है। समाज तथा परिवार राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को दरकिनार करके आत्मकेन्द्रित होते हमारे युवाओं की खोखली सोच राष्ट्र के विकास में बड़ी बाधा बन कर उभर रही है। वर्तमान समय में हमें सामाजिक समानता के लिए, समाज में सभी वर्गों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाना होगा। देश के आखिरी छोर तक विकास अत्यावश्यक है।

शैक्षिक समानता से हर समस्या का हल निकलेगा। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो हमें अच्छी सोच सिखाए। हमें हमारा हक दिलाए, कर्तव्य और अधिकार का बोध करवाए। वास्तव में किसी भी राष्ट्र को विकसित बनाना हो तो उसकी जनता को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से मजबूत बनाना होगा। बहुत ही कम संख्या के लोगों का विकास हमारे राष्ट्र को विकसित नहीं बनाएगा। हमें देश के प्रत्येक जन के हित में कार्य करने हैं। हमें वास्तविक निर्धनों की तलाश करनी चाहिए और उनके सर्व-हितों की चिंता करनी चाहिए।

हमारे देश के विकास में युवाओं की आवश्यकता है लेकिन आज की पीढ़ी अधिक सुख सुविधाओं को देखते हुए अपना गांव, देश छोड़कर दूसरी जगह जा रही है। जिसके चलते राष्ट्र के समान विकास में बाधा आती है। युवाओं को अपने राष्ट्र के प्रति आत्मीय भाव व गौरव का एहसास रखते हुए राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देना चाहिए। तभी देश विश्व शक्ति बनेगा। ◆◆◆

राष्ट्र की आन युवाशक्ति

... डॉ0 प्रियंका वैद्य

तुम विवेकानंद की संतान हो।
तुम निष्काम कर्मयोग की पहचान हो
जीवन मार्ग में जो रहे अग्रसर
अखंड ज्योति से देदीप्यमान हो
स्वामी विवेकानंद के पथ पर चलकर
जो करे परिभाषित नए आयाम
नव राष्ट्रऔर परिवार की आन हो।
तुम्हें रोकती है एक शपथ
जिंदगी के आड़े-तिरछे रास्तों पर
रुदन, क्रन्दन में, देती है स्पंदन
दिखाती है अमावस में, अग्निशिखा सी
खेलती है जिंदगी खेल अनेक
रहती है ध्रुव सी, केवल एक शपथ।
जो बहती है मां की लोरी में
पिता के हाथ का लेती स्पर्श
जो गुरू का स्वर्णिम स्वप्न
निर्मित करे तुम्हारा अग्निपथ
जीवन की परीक्षाओं में
वो स्वाति की बूंद सी।
जागृत करती गहन सन्नाटों में
जब-जब मद्धम हो लौ जीवंतता की
झिलमिलाती हुई
वो आशा की किरण
दीप्त करती जीवन पथ
वही है शपथ, वही है शपथ।
नन्हे हाथों ने जब थामा, संस्कारों का दामन
चले विशाल हृदय ले, इस अग्निशिखा पर
परीक्षाओं से, नहीं हुए भयभीत
ध्रुव तारे से रहे स्थिर, लंबी डगर पर छोड़े पदचिह्न
ऐसे महान संस्कारों की छाप हो तुम
निष्काम कर्मयोग की पहचान हो तुम।
कमल से पूछे क्या कोई उसका परिचय
सूरज को कोई दीप दिखलाता नहीं
वर्षों का समर्पण नहीं मांगता प्रशस्ति पत्र
निष्काम कर्मयोग की तुम मिसाल हो
स्वाभिमान है तुममें असीम
तुम विवेकानंद की संतान हो।

... दलेल ठाकुर

चुनावों में मतदान की भूमिका

वर्तमान में युवाओं के मध्य चुनाव को लेकर काफी उत्साह और परिवर्तन की भावना जगी है। युवाओं की भूमिका देश के साथ-साथ प्रदेश की प्रगति के लिए महत्तपूर्ण है। गत पांच वर्षों में 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके युवा अपने मत का पहली बार प्रयोग करेंगे। देश की तर्ज पर प्रदेश में भी युवा मतदाता इन चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाने वाला है। युवा वर्ग एक सशक्त राष्ट्र की कल्पना को लेकर मतदान करने वाला है। युवा मतदाता की प्रदेश के विकास और चुनाव में एक-एक वोट की कीमत है। प्रत्येक मतदान केन्द्र पर शत-प्रतिशत मतदान हो यह हमारा प्रयास रहे साथ ही साथ हम नोटा के प्रयोग को भी इस चुनाव में नकारने

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में चुनाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में चुनाव किसी त्यौहार से कम नहीं होते। राजनीतिक दलों के साथ-साथ आम जनता भी चुनाव के दौरान व्यस्त नजर आती है।

चुनाव के बिना हम एक सफल लोकतंत्र की कल्पना नहीं कर सकते हैं। चुनाव हमें मनपसंद शासक चुनने का अवसर देता है। चुनाव सभी को लोकतंत्र में भागीदारी का अवसर प्रदान करता है। जिस चुनाव में सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार का प्रयोग नहीं होता है वह चुनाव लोकतांत्रिक नहीं हो सकता है। बिना जाति, लिंग, धर्म, रंग आदि के भेदभाव के होने वाले चुनाव वास्तव में लोकतांत्रिक कहे जा सकते हैं।

भारत का लोकतंत्र यहां के मतदाताओं के निर्णय पर टिका है। लोकतंत्र में मतदाता मालिक है, हीरो है। मतदाता प्रत्यक्ष मतदान करे या अप्रत्यक्ष मतदाता ही हीरो माना जाता है, लेकिन दुर्भाग्य है कि मतदाता सिर्फ चुनाव तक ही हीरो है। चुनाव के बाद चुना गया प्रतिनिधि मालिक बन जाता है। होना यह चाहिए कि चुनाव के बाद चुने हुए प्रतिनिधि को जनसेवक की भूमिका निभानी चाहिए। वर्तमान प्रधानमंत्री ने 'मैं जनता का प्रधान सेवक और चौकीदार हूँ', कहकर लोकतंत्र को और मजबूत करने व मतदाता के सम्मान को बढ़ाने का काम किया है। लोकतंत्र मतदाता और चुने हुए प्रतिनिधि के विश्वास पर टिका है। विधायक या सांसद जनता के सेवक और संविधान के संरक्षक हैं। लोकतंत्र पहरेदार है। देश में 17वीं लोकसभा के लिए चुनाव घोषित हो चुके हैं। यह चुनाव संपूर्ण देश में सात चरणों में पूर्ण होने हैं। चुनाव का पहला चरण 11 अप्रैल व अंतिम चरण 19 मई को निर्धारित किया गया है। अपने प्रदेश में लोक सभा की चार सीटों के लिए भी अंतिम चरण अर्थात् 19 मई को चुनाव होने हैं। ऐसे में हिमाचल के जागरूक मतदाताओं द्वारा पूर्व में 16वीं लोकसभा के लिए प्रतिनिधि चुने गए। प्रदेश का जागरूक मतदाता चुपचाप मतदान कर कई सत्ता परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है। मतदाताओं को अपने मत का प्रयोग बिना किसी भय के करना

चाहिए। भय, पक्षपात, स्वार्थ, लालच या दबाव में मतदान नहीं करना चाहिए। मतदाता को लोकतंत्र की रक्षा, क्षेत्र के विकास और संविधान प्रदत्त अधिकारों के लिए मतदान करना है। इसमें कोई दबाव या भय नहीं होना चाहिए। लोकतंत्र में मतदान देश और संविधान की रक्षा के लिए किया जाता है। वर्तमान में युवाओं के मध्य चुनाव को लेकर काफी उत्साह और परिवर्तन की भावना जगी है। युवाओं की भूमिका देश के साथ-साथ प्रदेश की प्रगति के लिए उत्तम है। गत पांच वर्षों में 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके युवा अपने मत का पहली बार प्रयोग करेंगे। देश की तर्ज पर प्रदेश में भी युवा मतदाता इन चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाने वाला है। युवा वर्ग एक सशक्त राष्ट्र की कल्पना को लेकर मतदान करने वाला है। युवा मतदाता की प्रदेश के विकास और चुनाव में एक-एक वोट की कीमत है।

प्रत्येक मतदान केन्द्र पर शत-प्रतिशत मतदान हो यह हमारा प्रयास रहे साथ ही साथ हम नोटा के प्रयोग को भी इस चुनाव में नकारने वाले हैं। हमें अपने मत का उपयोग करते समय संजीदा रहना चाहिए। हमें यह सोच कर मतदान करना चाहिए कि अगले पांच वर्षों तक हमारा मत देश को एक नई दिशा देने वाला है। अत: प्रदेश के हर मतदाता से निवेदन है कि अपने मत का प्रयोग जरूर करें और अपने वोट की कीमत को समझें। ◆◆◆

मनुष्य सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्राणी है!

... डॉ0 जगदीश गांधी

आज आधुनिक विद्यालयों के द्वारा बच्चों को एकाकी शिक्षा अर्थात केवल भौतिक शिक्षा ही दी जा रही है, जबकि मनुष्य की तीन वास्तविकताएं होती हैं। पहला-मनुष्य एक भौतिक प्राणी है, दूसरा-मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा तीसरा मनुष्य - एक आध्यात्मिक प्राणी है। इस प्रकार मनुष्य के जीवन में भौतिकता, सामाजिकता तथा आध्यात्मिकता का संतुलन जरूरी है। हमारा मानना है कि मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए उसे सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही सामाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा भी देनी चाहिए। प्रारम्भिक काल में शिक्षालयों में बालक को बाल्यावस्था से ही भौतिक, सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की शिक्षा संतुलित रूप से मिलती थी। इस प्रकार व्यक्ति का संतुलित विकास होने से यह व्यक्ति अपनी नौकरी या व्यवसाय को ईश्वर की नौकरी करने की उच्चतम समझ से करता था।

उस समय मानव जीवन एकता तथा प्रेम से भरपूर था। आधुनिक विद्यालयों में बालक को केवल विषयों का भौतिक ज्ञान दिया जाए और उसके सामाजिक एवं आध्यात्मिक अथवा नैतिक गुणों को बढ़ाने वाली शिक्षा में कमी कर दी जाए तो उस बालक का असंतुलित व्यक्तित्व ही उभर कर सामने आएगा। वास्तव में इस प्रकार की एकाकी शिक्षा में पला बढ़ा बालक अपने परिवार एवं समाज को अच्छा बनाने के बजाए उसे और भी अधिक असुरक्षित एवं असभ्य बनाने का कारण बन जाएगा। अत: प्राचीन काल के शिक्षालयों से प्रेरणा लेकर आज के आधुनिक विद्यालयों को भी प्रत्येक बच्चे को बाल्यावस्था से ही सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही साथ उसे सामाजिक नैतिक तथा आध्यात्मिक अर्थात् संतुलित शिक्षा देकर उसे ईश्वर का उपहार एवं मानवजाति का गौरव बनाना चाहिए। वर्ष 1850 से वर्ष 1950 तक लगभग 100 वर्षों के बीच सारे विश्व में औद्योगिक क्रान्ति हुई। विश्व के सभी देशों के बीच अपना-अपना सामान अधिक से अधिक बेचकर लाभ कमाने की अत्यधिक होड़ बढ़ने लगी। उस दौड़ में शिक्षा एवं शिक्षालय केवल कमाई के योग्य व्यक्ति बनाने के टकसाल बन गए। इसके पूर्व शिक्षालयों की चिन्ता होती थी कि बच्चे कैसे अच्छे इंसान बने? नालन्दा, तक्षशिला, शान्ति निकेतन, गुरूकुलों आदि में सर्वप्रथम नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता था। अनन्तर अन्य विषयों में रूचि के अनुसार विद्यार्थियों को पारंगत किया जाता था। अब विद्यालय की चिन्ता यह है कि बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा फल कैसे अच्छे बने? विद्यालयों के बीच अपने-अपने परीक्षा परिणाम की अर्हता दिखाकर अधिक से अधिक बच्चों के दाखिले की होड़ लगी है। स्कूलों तथा कॉलेजों से सामाजिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा विलुप्त होती चली गई। वर्तमान समय में बालक को अपने सभी विषयों का सबसे उत्कृष्ट भौतिक ज्ञान मिलना चाहिए, किन्तु इसके साथ ही साथ समाज के प्रति संवेदनशीलता तथा उसके हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम भी उत्पन्न करना होगा तभी हम प्रत्येक बालक को राष्ट्र-प्रेम से युक्त व समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बना पाएंगे। शिक्षा पद्धति में आए बदलाव से अनेक सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। मैकाले शिक्षा पद्धति ने ऐसे संस्कार पैदा कर दिए हैं जो अपनी भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं हैं। यहां तक कि नई पीढ़ी रिश्तों व सम्बन्धों की अहमियत भी भूलती जा रही है। अपनी मातृभूमि अथवा राष्ट्र के प्रति कर्तव्य से विमुखता बढ़ती जा रही है। राष्ट्रीय भाव का ह्रास होता जा रहा है। राष्ट्रहित जीवन में सर्वोपरि होना चाहिए। राष्ट्र है तो हम हैं। अपने कला-कौशल एवं ज्ञान-विज्ञान से अपने देश व समाज को लाभ मिले ऐसी सोच तभी पैदा होगी जब हम बाल्यकाल से ही अपनी संतानों को सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करेंगे। ◆◆◆

आधुनिक विद्यालयों में बालक को केवल विषयों का भौतिक ज्ञान दिया जाए और उसके सामाजिक एवं आध्यात्मिक अथवा नैतिक गुणों को बढ़ाने वाली शिक्षा में कमी कर दी जाए तो उस बालक का असंतुलित व्यक्तित्व ही उभर कर सामने आएगा। वास्तव में इस प्रकार की एकाकी शिक्षा में पला बढ़ा बालक अपने परिवार एवं समाज को अच्छा बनाने के बजाए उसे और भी अधिक असुरक्षित एवं असभ्य बनाने का कारण बन जाएगा। अत: प्राचीन काल के शिक्षालयों से प्रेरणा लेकर आज के आधुनिक विद्यालयों को भी प्रत्येक बच्चे को बाल्यावस्था से ही सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही साथ उसे सामाजिक नैतिक तथा आध्यात्मिक अर्थात् संतुलित शिक्षा देकर उसे ईश्वर का उपहार एवं मानव जाति का गौरव बनाना चाहिए।

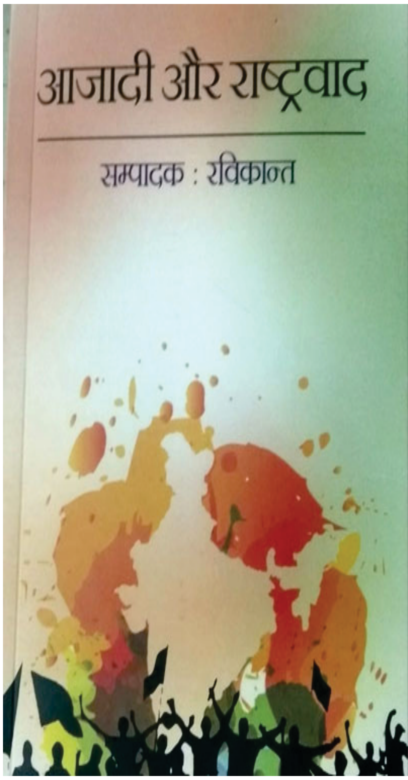

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रभाव जागरण

... मृदुला श्रीवास्तव

साहित्य का सीधा संबंध समाज से और समाज का सीधा संबंध राष्ट्र से होता है। आदि काल में कवि चंद्रबरदाई और कवि भूषण का हिंदुत्व चूंकि राष्ट्रीयता से अलग नहीं है। इसलिए जो संघर्ष हुआ वह राष्ट्रीयता के लिए ही था। भक्ति काल के कवियों की राष्ट्रीय चेतना धारा ने सुप्त राष्ट्रीय समाज को नई दिशा दी। कबीर दास ने जहां निराकार ब्रह्म की उपासना का उच्च आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्रीय गरिमा में नवजीवन का संचार किया वहीं राष्ट्रभक्त तुलसी ने राम के समन्वयवादी लोक रक्षक और लोक रंजक स्वरूप को स्थापित कर सांस्कृतिक एकता को शक्ति प्रदान की।

राष्ट्रभाव के बिना साहित्य अपूर्ण है। भारत राष्ट्र के साहित्य में सांझा संस्कृति की छाप इतनी गहरी है कि डॉक्टर इकबाल जैसे अलगाववादी कवि को भी यह स्वीकारना पड़ा कि 'यूनान मिश्र ओ रोमां सब मिट गए जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' यह सही है कि भारत एक सांस्कृतिक धार्मिक और भाषाई विविधता वाला देश है बावजूद इसके वास्तव में एक राष्ट्र का जन्म तभी होता है जब इसकी सीमा में रहने वाले सभी नागरिक सांस्कृतिक विरासत एवं एक दूसरे के साथ भागीदारी में एकता की भावना महसूस कर सकें। राष्ट्रीय ही वह धागा है जो लोगों को उनके विभिन्न सांस्कृतिक-जातीय - पृष्ठभूमि से संबंधित होने के बावजूद एकता के सूत्र में एक साथ बांधता है, वरना तो जो कुछ भी लिखा जाएगा मात्र किसी देश का राजनीतिक लेखन ही होगा, साहित्यिक लेखन नहीं।

साहित्य का समाज और राष्ट्र से संबंध

साहित्य में राष्ट्र की बात करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि हिंदी साहित्य ही पूरे देश को एक सूत्र में बांधने के लिए व्यापक रूप से आज भी तैयार है। साहित्य का सीधा संबंध समाज से और समाज का सीधा संबंध राष्ट्र से होता है। आदि काल में कवि चंद्रबरदाई और कवि भूषण का हिंदुत्व चूंकि राष्ट्रीयता से अलग नहीं है। इसलिए जो संघर्ष हुआ वह राष्ट्रीयता के लिए ही था। भक्ति काल के कवियों की राष्ट्रीय चेतना धारा ने सुप्त राष्ट्रीय समाज को नई दिशा दी। कबीर दास ने जहां निराकार ब्रह्म की उपासना का उच्च आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्रीय गरिमा में नवजीवन का संचार किया वहीं राष्ट्रभक्त तुलसी ने राम के समन्वयवादी लोक रक्षक और लोक रंजक स्वरूप को स्थापित कर सांस्कृतिक एकता को शक्ति प्रदान की। सूर ने जहां एक ओर कृष्ण की विभिन्न लीलाओं के माध्यम से कर्म योगी आध्यात्मिक चेतना का संचार किया वहीं रीतिकाल के कवि रत्नों में कवि केशवदास ने अपनी रत्न बावनी में राजकुमार रतन सिंह के बलिदान का जिस ढंग से गौरव गान किया है वह किसी राष्ट्रनायक की याद दिलाने के लिए पर्याप्त है। रीतिकाल में एकमात्र वीर रस के प्रबल कविभूषण के राष्ट्रवादी स्वरों ने लोक चेतना को झकझोर दिया। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी लेखनी से 'भारत दुर्दशा' और 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' जैसे नाटकों से भारतीय संस्कृति की तत्कालीन स्थिति का जो चित्र खींचा वह राष्ट्रभाव के ही जागरण का प्रमाण था।

छायावादी कवियों की राष्ट्रीय सांस्कृतिक संचेतना

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती,' और 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में चंद्रगुप्त के मुख से 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' जैसे गीत कहलवाकर प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने भी राष्ट्रभाव का ही जागरण किया है। दरअसल छायावादी कवियों की राष्ट्रीय सांस्कृतिक संचेतना को नकारना कठिन ही नहीं, बल्कि उन राष्ट्रवादी कवियों की राष्ट्रभक्ति का अपमान ही होगा। उनका राष्ट्रप्रेम भावात्मक एवं व्यापक था। इसलिए मैथिलीशरण गुप्त ने राष्ट्रीयता की सुप्तभावना में लहरें उठा दी। उनकी रचनाओं में 'जयद्रथ वध' 'पंचवटी' 'जय भारत' 'साकेत' 'यशोधरा' 'विष्णु प्रिया' का चिंतन भी देश भक्ति आधारित ही रहा है। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' के प्राणों में बैठकर कोई एक प्रदेश नहीं, बल्कि पूरा राष्ट्र बोला है, इसलिए वे जीवन भर गाते रहे। मैं अतीत नहीं, भविष्य हूं आज तुम्हारा' (मैथिलीशरण गुप्त) भारत भारती की इसी परंपरा का विकास माखनलाल चतुर्वेदी (हिमकिरीटनी, हिमतरंगिणी, मुझे तोड़ लेना वनमाली का बलिदानी संकल्प) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर (रेणुका, हुंकार)सुभद्रा कुमारी चौहान (खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी)जय जन भारत जन जन मन अभिमत (पन्त)मस्तक देकर आज हम खरीदेंगे ज्वाला (महादेवी वर्मा)क्रांतिकारी वीरों जैसे रामप्रसाद बिस्मिल (सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है)भारती जय विजय करे जागो फिर एक बार (निराला)बच्चन (अग्निपथ)जैसे कवियों ने देश के मानस को इन अपराजेय संकल्पों से भरी गति का अनुभव करवाया था। साहित्य में राष्ट्रीय भाव की बात हो तो कवि रामधारी सिंह दिनकर की 'संस्कृति के चार अध्याय' का जिक्र किए बिना आगे बढ़ जाने से यह आलेख अधूरा ही रहेगा। दिनकर की वैचारिक भाव भूमि मानवतावादी थी तथापि समसामयिक परिस्थितियों में उठे विक्षोभ ने ही उन्हें राष्ट्रवादी कवि के रूप में स्थापित किया। दिनकर की सामासिक संस्कृति राष्ट्रीय भारतीय राष्ट्रकी पहचान है, जिसमें नफरत और अलगाव की संस्कृति के लिए कोई जगह नहीं है।

साहित्य में संस्कृति के प्रति गौरव बोध

कहना ना होगा कि साहित्य चाहे वह किसी भी भाषा का हो, में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव बोध ही वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता का हिस्सा है और राष्ट्रीय अस्मिता राष्ट्रबोध का अभिन्न हिस्सा। अज्ञेय का यह कथन युक्तियुक्त है कि- 'संस्कृतियों का संबंध अपनी देशभूमि से होता है। संस्कृति का यशोगान जिस किसी ने भी साहित्य में किया यह माना जाएगा कि साहित्य में वही राष्ट्रभाव का जागरण कर्ता और उद्घोषक है।' इस अर्थ में हिंदी साहित्य अग्रिम पंक्ति में खड़ा है। ◆◆◆

... चिर आनन्द

तिरंगे तले सब को आना चाहिए

केसर की क्यारियों से यदि कश्मीर है तो, केसरिया ध्वज वहां फहराना चाहिए।
ये है त्याग और बलिदान का प्रतीक इसे, देश के मुकुट पर लहराना चाहिए।।
नख से शीश तक अंग प्रत्यंग मां की अर्चना में ध्यान लग जाना चाहिए,
भारत का जयगान वन्देमातरम् गर्व से प्रसन्न हो गाना चाहिए।।
जो सहमत नहीं इस बात से, उनका कुछ उपचार करो।
अन्तिम संस्कार या, सीमाओं से पार करो।।
शत्रुओं के हाथ खेलते हैं जो 'ना'पाक प्रेमी, उनको उन्हीं की भाषा में समझाना चाहिए,
मज़हब की दुहाई औ मनमानियों को देशद्रोह के दायरे में लाना चाहिए।
खाते ही नहीं, लूटते भी जन-धन को जो, उनकी तिजोरियों को तुड़वाना चाहिए,
औ-लगता है डर जिन्हें मुल्क में, उन्हें यहां से चले जाना चाहिए।।
नासूर जो बन जाये फोड़ा तो, उसे चीर कर रखते हैं।
पिछले कल जो नहीं किया था, उसे आज कर सकते हैं।।
एक ही नियम इस देश के लिए-एक कानून बन जाना चाहिए,
जाति, पंथ, सम्प्रदाय-निजी मामले त्याग, तिरंगे तले सब को आना चाहिए।
न्याय और 'धर्म' हमारी सुनीति, इसे राजनीति में भी अपनाना चाहिए,
राष्ट्र है तो हम हैं ये सोच सभी को, शत्रुओं की ईंट से ईंट बजाना चाहिए।।

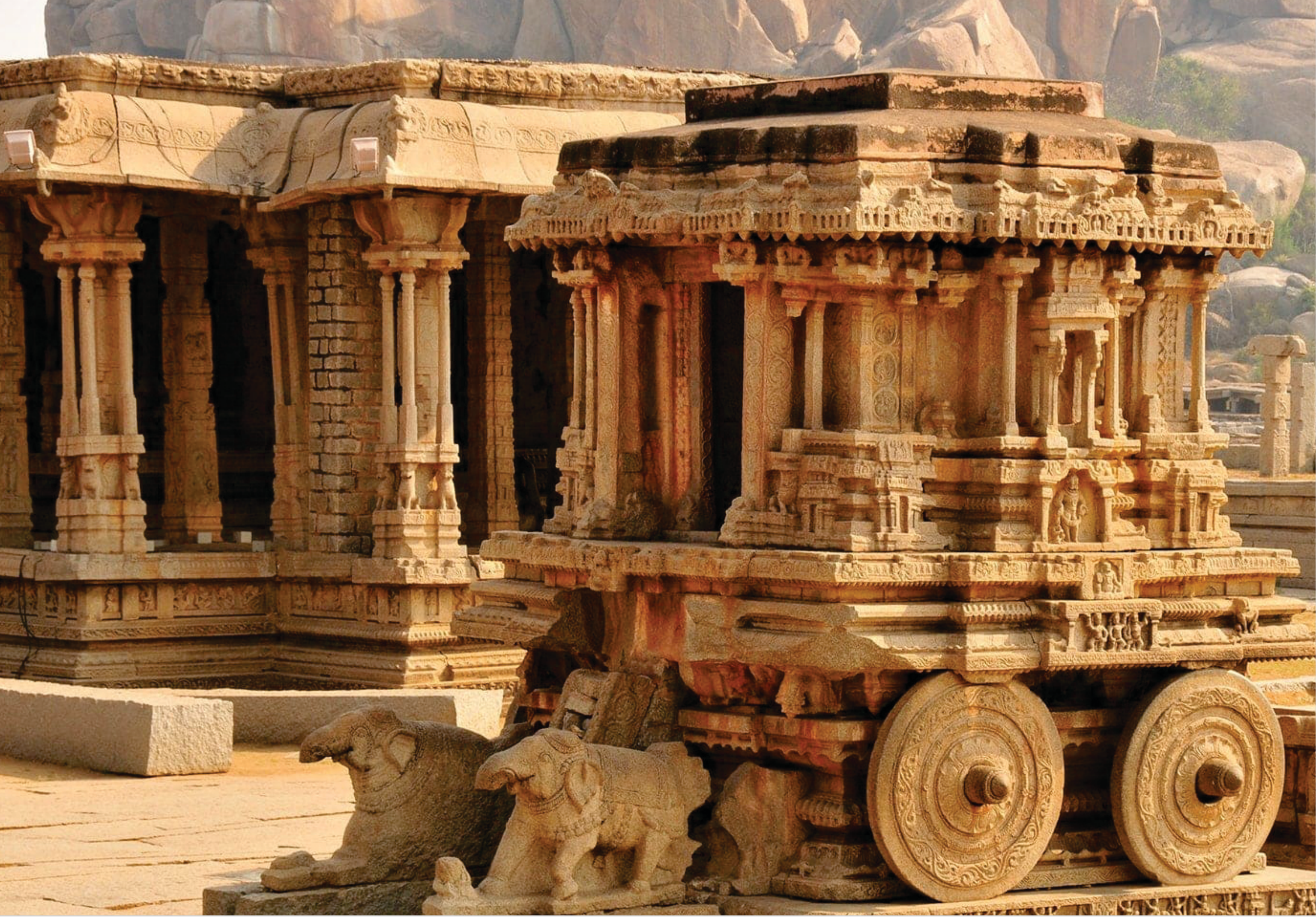

... -संगीता कुमारी

पुरातन भारतीय संस्कृति

भारत की पुरातन संस्कृति व परंपराओं के आलोक में राष्ट्र प्रेम की अदम्य व उदात्त भावना को भरने के लिए वेदों में अनेक स्थलों पर मातृभूमि की मुक्त कंठ से प्रशंसा का भाव उल्लेखित मिलता है। अपनी जन्मभूमि को माता मानने की भावना हमें वेदों में सहज ही उपलब्ध होती है। उदाहरणार्थ, अथर्ववेद के बारहवें कांड के प्रथम सूत्र के अंतर्गत 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या' के द्वारा मातृभूमि की कल्पना अद्वितीय है, अभूतपूर्व है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभूमि को मातृवत् मानकर उसकी रक्षा हेतु सदैव प्रयासरत रहे। वैदिक ग्रंथों में मातृभूमि को सुखाकारी, कल्याकणाकारी, निवासप्रदायिनी, निवेशनी, शिवा, उर्जस्वदात्री व पयस्वती कहकर उसके प्रति आत्मीयता की भावना को प्रकट किया गया है।

दरअसल जनमानस के हृदय में मातृभावना के भावों को भरने की भरपूर कोशिश हमारी प्राचीन संस्कृति में निहित है ताकि वे मिलजुल कर मातृभूमि की रक्षा के लिए हमेशा उद्यत एवं तत्पर रहें। वैदिक ग्रंथों में अनेक जगहों पर समान आचार, समान कर्म तथा समान लक्ष्य रखने का निर्देश दिया गया है जो कि राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण एवं वांछनीय हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि हम साथ-साथ चलें, साथ-साथ बोलें तथा सबके मन समान विषयों के लिए समान हो-'समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रेय वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।'

इतना ही नहीं, ऋग्वैदिक मन्त्रों में स्पष्ट कहा गया है कि जिस प्रकार भूमि, भाषा तथा धर्म के आधार पर कोई भेद नहीं करती, ठीक उसी प्रकार भूमि पर रहने वाले मनुष्य आपस में भाषा-भेद एवं धर्म-भेद के आधार पर कोई भेद न करें ताकि सुदृढ़ समाज एवं संगठन का निर्माण हो सके अर्थात् भेदभाव रहित तथा भ्रातृभाव युक्त राष्ट्र ही सौभाग्याशाली होता है। अथर्ववेद के 'पृथिवी सूक्त' की ऋचा में उल्लिखित है-'जनं बिभृती बहुधा वाचसं नानाधर्माणं पृथिवी....।' यजुर्वेद में देवों से महान गौरव व जनराज्य हेतु प्रार्थना की गई है-'इमं देवा असपत्रं सुवध्यंव महते क्षत्रय....।' ऋग्वेद में भी

वैदिक साहित्य के साथ लौकिक साहित्य में भी राष्ट्रीय भावना विषयक अवधारणा द्रष्टव्य है। भारतीय मनीषियों व साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं में संस्कृति, सभ्यता, जीवन-दर्शन व समाजोपयोगी तत्वों पर प्रकाश डाला है। उदाहरण के तौर पर आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ के माध्यम से यह भाव प्रकट किया है कि श्रीराम के शासनकाल में प्रजाजन की स्थिति के सदृश देश की जनता तन-मन-धन से समृद्ध होनी चाहिए। सभी धर्मात्मा, सुशिक्षित एवं निरोगी हों तथा कोई द्रोही न हो-'सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीला: सुसंयता:...।'

यह कथन उल्लेखनीय है कि राष्ट्र केलिए हम सदा बलिदान होने को उद्यत रहें- 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता।'

आतंकवादियों एवं देशद्रोहियों को आश्रय देना भी राष्ट्र द्रोह के रूप में सर्वथा निंदनीय है। वैदिक संस्कृति एवं मान्यताओं के अनुसार राष्ट्रद्रोहियों को राष्ट्रहित एवं राष्ट्रसुरक्षा के लिए पूर्णत: नष्ट कर देना चाहिए-

'मायाभिरिन्द्रं मायिनं त्वं शुष्णमवतिर:।
विदुष्टेम तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर।'

वैदिक साहित्य के साथ लौकिक साहित्य में भी राष्ट्रीय भावना विषयक अवधारणा द्रष्टव्य है। भारतीय मनीषियों व साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं में संस्कृति, सभ्यता, जीवन-दर्शन व समाजोपयोगी तत्वों पर प्रकाश डाला है। उदाहरण के तौर पर आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ के माध्यम से यह भाव प्रकट किया है कि श्रीराम के शासनकाल में प्रजाजन की स्थिति के सदृश देश की जनता तन-मन-धन से समृद्ध होनी चाहिए। सभी धर्मात्मा, सुशिक्षित एवं निरोगी हों तथा कोई द्रोही न हो-'सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीला: सुसंयता:...।'

साथ ही इस ग्रंथ के द्वारा यह भी संदेश दिया गया है कि देश का नेता कैसा होना चाहिए। मंत्रिमंडल कैसा होना चाहिए। राष्ट्रीय धन का समुचित उपयोग होना चाहिए। राष्ट्रकी समुचित प्रकार से सुरक्षा एवं देखभाल की जानी चाहिए-

'कोशलो नाम मुदित: स्फीतो जनपदो महान् निविष्ट: सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।।
अयोध्या नाम नगरी तन्नासील्लोकविश्रुता। मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।।'

रामायण में ही नहीं, अपितु महाभारत में भी सर्वत्र राष्ट्रीय भावना दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्र को सदैव आदर्श तथा अनुकरणीय राष्ट्र बनाने के प्रयत्नों की सराहना होती है। विभिन्न भागों में अवस्थित तीर्थों के प्रति आस्था को देखकर दर्शन करने की प्रेरणा देकर महाभारत में निश्चय ही अपने देशवासियों के हृदय में संपूर्ण देश के प्रति आत्मीयता एवं अखंडनीयता के भाव भरे हुए हैं जो कि वर्तमान कालिक राष्ट्रीय भावना के ही प्रतिरूप हैं।

कालिदास ग्रंथों में भी राष्ट्रीय भावना के साथ समग्र विश्व की मंगल कामना का भाव भी विद्यमान है। उन्होंने संसार के सभी व्यक्तियों को सुखी तथा उनकी कामनाओं की पूर्ति होने की कामना अभिव्यक्त की है। वे सभी को प्रसन्न देखना चाहते हैं। भास के नाटकों में भी अनेक स्थलों पर भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं राष्ट्रीय भावना का वर्णन द्रष्टव्य है। विशाखादत्त ने 'मुद्राराक्षस' में तथा भवभूति ने 'उत्तररामचरित' के माध्यम से यह महत्वपूर्ण संदेश दिया है कि देश नायक को अपने राष्ट्र की रक्षा तथा प्रजा के परिपालन के प्रति सदैव जागरूक एवं दृढ़संकल्प रहना चाहिए। 'नैषधीयचरितम्' में भी महाकवि श्रीहर्ष ने भारतभूमि को स्वर्गलोक से भी श्रेष्ठ माना है। 'शिवराजविजय' नामक उपन्यास भी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। गांधी गीता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंत:करण में व्याप्त दुर्भावों का पूर्णत: परित्याग कर देना चाहिए, क्योंकि दुर्भाव ही आंतरिक कलह का हेतु हैं- 'कलहं वै स्वकीयेषु नैव कुर्यात्कदाचन। कलहो राष्ट्रनाशाय भवतीति सुनिश्चितम्।।'

राष्ट्रीय जागरण में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना जैसी उत्कृष्ट, प्रांजल एवं उदात्त भावना भी नि:संदेह वैदिक संस्कृति व परंपरा में सर्वत्र व्याप्त रही है। आज हम सभी भारतीयों को अपनी सभ्यता व संस्कृति से अभिप्रेरित होकर अपने जीवन, परिवार, सुख-संपत्ति, ऐश्वर्य आदि की बेवजह परवाह न करते हुए सदैव राष्ट्र की मर्यादा, सम्मान, गौरव, स्वाभिमान एवं उत्कर्ष हेतु प्रयासरत रहना चाहिए और आवश्कता पड़ने पर अपने प्राणों का उत्सर्ग करने में भी तनिक संकोच नहीं करना चाहिए। ◆◆◆

... डॉ. जयकर्ण

स्वतन्त्रता पूर्व काव्य में राष्ट्रीयता

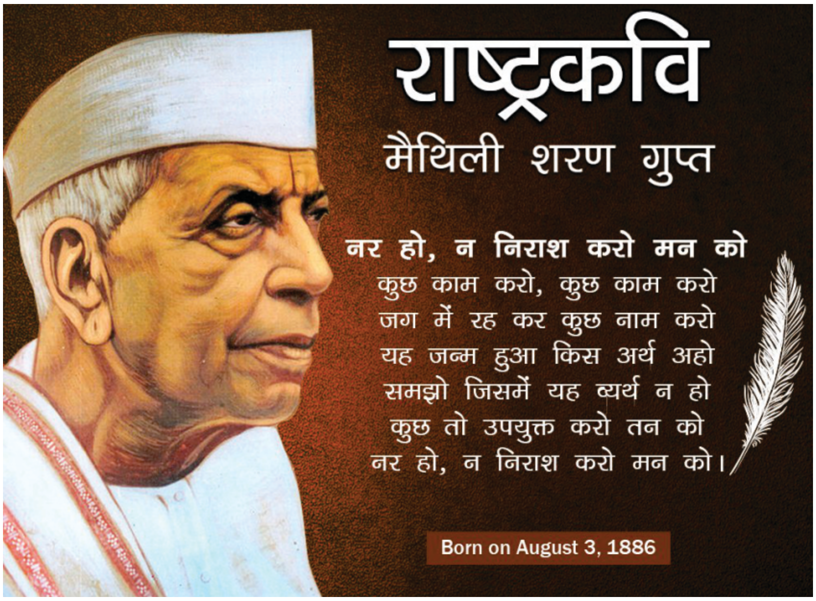

भारतीय संस्कृति में योगदर्शन के सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के पालन पर भारतेन्दु युगीन कवियों ने बल दिया था। इन्होंने आचरण की शुद्धता और व्यवहार की सात्विकता पर बल दिया था। इसके अतिरिक्त इन कवियों में भाषागत एकता, भौगोलिक एकता, सामाजिक एकता तथा साम्प्रदायिक सदभाव था।

स्वतन्त्रता के पूर्व समूचा भारत एक अभूतपूर्व राष्ट्रीय भाव जागरण के दौर से गुजरा था। उस दौर में आर्थिक, दार्शनिक, धार्मिक, नैतिक, प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से 'राष्ट्रीय एकता' स्थापित करने के ऐतिहासिक महत्व के प्रयास तत्कालीन हिन्दी कवियों द्वारा किए गए थे। आज भी उन असंख्य कविताओं से प्रेरणा रश्मियां लेकर भारतवासी अपनी संकीर्णता से बाहर निकलकर चैन की अनुभूति कर सकते हैं।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र को आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य का प्रवर्तक माना जाता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना और देश भक्ति ऐसे आदर्श को प्रस्तुत करती है, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत है। इस युग में भारत की प्राचीन आत्मा तथा शक्ति ने 'राष्ट्रीयता' रूपी नए शरीर में प्रवेश किया। इस प्रकार भारतेन्दु-युग राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार और प्रसार का युग बन गया। बद्रीनारायण चौधरी, प्रेमधन, प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्णदास, अम्बिकादत्त व्यास, बालमुकुंद गुप्त आदि इस युग के प्रमुख साहित्यकार थे। भारतेन्दु और उनके सहयोगी कवियों ने नवजीवन की शंख ध्वनि मुखरित की। उन्होंने देश की प्रगति का प्रश्न सामने लाकर उस पर गंभीरता पूर्वक विचार किया तथा देश, समाज तथा संस्कृति को नवीन दृष्टि से देखा। इन्होंने प्राचीन गौरव गाथा की कलात्मक अभिव्यक्ति से देशवासियों के सुषुप्त विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया। वास्तव में अतीत के गौरवगान और भारत की वर्तमान दुर्दशा दोनों ही के चित्रण भारतेन्दु युगीन काव्य में देखने को मिलते हैं। इन कवियों ने अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे भारतीयों के आर्थिक शोषण व विदेशी वस्तुओं के प्रचार इत्यादि का घोर विरोध किया। इन्होंने पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव और निर्धन वर्ग में आर्थिक असमानता की बात की। 1857 के पश्चात भारत का धन विदेश जाने लगा फलस्वरूप प्रजा का शोषण, मंहगाई, अकाल, कर, दरिद्रता व लोगों के अपमान आदि की प्रतिक्रिया भारतेन्दु कालीन साहित्य में मुखरता से हुई है।

भारतेन्दु ने उस समय प्रचलित भारी राज्यकर और सरकारी अफ़सरों के भारी-भरकम वेतनों पर भी कटाक्ष करते हुए उन्हें भारतीय निर्धनता का मूल कारण माना है। तत्कालीन कवियों की वाणी में 'अर्थनीति' की जो आलोचना हुई है उससे समग्र देश में जागरूकता व्याप्त हो गई थी।

तद्युगीन कवियों ने भारतवासियों में विभिन्न जाति-वर्ग से सम्बन्धित लोगों में एकता की स्थापना के लिए ईमानदार और सतत् प्रयास किए। भारत के सामाजिक और धार्मिक जीवन में बाह्य रूप से इनमें भिन्नताएं थी, लेकिन इसमें एक ऐसी मूलभूत एकता थी जिसने हिन्दुओं के धर्म और समाज के मूलरूप को नष्ट नहीं होने दिया था।

भारतीय संस्कृति में योगदर्शन के नियमों-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के पालन पर भारतेन्दु युगीन कवियों ने बल दिया था। इन्होंने आचरण की शुद्धता और व्यवहार की सात्विकता पर बल दिया था। इसके अतिरिक्त इन कवियों में भाषागत एकता, भौगोलिक एकता, सामाजिक एकता तथा साम्प्रदायिक सदभाव था। द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्रीय जागरण का पहला उबाल पूरी ताकत से आया। आधुनिक युग के काव्य में रवींद्रनाथ और राजनीति में महात्मा गांधी का गहरा प्रभाव पड़ा। देश की राष्ट्रीय प्रगति ने भावुक व्यक्तियों को प्रभावित किया। श्रीधर पाठक, महावीर

प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त आदि की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट लक्षित होती है।

द्विवेदी युगीन काव्य की सबसे प्रमुख प्रवृति राष्ट्रीय काव्य का सृजन है। राष्ट्रवादी अपनी भूमि को 'पुत्रोऽहं पृथिव्या:' के समान प्रेम करता है। भूमि वंदना और मातृभूमि की स्तुति के अतिरिक्त पर्वत, वन, सरिता, ;तुएं, पुष्प आदि उसे प्रेरणा देते हैं। इन कवियों ने प्राचीन आर्य जाति के गौरव का बखान करके भारतीयों को एकता के सूत्र मे पिरोने का महान कार्य और सामाजिक दायित्व पूरा किया था। मैथिलीशरण गुप्त ने प्राचीन भारतवासियों के द्वारा विदेशों में जाकर उपनिवेशों की स्थापना करने की ओर संकेत किया है। आर्य जाति के गौरव-गान के साथ-साथ वैदिक महिमा का बखान भी इन कवियों ने अपनी कविताओं में किया है। परतन्त्र भारत की दुर्दशा को कवि ने भोगा था, झेला था और उसे समाप्त करने का सुनहरा स्वप्न भी देखा था। अंग्रेजों ने भारतीय गांवों की आर्थिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न कर दी थी। द्विवेदी युग के अन्त में आर्थिक समस्या राष्ट्रीय आन्दोलन का भाग बन गई। काव्य में स्वदेशी उन्नति का संकेत अथवा सूक्ष्म उल्लेख मिलता है लेकिन उपन्यासों, कहानियों में इस आंदोलन का विस्तृत चित्रण मिलता है। सभी कवियों ने प्रांतीयता की संकुचित भावना का पूर्णत: त्याग कर विशाल राष्ट्रीयता की भावना अपनाने और कार्य करने पर बल दिया है समस्त जातियां आपस में भ्रातृत्व भाव रखने तथा सभी भारत को अपनी मातृभूमि माने। भिन्न प्रांत निवासी एक भारत रूपी शरीर के ही भिन्न-भिन्न अंग हैं। कवि ूट का निषेध करता है। हिन्दू-मुस्लिम को प्रीति का संदेश देकर फूट का लाभ कोई अन्य न उठाए इसलिए सतर्क रहने के लिए जातीय एवं धार्मिक एकता का ही संदेश दिया है। नैतिक एकता के सूत्र में पिरोने के प्रयास द्विवेदी युगीन कवियों के काव्य में परिलक्षित होते हैं। यहां भी कर्मवादी जीवन-दर्शन में आस्था व्यक्त हुई है। इसके अतिरिक्त इनकी कर्मशीलता और पुरूषार्थ में अन्यतम आस्था परिलक्षित होती है।

> “
> *भारतेन्दु और उनके सहयोगी कवियों ने नवजीवन की शंख ध्वनि मुखरित की। उन्होंने देश की प्रगति का प्रश्न सामने लाकर उस पर गंभीरता पूर्वक विचार किया तथा देश, समाज तथा संस्कृति को नवीन दृष्टि से देखा। इन्होंने प्राचीन गौरव गाथा की कलात्मक अभिव्यक्ति से देशवासियों के सुषुप्त विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया। वास्तव में अतीत के गौरवगान और भारत की वर्तमान दुर्दशा दोनों ही के चित्रण भारतेन्दु युगीन काव्य में देखने को मिलते हैं। इन कवियों ने अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे भारतीयों के आर्थिक शोषण व विदेशी वस्तुओं के प्रचार इत्यादि का घोर विरोध किया।*
> ”

छायावादी, रहस्यवादी और प्रगतिवादी विचारधाराओं के लने-ूलने का समय लगभग सन् 1921 से लेकर 1947 तक था। अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर भारत-पाक विभाजन तक इस अवधि में रचित काव्य का भारतीय राजनीति की सक्रियता, देश भक्तों की कुर्बानी प्रमुख वर्ण्य विषय रहे हैं। इस युग में छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी वर्मा इसके अतिरिक्त उग्र नीति में सक्रिय कवि माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर आदि तथा नर्मदल दल के प्रभाव में सक्रिय कवि सियारामशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त, राम-नरेश त्रिपाठी आदि उल्लेखनीय हैं।

जब भी भारत दुर्दशा के दौर से गुजरा है, तब यहां के कवियों, साहित्यकारों ने अपने काव्य-साहित्य में इस देश के गौरवमय अतीत के विषय में देशवासियों को गोर करने पर बाध्य किया है। अंग्रेजों की भीषण यातनाओं को सहते-सहते भारतवासी निराश हो चुके थे। ऐसी निराशाजनक स्थिति में कवियों ने भारतवर्ष के महान अतीत का गौरवगान करते हुए जनता के हृदय में आशा का स्ुरण भरने तथा सोई हुई भावना जगाने का प्रयत्न किया। उन्होनें भारतीयों को यह सोचने पर विवश किया कि अगर अतीत इतना उन्नत था तो वर्तमान को भी उतना ही वैभव पूर्ण और उज्ज्वल क्यों नहीं बनाया जा सकता? इस उद्देश्य को लेकर कवियों ने भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध महापुरूषों के साहस, अद्भुत पराक्रम और बलिदान का ओजस्वी वर्णन करते हुए सुप्तप्राय: जनता के हृदय को उद्वेलित करने का प्रयास किया।

गांधी जी के सत्याग्रह के समान ही कवियों ने असहयोग आन्दोलन का भी उल्लेख किया है। इस काल में लिखे गए महाकाव्यों में उस काल के राजनीतिक संघर्ष की प्रतिधवनियों को भी सुना जा सकता है। शासक और शासित का द्वन्द्व इस राजनीतिक संग्राम का एक मुंह बोलता चित्र है। इन कवियों ने विश्व के सामने भारतीय संस्कृति की मानववादिनी चेतना रेखांकित की है।

इस युग के कवि महात्मा गांधी, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और लोकमान्य तिलक द्वारा दिखाई गई राहों पर ही हर्ष पूर्वक अग्रसर हो रहे थे। इनके दर्शन का मूलाधार मानवतावाद ही माना जा सकता है। इस काल में परतन्त्रता के निवारण और स्वराज्य का मुख देखने की लालसा हिन्दी कवियों में पहले से कहीं अधिक बलवती नजर आने लगती है। इन का सारा जीवन ही अपनी कविताओं और काव्यों के द्वारा जनता को राष्ट्रीय धवज तले लाकर एक साथ जीने और मरने का पाठ पढ़ाने में होम हो जाता है। ◆◆◆

हम देखते हैं कि सैनिकों के परिवार की देशभक्ति की परीक्षा हर बार बेहद वेदनापूर्ण होती है। बावजूद इसके शहीदों के परिवार उसे सहजता से सह लेते हैं। शहीदों के परिवारजन राष्ट्रप्रेम की जो कीमत चुकाते हैं उसका मूल्य सर्वोच्च होता है, देश के सैनिकों की सेवाओं का कोई मोल नहीं हो सकता। वास्तव में देशप्रेम के उचित मूल्य का निर्धारण एक शहीद की पत्नी ही कर सकती है जो अपनी राष्ट्रभावना के खातिर ताउम्र जीवन की डोर को अकेले ही खींचती है।

... ✍ सुरेन्द्र कुमार

सर्वोच्च बलिदान

वैसे तो देश-प्रेम की भावना भारत में रहने वाले सभी नागरिकों में विद्यमान रहती है। लेकिन राष्ट्र-भक्ति के भाव को हमारे वीर जवान ही सर्वाधिक चरितार्थ करते हैं। देशहित के भाव की कसौटी अधिकतर हमारे योद्धाओं के पराक्रम पर ही निर्भर करती है। हमने देश के नेताओं, कलाकारों, खिलाड़ियों इत्यादि के ईमान को कई बार डगमगाते हुए देखा है। परंतु सरहदों पर तैनात हमारे सिपाही हर वक्त अपनी सच्ची देशभक्ति का ही परिचय देते हैं। उनकी वफादारी इतनी पवित्र एवं सच्ची होती है कि वे अपनी अंतिम सांस तक राष्ट्र गान का ही गुणगान करते हैं। वे मर मिट सकते हैं पर राष्ट्र के खिलाफ एक शब्द नहीं सुन सकते। देश के शूरवीरों की वीरता के अनेकों उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत हो चुके हैं। गत फरवरी माह जम्मू कश्मीर के पुलवामा में घटित फिदायीन हमले को हम कैसे भूल सकते हैं। जहां हमारे 40 से भी ज्यादा जवान एक साथ वीर गति को प्राप्त हो गए। देश के दुश्मनों ने हमले में क्विंटल से भी अधिक खतरनाक आरडीएक्स इस्तेमाल किया। जिससे हमारे जवानों के शरीर इस प्रकार क्षत-विक्षत हुए कि बताना भी कष्टदायी है। मानवता के इन दुश्मनों ने पुलवामा में घात लगाकर जिस घिनौनी घटना को अंजाम दिया। उसने दर्शा दिया कि आतंकवादियों का हमारे सैनिकों के प्रति कैसा दृष्टिकोण रहता है। यह हमला हमारे समक्ष पाकिस्तान की दोगली नीति का एक हृदय विदारक उदाहरण पेश कर गया। हम देखते हैं कि सैनिकों के परिवार की देशभक्ति की परीक्षा हर बार बेहद वेदनापूर्ण होती है। बावजूद इसके शहीदों के परिवार उसे सहजता से सह लेते हैं। शहीदों के परिवार जन राष्ट्र प्रेम की जो कीमत चुकाते हैं उसका मूल्य सर्वोच्च होता है, देश के सैनिकों की सेवाओं का कोई मोल नहीं हो सकता। वास्तव में देशप्रेम के उचित मूल्य का निर्धारण एक शहीद की पत्नी ही कर सकती है जो अपनी राष्ट्र भावना के खातिर ताउम्र जीवन की डोर को अकेले ही खींचती है। अब सवाल यह उठता है कि आखिर कब तक हम अपनी पीठ पर इस आतंकी छुरे को चुपचाप सहन करते रहेंगे, कब तक हम दहशतगर्दी का नंगा नाच देखते रहेंगे, कब तक हम पाक की नापाक हरकतों से दहशत में रहेंगे, कब तक हम हिंदुस्तान के स्वाभिमान पर दाग सहन करते रहेंगे, कब तक हम शहीदों के स्मारक पर शहादत के मेले लगाते रहेंगे। आखिरकार कब तक हम देश में घटित होने वाली ऐसी दिल दहलाने वाली घटनाओं के लिए कैंडल मार्च निकालते रहेंगे। यदि वास्तव में हम ऐसी वेदनापूर्ण घटनाओं से छुटकारा पाना चाहते हैं तो अब की बार हमें 26 फरवरी के तड़के जैसी अनेकों कार्रवाईयों को अन्जाम देना होगा। हमें पड़ोसी मुल्क के सभी आतंकी ठिकानों को तहस-नहस करने के लिए कुछ हट कर विचारना होगा। हमें एक ऐसी सैन्य कार्रवाई को अंजाम देना होगा जिसकी मार 26 फरवरी की सैन्य कार्रवाई से भी सटीक व दूरगामी हो। हमें एक ऐसी जवाबी कार्रवाई अपनानी होगी जिसका प्रभाव बेहद सटीक व दूरगामी हो। अबकी बार एक ऐसा वार करना होगा जिससे विरोधियों के हौसले सहजता से पस्त हो सकें। ◆◆◆

जननी जन्म भूमीश्च...

... डॉ. परितोष बैलगो

राष्ट्र को अपनी जन्मभूमि मानकर, अपने को उसका एक अंग मानना, उसके लिए कुछ न कुछ करने को तत्पर होना ही राष्ट्रीयता है। राष्ट्रीयता ऐसी प्रेरक शक्ति है, जो व्यक्ति के हृदय में उत्कट देश-प्रेम की भावना जगाकर उसे स्वाभिमानी, पराक्रमी, त्यागी और बलिदानी बनाती है। जिस देश में मनुष्य जन्म लेता है, जहां का अन्न-जल ग्रहण कर वह बड़ा होता है, जिस भाषा में सहजता से अपने विचार व्यक्त करता है, जिस संस्कृति में पलकर उसके व्यक्तित्व का स्वभाविक विकास होता है, उसके संरक्षण एवं संवर्धन के निमित सतत जागरूक, तथा सतर्क रहना और प्रयोजन पड़ने पर सहर्ष प्राणोत्सर्ग तक कर देने का अदम्य उत्साह ही राष्ट्रीयता का प्रमुख लक्षण है। मनुष्य कोई भी ऐसा काम न करे जिससे राष्ट्र को हानि हो। यदि हमारा देश सुरक्षित व उन्नत नहीं होगा तो हम अपना चरित्र व सुख साधन भी सुरक्षित नहीं रख सकते हैं। अगर हम कोई निकृष्ट कार्य नहीं करेंगे तो राष्ट्र का पतन भी नहीं होगा। जो व्यक्ति जहां जिस पद पर बैठा है वह वहीं अपने कर्तव्य और उतरदायित्व का ईमानदारी से पालन करे तो समाज में और राष्ट्रमें जो अलगाव, जातिवाद, भ्रष्टाचार और विभाजन होता जाता रहा है, वह समाप्त होगा और राष्ट्र संगठित और शक्तिशाली बनेगा। वर्तमान में भारत में कश्मीर और उत्तर-पूर्व भारत तथा नक्सलवाद जैसी कुछ ताकतें हैं जो अलगाववादी और आजादी के लिए आवाजें उठा रही हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अलगाववादी तत्व भारत भूमि में रहकर सारी सुख-सुविधाओं को भोगकर, दुश्मन देश का गुणगान करते हैं। भारत में रहते हुए पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते हैं। 14 फरवरी का दिन देश के लिए एक काला दिन था जब पुलवामा में कायरतापूर्ण आतंकी घटना में सी.आर.पी.एफ के 40 से अधिक जवानों का शहीद होना एक ऐसी घिनौनी हरकत है जिसकी जितनी भर्त्सना की जाए, कम है। देश में रह रहे इन देशद्रोहियों का क्या करें जो इस अमानवीय घटना पर संदेह जताते हैं। जो व्यक्ति ऐसे अवसरों पर विचारधारा और राजनैतिक विरोध के कारण ऐसी घटनाओं पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं वे अन्तत: शत्रु हित और देश को हानि पहुंचाने का काम करते हैं, अत: वे एक प्रकार से देशद्रोही होते हैं। उन्हें उनके देश विरोधी कार्यों के लिए देश की न्याय व्यवस्था द्वारा उचित दण्ड मिलना ही चाहिए।

सभी नागरिकों को देश के प्रति निष्ठावान होकर अपने देश की सेना के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। रामायण में स्वदेश गौरव का उल्लेख करते हुए श्रीराम ने लक्ष्मण को बताया था कि जन्म देने वाली मां और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती हैं- 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।' जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'' अथर्ववेद में भी कहा गया है - 'माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:' अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं। हम इन भावों को जान लें और देश के सभी जन इन भावनाओं के अनुसार व्यवहार करें तो यह देश और प्रजा के लिए शुभ होगा। हमें देश के प्रति सम्मान, त्याग, भक्ति व प्रेम की भावना से युक्त होना होगा। हमारे भीतर जन्मना जातिवाद व अन्य प्रकार की बुराईयों के निराकरण और अन्धविश्वासों व अज्ञानता से भी मुक्त होना होगा। ऐसा होने पर ही हमारा और हमारे देश का कल्याण होगा।

किसी रचनाकार ने कितनी सुन्दर पंक्तियां लिखी हैं- देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें। सचमुच! देश व समाज हमें इतना कुछ देता है कि हम कई जन्मों में भी उससे उऋण नहीं हो सकते। लेकिन आज देश-प्रेम, देश सेवा जैसे शब्द ध्यान में आते ही सबसे पहले एक सैनिक की छवि सामने आती है। ये सही है कि सैनिक देश की सेवा करते हैं, वे सीमा प्रहरी भी हैं। प्रत्येक देशवासी को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में देश की सेवा करनी चाहिए। सुरसा के मुंह की तरह फैलती जन संख्या पर नियंत्रण करना भी देश की सबसे बड़ी सेवा होगी।

जहां तक संभव हो सके पानी का समुचित उपयोग करना, पॉलिथीन व प्लास्टिक का प्रयोग न करना, सार्वजनिक स्थलों पर सफाई का ध्यान रखना। अन्य-अन्य नियमों का अनुशासन पूर्वक पालन करना और देश के सभ्य नागरिक के रूप में आचरण एवं व्यवहार करना भी राष्ट्र भाव ही है। राष्ट्र पर्व संसदीय चुनावों के समय आवश्यक रूप से मतदान करना यह हमारा अधिकार ही नहीं, अपितु दायित्व भी है। दुर्जनों की सक्रियता से अधिक खतरनाक सज्जनों की निष्क्रियता होती है जो देशहित में नहीं होती है। बिना वर्दी के भी हम देशभक्ति कर राष्ट्र विरोधी ताकतों को परास्त कर सकते हैं। ◆◆◆

सभी नागरिकों को देश के प्रति निष्ठावान होकर अपने देश की सेना के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। रामायण में स्वदेश गौरव का उल्लेख करते हुए श्रीराम ने लक्ष्मण को बताया था कि जन्म देने वाली मां और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती हैं- 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।' जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

... चंद्र बराल

> ***दुनिया के ज्यादातर देशों में भले ही नया साल 1 जनवरी को ही मनाया जाता है लेकिन भारतीय कैलेंडर के अनुसार नववर्ष का आगाज 1 जनवरी से नहीं बल्कि चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से होता है। यह पृथ्वी का पहला दिन भी है।***

नववर्ष के आगमन पर प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में हो अपने आपको को उत्साहित, प्रफुल्लित व नई उर्जा से ओत-प्रोत महसूस करने लगता है। हम भारतीयों ने नववर्ष के इतिहास के बारे में आजदिन तक शायद ही यह जानने की कोशिश की होगी की इस नववर्ष का कब, कैसे, कहां और किस दिन से प्रारंभ हुआ। ज्यादातर देश वासी 1 जनवरी को ही नववर्ष की शुरुआत मानते हैं जबकि यह सत्य नहीं है, इसके पीछे की वजह है हमारी अपनी संस्कृति व इतिहास के प्रति उदासीनता।

1 जनवरी से शुरू होने वाले कैलेंडर को ग्रिगोरियन कैलेंडर के नाम से जाना जाता है, जिसकी शुरूआत 15 अक्टूबर 1582 में हुई इस कैलेंडर की शुरूआत ईसाईयों ने क्रिसमस की तारीख निश्चित करने के लिए की क्योंकि ग्रिगोरियन कैलेंडर से पहले 10 महीनों वाला रूस का जूलियन कैलेंडर प्रचलन में था परंतु इस कैलेंडर में कई गलतियां होने की वजह से हर साल क्रिसमस की तारीख कभी भी एक निश्चित दिन में नहीं आती थी इसलिए 1 जनवरी को ही इन लोगों ने नववर्ष मनाना शुरू कर दिया। यह तो ईसाई धर्म की बात थी लेकिन क्या हम भारतीयों ने कभी सोचा की हमारा नववर्ष भी 1 जनवरी से ही प्रारंभ होता है? यह ठीक है कि किसी को भी कोई भी उत्सव जब मर्जी मनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए यह उसका अपना निजी अधिकार है लेकिन क्या यह एक सीमा तक नहीं होना चाहिए? क्या इस अधिकार की आड़ में हम अपनी संस्कृति व अपने संस्कारों की ही तिलांजलि दे दें? यदि हम अपने संस्कारों व संस्कृति को ऐसे ही भूलते रहे तो आज जिस भारतीय संस्कृति का अनुसरण विदेशी लोगों ने करना शुरू किया है एक दिन वह संस्कृति हमारे लिए ही पराई हो जाएगी।

दुनिया के ज्यादातर देशों में भले ही नया साल 1 जनवरी को ही मनाया जाता है लेकिन भारतीय कैलेंडर के अनुसार नववर्ष का आगाज 1 जनवरी से नहीं बल्कि चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से

“
भारतीय कैलेंडर की जो गणना है वह सूर्य और चंद्रमा के अनुसार होती है। यह भी कहा जाता है कि दुनिया के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं। विक्रम संवत को ही नव संवत्सर भी कहा जाता है। संवत्सर पांच तरह का होता है जिसमें सौर, चंद्र, नक्षत्र, सावन और अधिमास आदि आते हैं। विक्रम संवत में यह सब शामिल होते हैं यह बात अलग है विक्रमी संवत के उद्भव को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं फिर भी अधितर 57 ईसवीं पूर्व ही इसकी शुरुआत मानते हैं। भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार विक्रम संवत ही हैं। इसकी शुरुआत मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी से हुई।
”

होता है। इसे नव संवत्सर भी कहते हैं। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार यह अक्सर मार्च-अप्रैल के महीने से आरंभ होता है। भारतीय कैलेंडर की जो गणना है वह सूर्य और चंद्रमा के अनुसार होती है। यह भी कहा जाता है कि दुनिया के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं। विक्रम संवत को ही नव संवत्सर भी कहा जाता है। संवत्सर पांच तरह का होता है जिसमें सौर, चंद्र, नक्षत्र, सावन और अधिमास आदि आते हैं। विक्रम संवत में यह सब शामिल होते हैं यह बात अलग है विक्रमी संवत के उद्भव को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं फिर भी अधिकतर 57 ईसवीं पूर्व ही इसकी शुरुआत मानते हैं। भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार विक्रम संवत ही हैं। इसकी शुरुआत मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी से हुई। यह हिंदू कैलेन्डर राजा विक्रमादित्य के शासन काल में जारी हुआ था तभी इसे विक्रम संवत के नाम से भी जाना जाता है। विक्रमादित्य की जीत के बाद जब उनका राज्यारोहण हुआ तब उन्होंने अपनी प्रजा के तमाम ऋणों को माफ करने की घोषणा करने के साथ ही भारतीय कैलेंडर को जारी किया इसे विक्रम संवत नाम दिया गया। विक्रम संवत आज तक भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार बना हुआ हैं। सबसे बड़ी विशेषता इस कैलेंडर की यह है कि यह वैज्ञानिक रूप से काल गणना के आधार पर बना हुआ है चाहे 12 महीने हो, दिन हो, सप्ताह हों या इनके सात दिन हों यह सब ग्रहों पर आधारित है।

सभी 12 महीने राशियों के नाम पर हैं, इसका समय 365 दिन का होता है। बात करें चन्द्र वर्ष की तो इसके महीने चैत्र से प्रारम्भ होते हैं। इसकी समयावधि 354 दिनों की होती है शेष बढ़े हुए 10 दिन अधिमास के रूप में माने जाते हैं। ज्योतिष काल की गणना के अनुसार इसके 27 प्रकार के नक्षत्रों का वर्णन है। एक नक्षत्र महीने में दिनों की संख्या भी 27 ही मानी गई है। सावन वर्ष में दिनों की संख्या लगभग 360 होती है और मास के दिन 30 होते हैं वैसे तो अधिमास के 10 दिन चन्द्रवर्ष का भाग है लेकिन इसे चंद्रमास न कह कर अधिमास कह दिया जाता है। वह यूनानी ही थे जिन्होंने नकल कर भारत के इस हिंदू कैलेंडर को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में फैलाया। भले ही आज दुनिया भर में अंग्रेजी कैलेंडर का प्रचलन बहुत अधिक हो गया हो लेकिन फिर भी भारतीय कलैंडर की महत्ता कम नहीं हुई। आज भी हम अपने व्रत-त्यौहार, महापुरुषों की जयंती-पुण्यतिथि, विवाह व अन्य सभी शुभ कार्यों को करने के मुहूर्त आदि भारतीय कलैंडर के अनुसार ही देखते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही वासंती नवरात्र भी प्रारंभ होते हैं। सबसे खास बात इसी दिन ही सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। ताज्जुब होता है जिस भारतीय कैलेंडर ने दुनिया भर के कैलेंडर को वैज्ञानिक राह दिखाई हम उसे ही आज भूलने लग गए हैं ठीक है आप नववर्ष को 1 जनवरी से मनाएं लेकिन क्या हम अपने वजूद को भी भूल जाएं क्या हमें अपने हिंदू कैलेंडर के अनुसार नववर्ष को नहीं मनाना चाहिए जिसमें पूरे ब्रह्माण्ड की रचना है। ◆◆◆

वीर

... मीना चन्देल

ऐ वीर सपूतों भारत के
तुम अटूट सम्मान के अधिकारी हो
है धन्य तुम्हारी जननी मां
उस पर तो जग बलिहारी हो
आसान नहीं सर कफन बांध
बेटे को सीख सीखा देना
दुश्मन न नजर उठा पाए
चाहे अपना शीश चढ़ा देना?
है नमन उस पिता को
देश पर कर न्यौछावर तुझे
आंखे भी नम नहीं करता
देश पर लुटा दे अपनी जवानी
हर कोई ऐसी मौत नहीं मरता
जिस उम्र में इश्क की लहरें
दिल में हिलोरे खाती हैं
ए शेर तेरी दहाड़
दिल दुश्मन के कंपाती है
हो तुम सरहद पर बने रक्षक
तो चैन से हम जी पाते हैं
समक्ष तेरे एक शौर्यवीर
शत-शत हम शीश झुकाते हैं
ए वीर सपूत धरती के
सदा ही तेरी शान रहे
तेरे हाथों में परचम है
तो भारत मां का मान रहे
सरहद पर तेरी होली है
सरहद पर तेरी दीवाली है
हर बहन की दुआ है साथ तेरे
रक्षाबंधन पर चाहे
खाली तेरी कलाई है
हर मां का नूर है तू
हर पिता का गुरूर है तू
हर इक ने दुआएं तुझ पर वारी हैं
ए वीर सपूत भारत के
तू अटूट सम्मान अधिकारी है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ग्वालियर में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव-1
भारतीय परिवार व्यवस्था- मानवता के लिए अनुपम देन

परिवार व्यवस्था हमारे समाज का मानवता को दिया हुआ अनमोल योगदान है। अपनी विशेषताओं के कारण हिन्दू परिवार व्यक्ति को राष्ट्र से जोड़ते हुए वसुधैव-कुटुम्बकम् तक ले जाने वाली यात्रा की आधारभूत इकाई है। परिवार व्यक्ति की आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था के साथ-साथ नई पीढ़ी के संस्कार निर्मिति एवं गुण विकास का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हिन्दू समाज के अमरत्व का मुख्य कारण इसका बहुकेन्द्रित होना है एवं परिवार व्यवस्था इनमें से एक सशक्त तथा महत्त्वपूर्ण केन्द्र है।

आज हमारी परिवार रूपी यह मंगलमयी सांस्कृतिक धरोहर बिखरती हुई दिखाई दे रही है। भोगवादी मनोवृत्ति एवं आत्मकेन्द्रिता का बढ़ता प्रभाव इस पारिवारिक विखंडन के प्रमुख कारण हैं। आज हमारे संयुक्त परिवार एकल परिवारों में परिवर्तित होने लगे हैं। भौतिकतावादी चिन्तन के कारण समाज में आत्मकेन्द्रित व कटुतापूर्ण व्यवहार, असीमित भोग-वृत्ति व लालच, मानसिक तनाव, सम्बंध विच्छेद आदि बुराईयाँ बढ़ती जा रही हैं। छोटी आयु में बच्चों को छात्रावास में रखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिवार के भावनात्मक संरक्षण के अभाव में नई पीढ़ी में एकाकीपन भी बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप नशाखोरी, हिंसा, जघन्य अपराध तथा आत्महत्याएँ चिन्ताजनक स्तर पर पहुँच रही हैं। परिवार की सामाजिक सुरक्षा के अभाव में वृद्धाश्रमों की सतत वृद्धि चिंताजनक है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह स्पष्ट मत है कि अपनी परिवार व्यवस्था को जीवंत तथा संस्कारक्षम बनाए रखने हेतु आज व्यापक एवं महती प्रयासों की आवश्यकता है। हम अपने दैनन्दिन व्यवहार व आचरण से यह सुनिश्चित करें कि हमारा परिवार जीवन मूल्यों को पुष्ट करने वाला, संस्कारित व परस्पर संबंधों को सुदृढ़ करने वाला हो। सपरिवार सामूहिक भोजन, भजन, उत्सवों का आयोजन व तीर्थाटन(मातृभाषा का उपयोग, स्वदेशी का आग्रह, पारिवारिक व सामाजिक परम्पराओं के संवर्धन व संरक्षण से परिवार सुखी व आनंदित होंगे। परिवार व समाज परस्पर पूरक हैं। समाज के प्रति दायित्वबोध निर्माण करने के लिए सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक कार्यो हेतु दान देने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के यथासंभव सहयोग के लिए तत्पर रहना हमारे परिवार का स्वभाव बने।

हमारी परिवार व्यवस्था की धुरी माँ होती है। मातृशक्ति का सम्मान करने का स्वभाव परिवार के प्रत्येक सदस्य में आना चाहिए। सामूहिक निर्णय हमारे परिवार की परंपरा बननी चाहिए। परिवार के सदस्यों में अधिकारों की जगह कर्तव्यों पर चर्चा होनी चाहिए। प्रत्येक के कर्तव्य-पालन में ही दूसरे के अधिकार निहित हैं।

कालक्रम से अपने समाज में कुछ विकृतियाँ व जड़ताएँ समाविष्ट हो गई हैं। दहेज, छुआछूत व ऊँच-नीच, बढ़ते दिखावे एवं अनावश्यक व्यय, अंधविश्वास आदि दोष समाज के सर्वांगीण विकास की गति में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। प्रतिनिधि सभा सम्पूर्ण समाज से यह अनुरोध करती है कि अपने परिवार से प्रारंभ कर, इन कुरीतियों व दोषों को जड़मूल से समाप्त कर एक संस्कारित एवं समरस समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करें।

समाज निर्माण की दिशा में पूज्य साधु-सन्तों एवं धार्मिक- सामाजिक- शैक्षणिक- वैचारिक संस्थाओं की सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रतिनिधि सभा इन सबसे भी अनुरोध करती है कि वे परिस्थिति की गंभीरता को समझकर परिवार संस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें। प्रसार के विभिन्न माध्यम समाज को संस्कारित करने का एक प्रभावी साधन हो सकते हैं। इन क्षेत्रों से सम्बंधित विभिन्न विधाओं के महानुभावों से यह सभा निवेदन करती है कि वे सकारात्मक संदेश देने वाली फिल्मों व विविध कार्यक्रमों का निर्माण कर परिवार व्यवस्था की जड़ों को मजबूत करते हुए नई पीढ़ी को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने में योगदान करें। प्रतिनिधि सभा सभी सरकारों से भी अनुरोध करती है कि वे शिक्षा-नीति बनाने से लेकर परिवार सम्बंधी कानूनों का निर्माण करते समय परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अपना रचनात्मक योगदान दें। परिस्थितिजन्य विवशताओं के कारण

एकल परिवारों में रहने के लिये बाध्य हो रहे व्यक्ति भी अपने मूल परिवार के साथ सजीव संपर्क रखते हुए निश्चित अंतराल पर कुछ समय सामूहिक रूप से अवश्य बिताएँ। अपने पूर्वजों के स्थान से जुड़ाव रखना अपनी जड़ों के साथ जुड़ने के समान है। इसलिये वहाँ विभिन्न गतिविधियाँ जैसे परिवार सहित एकत्रित होना, सेवा कार्य करना आदि आयोजित करने चाहिए। बालकों में पारिवारिक एवं सामाजिक जुड़ाव निर्माण करने के लिए उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय परिवेश में रहकर ही कराई जानी चाहिए। अपने निवास क्षेत्र में सामूहिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों के द्वारा वृहद परिवार का भाव निर्मित किया जा सकता है। बाल-किशोरों के संतुलित विकास हेतु बालगोकुलम्, संस्कार वर्ग आदि कार्यक्रम करना भी उपयोगी रहेगा।

त्याग, संयम, प्रेम, आत्मीयता, सहयोग व परस्पर पूरकता से युक्तजीवन ही सुखी परिवार की आधारशिला है। इन विशेषताओं से युक्तपरिवार ही सभी घटकों के सुखी जीवन को सुनिश्चित करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज विशेषकर युवा पीढ़ी का आह्वान करती है कि अपनी इस अनमोल परिवार व्यवस्था को अधिक से अधिक सजीव, प्राणवान, संस्कारक्षम बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

प्रस्ताव-2
हिन्दू समाज की परम्पराओं व आस्थाओं के रक्षण की आवश्यकता

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि अभारतीय दृष्टिकोण के आधार पर हिन्दू आस्था और परम्पराओं को आहत एवं इनका अनादर करने का एक योजनाबद्ध षड्यंत्र निहित स्वार्थी तत्त्वों द्वारा चलता आ रहा है। शबरीमला मंदिर प्रकरण इसी षड्यंत्र का नवीनतम उदाहरण है।

हिंदुत्व ईश्वर के एक ही स्वरूप अथवा पूजा पद्धति को स्वीकारने तथा अन्यों को नकारने वाला विचार नहीं है, अपितु संस्कृति के विविध विशेष रूपों में अभिव्यक्त होने वाला जीवन दर्शन है। इसका अनूठापन विविध पूजा पद्धतियों, स्थानीय परम्पराओं व उत्सव, आयोजनों से प्रकट होता है। हमारी परम्पराओं में विद्यमान विविधता के सौंदर्य पर नीरस एकरूपता को थोपना असंगत है।

हिन्दू समाज ने अपनी प्रथाओं में काल और आवश्यकता के अनुरूप सुधारों का सदैव स्वागत किया है, परन्तु ऐसा कोई भी प्रयास सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक नेतृत्व के मार्गदर्शन में ही होता रहा है और आम सहमति के मार्ग को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती रही है। केवल विधिक प्रक्रियाएँ नहीं, अपितु स्थानीय परम्पराएँ व स्वीकृति सामाजिक व्यवहार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सम्पूर्ण हिन्दू समाज आज एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना कर रहा है। केरल की सत्तारूढ़ वाम मोर्चा सरकार, माननीय उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ द्वारा पवित्र शबरीमला मंदिर में सभी आयुवर्ग की महिलाओं को प्रवेश के आदेश को लागू करने की आड़ में हिन्दुओं की भावनाओं को कुचल रही है।शबरीमला की परंपरा देवता और उनके भक्तों के बीच में अनूठे संबंधों पर आधारित है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि न्यायालय ने निर्णय तक पहुँचते हुए सैंकड़ों वर्षो से चली आ रही समाज स्वीकृत परंपरा की प्रकृति और पृष्ठभूमि का विचार नहीं किया(धार्मिक परम्पराओं के प्रमुखों के विचार जाने नहीं गए(महिला भक्तों की भावनाओं की भी अनदेखी की गई। समग्र विचार के अभाव में स्थानीय समुदायों द्वारा सदियों से स्थापित, संरक्षित और संवर्धित वैविध्यपूर्ण परम्पराओं को इससे ठेस पहुँची है।

केरल की मार्क्सवादी नीत सरकार के कार्यकलापों ने अय्यप्पा भक्तों में मानसिक तनाव उत्पन्न कर दिया है। नास्तिक, अतिवादी वामपंथी महिला कार्यकर्ताओं को पीछे के दरवाजे से मंदिर में प्रवेश करवाने के राज्य सरकार के प्रयत्नों ने भक्तों की भावनाओं को बहुत आहत किया है। सीपीएम अपने क्षुद्र राजनैतिक लाभ एवं हिन्दू समाज के विरुद्ध वैचारिक युद्ध का एक अन्य मोर्चा खोलने के लिए यह कर रही है। यही कारण है कि अय्यप्पा भक्तों, विशेषकर महिला भक्तों द्वारा अपनी धार्मिक स्वतंत्रताओं और अधिकारों की रक्षा के लिए एक स्वत:स्फूर्त और अभूतपूर्व आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी भक्तों की सामूहिक भावनाओं का हृदयपूर्वक सम्मान करती है और मंदिर परम्पराओं की रक्षा हेतु संयम तथा शालीनता से संघर्षरत रहने का आह्वान करती है। प्रतिनिधि सभा केरल सरकार से आग्रह करती है कि श्रद्धालुओं की आस्था, भावना तथा लोकतांत्रिक अधिकारों का आदर करे और अपनी ही जनता पर अत्याचार न करे। प्रतिनिधि सभा आशा करती है कि उच्चतम न्यायालय इस विषय में दायर पुनर्विचार व अन्य याचिकाओं पर सुनवाई करते समय इन सब पहलुओं का समग्रतापूर्वक विचार करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा देश के लोगों से शबरीमला बचाओ आन्दोलन को हर प्रकार से समर्थन देने का आह्वान करती है। ◆◆◆

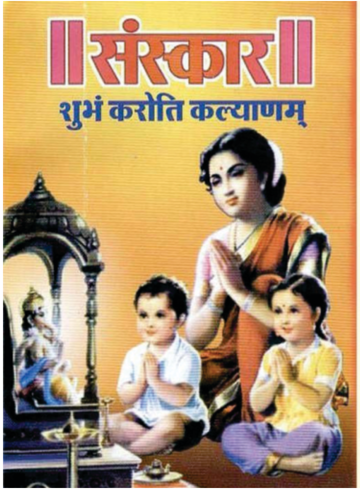

संस्कार

हमारी संस्कृति हमारी विरासत

... डॉ. अर्चना गुलेरिया

संस्कारों के द्वारा माता-पिता व सन्तान मिलकर जैसे एक परिवार बनाते हैं वैसे ही संस्कारों के द्वारा ही मतृभूमि, समान पूर्वज, पुत्ररूप समाज, समान संस्कृति से मिलकर राष्ट्रीय भाव अंकुरित होता है। प्राचीन काल से ही यह भाव देखने को मिलता है। भारतीय संस्कार में यह हमारे लिए भूखण्ड मात्र नहीं अपितु भारत आराध्य देव है। जीवनादर्शों, स्त्री धन, अतिथि आदि के प्रति समान दृष्टिकोण का राष्ट्रीय भाव भारत के मानस में संस्कारों में व्याप्त है। विविधता होने पर भी यह राष्ट्रीय भाव भारत के मानस पटल पर विद्यमान है।

राष्ट्रीय भाव से पहले एक प्रश्न उभर कर आता है कि 'राष्ट्र का अर्थ क्या है? हमारे ऋषियों ने स्पष्टता के साथ वर्णन किया है। राष्ट्रका निर्माण भूमि, जन व संस्कृति से होता है। यहां का समाज राज्याश्रित नहीं रहा। शालाएं, मठ-मन्दिर सर्वदूर फैली हुई सन्यासी परम्परा तथा संयुक्त परिवार आदि सभी सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र स्वतन्त्र रहे। अनेक मेले, उत्सव तथा विभिन्न परम्पराएं समाज को जोड़े रहीं जैसे कुम्भ, चार धाम यात्रा आदि। इतना ही नहीं यहां की आर्थिक व्यवस्था भी स्वावलम्बी तथा विकेन्द्रित थी। इन सभी व्यवस्थाओं द्वारा यहां का समाज सभी प्रकार के संस्कार बनाए रखते हुए संघर्षों में भी अपने धर्म पर अडिग रहने की प्रेरणा प्राप्त करता रहा। युगों-युगों से यहां राष्ट्रीय भाव विद्यमान रहा है। वेदों में भी राष्ट्रीय भावना विद्यमान रही है। आधुनिक शोध से ज्ञात हुआ है कि भारत के सभी लोगों का गुणसूत्र लगभग 40 हजार वर्षों से एक है।

संस्कारों के द्वारा माता-पिता व सन्तान मिलकर जैसे एक परिवार बनाते हैं वैसे ही संस्कारों के द्वारा ही मातृभूमि, समान पूर्वज, पुत्ररूप समाज, समान संस्कृति से मिलकर राष्ट्रीय भाव अंकुरित होता है। प्राचीन काल से ही यह भाव देखने को मिलता है। भारतीय संस्कार में यह हमारे लिए भूखण्ड मात्र नहीं अपितु भारत आराध्य देव है। जीवनादर्शों, स्त्री धन, अतिथि आदि के प्रति समान दृष्टिकोण का राष्ट्रीय भाव भारत के मानस में संस्कारों में व्याप्त है। विविधता होने पर भी यह राष्ट्रीय भाव भारत के मानस पटल पर विद्यमान है।

भारतवर्ष की उन्नति और विजय से सभी राष्ट्रीय शक्तियों को प्रसन्नता की अनुभूति होना व पराजय से दु:ख का अनुभव होना स्वाभाविक रहता है। उदाहरणतया यदि किसी युद्ध या सर्जिकल स्ट्राईक में या फिर किसी खेल में हमारी विजय हो तो पूरा राष्ट्रखुशी से झूम उठता है। वहीं दूसरी ओर यदि भारत पर आतंकी हमले से हमारे सैनिक शहीद होते हों, या किसी स्तर पर भारत की हानि होती है। जैसे कश्मीर में हमारे वीर सैनिकों की शहादत से सम्पूर्ण भारतवर्ष को गमगीन कर देना, सभी देशवासियों की आंखों को नम कर देना, राष्ट्रीयभाव जागृत कर देता है। पूरा देश मिलकर 'बदला लेकर रहेंगे' की भावना और इच्छा यही एक संस्कार 130 करोड़ देशवासियों में राष्ट्रीय भाव जागृत करता है। नई पीढ़ी में जीवन संघर्ष से जूझने की क्षमता का निर्माण करना, उसमें सेवावृति की भावना पैदा करना, सिंह जैसा साहस पैदा करना व धर्म के महान सत्यों की अवधारणा पैदा करना जैसे संस्कार पैदा करके राष्ट्रीयभाव जागृत किया जा सकता है। भारतवर्ष के वैज्ञानिक आज नाभिकीय शक्ति, मिसाइल, चन्द्रमा व मंगल ग्रह पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर भारत के युवाओं के मानस में संस्कार पैदा करके राष्ट्रीयभाव का जागरण करने में सक्षम है वहीं राजनैतिक व आर्थिक स्तर पर अग्रणी राष्ट्रों के समूह में अपने देश को सम्मिलित करने के लिए बुद्धिजीवी प्रयासरत हैं। हमारे ऋषियों ने हजारों साल पहले ही 'राष्ट्र' की एक बड़ी दार्शनिक 'आधारशिला' रखी थी। वह आधारशिला ऋषियों की 'भद्र-इच्छा' के संस्कार के कारण बनी है जिसने भारत के जन मानस में राष्ट्रीय भाव जागृत किया है। भारतीय दर्शन के अनुसार महान तत्वदर्शी लोगों की 'लोक-कल्याणकारी इच्छा' से राष्ट्रका निर्माण होता है।

जो लोग इस 'राष्ट्र-तत्व में दीक्षित हैं, इस के प्रति जिनका समर्पण है तथा जिनका 'विश्व-कल्याण' का संकल्प है वे ही एक ऐसे 'राष्ट्रका निर्माण संस्कारों के माध्यम से करते हैं। अथर्ववेद में जब ऋषि लोग संस्कारों के उदभव और विकास के बारे में कहते हैं तब राष्ट्र केबारे में वे कल्पना करते हैं, यह ध्यान देने योग्य है। उनके अनुसार यह 'राष्ट्र-तत्व' सारी राज्य-व्यवस्थाओं, सारी भाषाओं तथा सभी सम्प्रदायों के भावों से ऊपर है।

इन्हीं संस्कारों से आज भारतीय समाज में राष्ट्रीय भाव जागृत हुआ, जिसे बनाए रखने हेतु हमें मिलकर प्रयास करना होगा। ◆◆◆

HRTC ड्राईवर यूनियन की

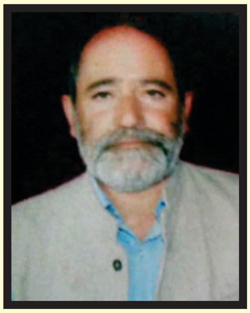

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

सत्य प्रकाश शर्मा
प्रांतीय प्रधान

मान सिंह ठाकुर
प्रांत अध्यक्ष

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

RAJESH KUMAR
GOVT. CONTRACTOR

VILLAGE ANDROLI, PO GHANAGU GHAT,
TEH. ARKI, DISTT. SOLAN H.P. (171102)

... राकेश सैन

राजनीतिक हित साधने में आपसी सम्मान की अवहेलना अनुचित

अर्थात् हम सौ और पांच नहीं एक सौ पांच हैं। अपने मुखिया की कन्या से दुर्व्यवहार के बाद गंधर्वों द्वारा दुर्योधन को बंदी बनाए जाने का समाचार सुनते ही धर्मराज युधिष्ठिर अपने अनुज भीम को उसे मुक्त करवाने का आदेश देते हैं। कौरवों की दुष्टता का संदर्भ देते हुए भीम जब गांधारी नंदन दुर्योधन के प्रति इस उदारता का औचित्य पूछते हैं तो कुंतिश्रेष्ठ कहते हैं 'वयं पंचाधिक शतम्' हम एक सौ पांच हैं अर्थात् परिवार में कितने भी आपसी मतभेद हों परंतु बाहर के लोगों के लिए वे एक ही हैं। पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान स्थित आतंकी अड्डों पर हुई एयर स्ट्राईक के बाद देश का राजनीतिक वर्ग जिस तरह बंटा हुआ नजर आ रहा है वह केवल दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं बल्कि आतंकवाद व दुशमन देश के खिलाफ हमारी लड़ाई को कमजोर करने वाला भी है। एयर स्ट्राईक के बाद पहले तो देश के सभी राजनीतिक दल सरकार के साथ एक सुर में बोलते दिखे परंतु जल्द ही गाते-गाते चिल्लाने की मुद्रा में आ गए। विचित्र विरोधाभास है कि आतंक के खिलाफ पूरी दुनिया भारत के साथ खड़ी है परंतु भारत आंतरिक तौर पर अपने आप से लड़ता नजर आ रहा है।

जैसा कि वायुसेना प्रमुख एयर मार्शल बीएस धनोआ व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कह चुके हैं और सीमा पार से संकेत भी मिले हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई अभी जारी है। परंतु बिना अंदरूनी एकता के इसे जीत पाना बहुत मुश्किल होगा। एयर स्ट्राईक के बाद कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने ट्वीट कर इस कार्रवाई की सराहना की और सेना का अभिनंदन किया परंतु कुछ समय बाद ही उनकी जुबान उस समय फिर गई जब उन्होंने 21 विपक्षी दलों की बैठक के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर सेना के राजनीतिकरण के आरोप मढ़े। विपक्ष का आरोप है कि प्रधानमंत्री अपनी रैलियों में सेना की सफलता को अपनी बता रहे हैं और इसका चुनावी लाभ लेना चाहते हैं। सेना पर गौरव जताना, आतंकवाद व बदनीयत पड़ोसी को चेतावनी देना सेना का राजनीतिकरण कैसे हो गया। यह समझ से परे की बात है। ऐसा करके मोदी अपने संवैधानिक दायित्व का ही पालन कर रहे हैं।

क्या संकट की घड़ी में सेना के साथ खड़ा होना उसका राजनीतिकरण माना जाना चाहिए? पुलवामा हमले, सेना की जवाबी कार्रवाई व इसके बाद भारत को मिली विश्व भर में कूटनीतिक जीत से देशभर में राष्ट्रभक्ति का ज्वार है। लोग स्वस्फूर्त रूप से इसका प्रदर्शन भी कर रहे हैं, जगह-जगह हो रहे प्रदर्शनों में भारत माता की जय, वंदेमातरम् के जयघोष लग रहे हैं तो इससे विपक्ष में घबराहट क्यों फैल रही है? कांग्रेस इस तरह के नारे लगाने वाले को अपना विरोधी मानती है तो उसका या तो वैचारिक दिवालियापन है या अतीत में की हुई भूलें व अपराध, जो देशभक्ति के दर्पण में उसे डराने लगे हैं। राहुल गांधी जब जेएनयू में टुकड़े-टुकड़ेवादी लोगों के साथ खड़े होंगे और धर्मनिरपेक्षता की आड़ में कांग्रेस वंदेमातरम् के विरोध्यिों का साथ देगी तो देशभक्ति के नारे स्वाभाविक तौर पर पार्टी को डराएंगे ही। ये नारे लगाने वाले अपने विरोधी ही तो लगेंगे। इस हालत में कांग्रेस को दूसरों पर कीचड़ उछालने की बजाय अपनी पीढ़ी के नीचे मूसल घुमा कर देखना चाहिए। सेना को लेकर राजनीतिक घमासान की आग तो राहुल गांधी ने लगाई परंतु इसको प्रचंड रूप देने का काम किया दिग्विजय सिंह ने। जिन्होंने न केवल पाकिस्तान के बालाकोट में हुई एयर स्ट्राईक के न केवल सबूत मांगे बल्कि पुलवामा में हुए आतंकी हमले को दुर्घटना भी बता दिया। कांग्रेस हाईकमान को सावधान हो जाना चाहिए, क्योंकि यह वही दिग्विजय सिंह हैं जो मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले खुद ही स्वीकार कर चुके हैं कि वे जब-जब बोलते हैं तब-तब कोंग्रेस के वोट कटते हैं।

उनका यह आत्मज्ञान सही भी साबित हुआ है क्योंकि विधानसभा चुनाव में वह मौन रहे तो मध्य प्रदेश में कांग्रेस पार्टी को जीत भी मिल गई। अब फिर उनका श्रीमुख खुल गया है, कांग्रेस को अपनी खैर मनानी चाहिए। कांग्रेस को ज्यादा चिंतित इसलिए भी होना चाहिए कि

यह ठीक है कि दुश्मन के साथ सेना ही लड़ती है, खेत में हल किसान ही चलाता है, उद्योगों को उद्योगपति संचालित करते हैं और प्रशासनिक कामों को अधिकारी ही अंजाम देते हैं परंतु इनकी सफलता या असफलता के लिए राजनीतिक नेतृत्व ही जिम्मेवार माना जाता है। कांग्रेस क्यों भूलती है कि 1971 के भारत-पाक युद्ध में जीत का श्रेय तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को मिला था और सदन में सभी ने खड़े हो कर उनका अभिनंदन किया था। उस समय भी तो सेना ही लड़ी थी, श्रीमती गांधी या कोई कांग्रेसी नेता तोप या टैंक लेकर सीमा पर नहीं गए थे।

उसकी पनौती दशानन का रूप धर रही है। पहले तो नाव में छेद करने का काम केवल दिग्गी राजा की जुबान से ही होता था। अब तो उनकी पार्टी के बुद्धिजीवी शशि थरूर, पी. चिदंबरम, वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल और पंजाब के धुरंधर वक्ता नवजोत सिंह सिद्धू का भी साथ मिल चुका है। यानि हर शाख पर दिग्विजय बैठे दिखने लगे हैं। जैसे पुलवामा हमले को राजनीति से नहीं जोड़ा जा सकता परंतु यह तथ्य भी उतना ही सत्य है कि आतंकवाद फैलाने के साथ-साथ इसका एक उद्देश्य राजनीतिक भी है। जैसा कि सभी जानते हैं कि देश विरोधी ताकतों, आतंकी संगठनों व जिहादी तंजीमों को सेना फूटी आंख नहीं सुहाते। हमले का समय चुनने वाली देश विरोधी ताकतें इसके जरिए मोदी को राजनीतिक रूप से भी कमजोर करना चाहती थीं।

इसका एक उद्देश्य यह भी था कि चुनावों के समय हमला कर मोदी सरकार को आतंकवाद, पाकिस्तान, कश्मीर के मोर्चों पर असफल साबित किया जाए परंतु प्रधानमंत्री ने कड़ा कदम उठा कर पूरे खेल को उलट दिया। प्रधानमंत्री का यह पूछना भी सही है कि अगर एयर स्ट्राईक में थोड़ी चूक हो जाती या भारत को थोड़ी सी भी असफलता हाथ लगती तो क्या विपक्ष इसके लिए उनसे इस्तीफे की मांग नहीं करता? स्वाभाविक तौर पर व्रोधी ऐसा करते और यह करने का उन्हें अधिकार भी होता। यह ठीक है कि दुश्मन के साथ सेना ही लड़ती है, खेत में हल किसान ही चलाता है, उद्योगों को उद्योगपति संचालित करते हैं और प्रशासनिक कामों को अधिकारी ही अंजाम देते हैं परंतु इनकी सफलता या असफलता के लिए राजनीतिक नेतृत्व ही जिम्मेवार माना जाता है। कांग्रेस क्यों भूलती है कि 1971 के भारत-पाक युद्ध में जीत का श्रेय तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को मिला था और सदन में सभी ने खड़े हो कर उनका अभिनंदन किया था। उस समय भी तो सेना ही लड़ी थी, श्रीमती गांधी या कोई कांग्रेसी नेता तोप या टैंक लेकर सीमा पर नहीं गए थे। आज सेना की सफलता का श्रेय देश की जनता वर्तमान नेतृत्व की दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति को दे रही है तो कांग्रेस को लोकतंत्र की इस रीत को खुले मन से स्वीकार करना चाहिए न कि सत्ताधारी दल को छोटा साबित करने के लिए सेना के शौर्य पर ही सवालिया निशान लगाए जाने चाहिए। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई जारी है और अभी सैन्य अभियान भी जारी हैं।

ऐसे में हमारी तरफ से दिखाई जाने वाली थोड़ी सी भी नासमझी अलग-थलग पड़े दुश्मन देश पाकिस्तान के लिए ऑक्सीजन का काम करेगी। समय देश, सेना व सरकार के साथ एकजुटता दिखाने का और वयं पंचाधिक शतम् के महावाक्य को व्यवहार में लाने का है न कि क्षुद्र राजनीतिक हित साधने का। ◆◆◆

पाकिस्तान में पहली हिन्दू महिला जज बनीं सुमन

कब

सुमन कुमारी ने पाकिस्तान में इतिहास रच दिया है। पाकिस्तान में पहली बार कोई हिंदू महिला जज बनी है। सुमन को कम्बर-शाहदकोट के दीवानी न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। गौरतलब है कि पाकिस्तान में केवल दो फीसदी ही हिंदुओं की आबादी है। उन्होंने हैदराबाद से एलएलबी की पढ़ाई की है। सुमन ने इस परीक्षा की मैरिट लिस्ट में 54वां स्थान हासिल किया। उनके पिता ने कहा कि सुमन ने एक चुनौतीपूर्ण पेशा चुना है, लेकिन मुझे विश्वास है कि वह कड़ी मेहनत और ईमानदारी से ऊंचा मुकाम हासिल करेंगी। सुमन के पिता नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं। सुमन गायक लता मंगेशकर की प्रशंसक हैं। गौरतलब है कि जस्टिस राना भगवानदास पाकिस्तान में हिंदू समुदाय से पहले जज के रूप में नियुक्त हुए थे। वहीं मार्च 2018 में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की नेता कृष्णा कुमारी ने संसद का चुनाव जीता था। ◆◆◆

सम्पादक के नाम पत्र लेखन सूचना

प्रतिमाह सम्पादक के नाम सर्वश्रेष्ठ पत्र लिखने वाले पाठक को मातृवन्दना संस्थान की ओर से 500 रुपये पुरस्कार राशि या प्रभात प्रकाशन दिल्ली से उपर्युक्त राशि की पुस्तकें भेंट की जाएंगी।

बनें नागरिक पत्रकार

अपने क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी/घटना आप पाठकों से साझा करना चाहते हैं तो मातृवन्दना कार्यालय को अवश्य अवगत करवाएं। हम उसको अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

ईमानदारी ही सर्वोच्च नीति है।

... नीतू वर्मा

संविधान द्वारा दी गई शक्तियों का दुरूपयोग आज लोगों में आम बात है। भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए सरकारी कार्यों का कंप्यूटरीकरण करने व सीसीटीवी कैमरे जैसे कई आधुनिक उपकरणों के उपयोग के बावजूद रिश्वत जैसी बीमारियों का कोई इलाज नहीं हो पा रहा है।

नैतिकता, ईमानदारी, सहभागिता व समरसता ऐसी धारणाएं हैं जिनकी व्यावहारिकता पिछले कुछ दशकों में निरंतर विलुप्त होती जा रही है। आर्थिक विकास की अंधी दौड़ व भौतिकतावाद के व्याप में ये शब्द कहीं खो से गए हैं। नए आर्थिक सुधारों के फलस्वरूप जहां लोगों की आय व राष्ट्र की आर्थिकी में सुधार हुआ है, वहीं यदि हम अपने देश के नागरिकों के व्यवहार व विचार को देखें तो इसमें जिस प्रकार का पतन हुआ है वह अकल्पनीय है। दूसरों के प्रति गैर संवेदनशीलता, अपने निजी हितों को सर्वोपरि और बिना नैतिकता के विकास की यह अंधी दौड़ राष्ट्रको कमजोरी की तरफ धकेल रही है। ऐसा नहीं है कि ईमानदारी व राष्ट्रनिर्माण दो पृथक धारणाएं हैं, वरना पिछले कुछ समय में जिस प्रकार से हमारे मूल्यों का पतन हुआ है उससे यह जान पड़ता है कि दोनों धारणाएं न केवल जुड़ी हैं वरन एक दूसरे के विरोध में खड़ी हैं। वैश्वीकरण व भौतिकतावाद की अन्धीदौड़ में हर कोई अपने नैतिक व भ्रष्टचारी आचरण को विकास के लिए आवश्यक मानता नजर आता है। यही कारण है कि जो व्यक्ति ईमानदारी, शुचिता व नैतिकता से जीवन बसर करने की कोशिश करता है, वह इस दौड़ में पिछड़ता जाता है। परन्तु यहां एक प्रश्न का उठना अवश्यंभावी है। प्रश्न यह कि जिसे हम राष्ट्रनिर्माण कह रहे हैं क्या वह सही मायनों में राष्ट्रनिर्माण है या मात्र खोखली दीवार स्वरूप एक राष्ट्रजो हल्की सी चोट करने पर भी चूर-चूर हो जाए।

यदि हम विकसित देशों के आर्थिक विकास व वहां के लोगों के आचरण की तुलना अपने देश वासियों से करें तो उन देशों के नागरिकों के व्यवहार व आचरण में नैतिकता व ईमानदारी हमारे देश से कहीं अधिक जान पड़ती है। हम जिस विकास व राष्ट्रनिर्माण की संज्ञा देकर आगे बढ़ रहे हैं वह आधारभूत रूप से एक गलत धारणा है। सदाचार, ईमानदारी, आर्थिक विकास व राष्ट्रनिर्माण को एक साथ एक ही दिशा में चरितार्थ करने के लिए एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ती है। परन्तु हमारे देश में ऐसा होता जान नहीं पड़ता क्योंकि हम अल्पावधि में बिना त्याग किये सब कुछ हासिल करना चाहते हैं। निजि हितों की सर्वोपरिता के चलते और किसी भी कीमत पर जल्द से जल्द सफलता हासिल करने की प्रवृत्ति के चलते हमारे राष्ट्रने ईमानदारी व नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे दी है। जिस कारण राष्ट्रनिर्माण की जिस धारणा को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं वह एक खोखली धारणा

है और दीर्घकाल में यह राष्ट्र के पतन का कारण बन सकती है।

देश के विकास पर नजर दौड़ाएं तो देश दो भागों में बंटा नजर आता है। एक भाग वह जिसमें वे लोग आते हैं जो आर्थिक व सामाजिक रूप से सक्षम हैं तथा दूसरा बड़ा भाग उन लोगों का है। जो आधारभूत सुविधाओं से भी वंचित हैं। जो सक्षम हैं यदि उनके विचारों व आचरण को देखें तो पाएंगे कि वे राष्ट्र निर्माण के प्रति या तो अनभिज्ञ हैं या असंवेदनशील हैं। इस वर्ग के विचारों व उनकी कार्य शैली को देखा जाए तो एक विरोधाभास साफ नजर आता है। राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक योगदान जैसे ईमानदारी से कर देना, देश के प्रति संवेदनशीलता, अक्षमवर्ग के उत्थान में योगदान इत्यादि से

यदि हम विकसित देशों के आर्थिक विकास व वहां के लोगों के आचरण की तुलना अपने देश वासियों से करें तो उन देशों के नागरिकों के व्यवहार व आचरण में नैतिकता व ईमानदारी हमारे देश से कहीं अधिक जान पड़ती है। हम जिस विकास व राष्ट्र निर्माण की संज्ञा देकर आगे बढ़ रहे हैं वह आधारभूत रूप से एक गलत धारणा है। सदाचार, ईमानदारी, आर्थिक विकास व राष्ट निर्माण को एक साथ एक ही दिशा में चरितार्थ करने के लिए एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ती है। परन्तु हमारे देश में ऐसा होता जान नहीं पड़ता क्योंकि हम अल्पावधि में बिना त्याग किये सब कुछ हासिल करना चाहते हैं। निजि हितों की सर्वोपरिता के चलते और किसी भी कीमत पर जल्द से जल्द सफलता हासिल करने की प्रवृत्ति के चलते हमारे राष्ट्र ने ईमानदारी व नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे दी है। जिस कारण राष्ट्र निर्माण की जिस धारणा को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं वह एक खोखली धारणा है और दीर्घकाल में यह राष्ट्र के पतन का कारण बन सकती है।

वे कन्नी काटते नजर आते हैं। धनाढ्य लोगों की संख्या जिस गति व अनुपात से बढ़ी है, उसी अनुपात में यदि ईमानदारी का पतन न होता तो आज देश में भ्रष्टाचार, चोरबाजारी व नैतिक मूल्यों का पतन भी न होता। हमारे देश में भ्रष्टाचार का इतिहास बहुत पुराना है। आजादी के पूर्व अंग्रेजों ने सुविधाएं प्राप्त करने के लिए भारत के सम्पन्न लोगों को सुविधा स्वरूप धन देना प्रारंभ किया। राजे-रजवाड़े और साहूकारों को धन देकर उनसे वे सब प्राप्त कर लेते थे, जो उन्हें चाहिए था। अंग्रेज भारत के धनाढ्य लोगों को धन देकर अपने ही देश के साथ गद्दारी करने के लिए कहा करते थे और ये रईस ऐसा ही करते थे। यह भ्रष्टाचार वहीं से प्रारम्भ हुआ और तब से आज तक लगातार चलते हुए फलफूल रहा है। 'बाबरनामा' में उल्लेख है कि कैसे मुट्ठीभर बाहरी हमलावर भारत की सड़कों से गुजरते थे। सड़क के दोनों ओर लाखों की संख्या मे खड़े लोग मूकदर्शक बन कर तमाशा देखते थे। यह मूकदर्शक बनी भीड़, अगर हमलावरों पर टूट पड़ती, तो भारत के हालात भिन्न होते।

संविधान द्वारा दी गई शक्तियों का दुरूपयोग आज लोगों में आम बात है। भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए सरकारी कार्यों का कंप्यूटरीकरण करने व सीसीटीवी कैमरे जैसे कई आधुनिक उपकरणों के उपयोग के बावजूद रिश्वत जैसी बीमारियों का कोई इलाज नहीं हो पा रहा है। एक चपरासी से लेकर प्रशासनिक अधिकारियों तक भ्रष्टाचार के आरोप लगने की खबरें आए दिन सुर्खियों में रहती हैं। देश में लुप्त होती ईमानदारी के लिए मात्र सरकारी विभागों और अफसरों को दोष देना भी तर्क संगत नहीं जान पड़ता। जनता स्वयं अपना काम निकालने के लिए अधिकारियों को धन, उपहार या अन्य किसी रूप में रिश्वत की पेशकश करने में शामिल रहती है। अपना काम निकालने के लिए व्यक्ति किसी भी हद तक झूठ, अनैतिकता का रास्ता अख्तियार करने से गुरेज नहीं करता। राष्ट्र के प्रति निष्ठा का अभाव एवं राष्ट्रभावना की कमी निश्चय से इस प्रवृति को और अधिक बढ़ावा दे रही है।

ईमानदारी राष्ट्र के उत्कर्ष का साधन है तो भ्रष्टाचार हमारे जीवन के नैतिक मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। यह एक लाईलाज बीमारी की तरह है जो समाज में विभिन्न स्तरों पर व्याप्त है। राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है कि लोग दूसरों को बोलने की बजाय स्वयं में ईमानदारी विकसित करे। भ्रष्टाचार की स्थिति आज ऐसी है कि जो व्यक्ति रिश्वत के मामले में पकड़ा जाता है, वह रिश्वत देकर ही छूटता है। कोई भी कार्य वह व्यापार हो या नौकरी यदि पूर्ण निष्ठा, सच्चाई व ईमानदारी से करने पर वह स्वयं के विकास के साथ-साथ राष्ट्र के विकास में भी कारगर सिद्ध होगा। एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत की नींव रखने के लिए आवश्यक है कि जमीनी स्तर से इसकी शुरूआत की जाए। सर्वप्रथम अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठ होना अत्यावश्यक है। हमारा हर कर्म जब राष्ट्र के निमित्त होगा तो निश्चय से हम भ्रष्टाचार जैसी बुराई को नहीं अपनाएंगे। पूर्व राष्ट्रपति 'एपीजे अब्दुल कलाम' ने कहा था कि, 'यदि किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है तो समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं, माता-पिता और गुरू। माता-पिता और शिक्षक आज जो करते हैं उससे कल के भारत का निर्माण होता है इसलिए यह आवश्यक है कि वे बच्चों को उच्चतम नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाएं।' देश की बागडोर शिक्षित व ईमानदार लोगों के हाथों में हो साथ ही स्पष्टवादी एवं स्वच्छ छवि वाले लोगों को ही राजनीति में आने की अनुमति हो तो अवश्य ही देश की तस्वीर व तकदीर बदली जा सकती है। शिक्षित व ईमानदार व्यक्ति की बदौलत ही कोई भी राष्ट्रनव निर्माण की ओर अग्रसर हो सकता है। ◆◆◆

आधुनिकता बनाम पश्चिमी अन्धानुकरण

... डॉ. मधुजी पोद्दार

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहां धर्म का अर्थ किसी मत, पन्थ या सम्प्रदाय से नहीं है। धर्म का अर्थ है जो धारण करने योग्य है, जिसे धारण किया जा सके, जिसे धारण करने से समाज संगठित होकर सुचारू रूप से चल सके- 'धारणाद् धर्म मित्याहु:', शास्त्रों में धर्म के दस लक्षण कहे गए हैं; जैसे-

धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं
शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं
धर्मलक्षणम्॥

धर्म से ही किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति का विकास होता है और उस देश की पहचान वहां की संस्कृति से होती है। सभ्यता का अर्थ है भौतिक विकास, जबकि संस्कृति का अर्थ है उस देश में रहने वाले लोगों की आध्यात्मिक सोच, चिन्तन, मान्यताएं, परम्पराएं एवं संस्कार और उन संस्कारों पर आधारित जीवनशैली। पश्चिमी देशों की संस्कृति भोगयुक्त एवं भौतिकता प्रधान रही है, जबकि भारत की संस्कृति वैराग्य, त्याग एवं आध्यात्मिकता प्रधान है। भारतीय चिन्तन में आत्मिक अभ्युदय को विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही वैदिक ज्ञान पर आधारित रही है, जिसमें स्व के बारे में न सोचकर पूरी मानवजाति के कल्याण के बारे में सोचा गया है- पूरी धरती को एक कुटुम्ब माना गया है- 'वसुधैव कुटुम्बकम्'।

शरीर को नाशवान् एवं आत्मा को अमर माना गया है। भारतीय चिन्तन के अनुसार शरीर को भोगों से अस्थायी सुख मिलता है, जबकि अध्यात्म से स्थायी शान्ति। वेदों पर आधारित इस चिन्तन में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद और योगासन को अपनाया गया तो मानसिक विकास के लिए प्राणायाम, ध्यान, तप, समाधि एवं भक्ति को। माता-पिता, गुरू तथा अतिथि को देवरूप समझकर पूज्य माना गया है, प्रकृति के विभिन्न रूपों जैसे-नदियों, पर्वतों एवं वृक्षों में देवत्व की प्रतिष्ठा की गई है। गो इत्यादि भी पूज्य हैं। मानव 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धान्त से अनुप्राणित था। शासन भी धर्म पर आधारित रहा है। इसी वजह से भारत सदा से विश्वगुरू रहा और भारत की संस्कृति सदियों से आमिट रही। पर यह हमारा दुर्भाग्य है, आज जब विश्व के अनेक देशों में भारतीय दर्शन, चिन्तन, संस्कृति, वेद, ज्ञान, आयुर्वेद तथा योग इत्यादि को अपनाया जा रहा है। भारत में इसे काल्पनिक, असत्य, अवैज्ञानिक तथा रूढ़िवादी कहकर तिरस्कृत किया जा रहा है। यह एक अजीब विडम्बना है कि आज भारत में भौतिकताप्रधान पश्चिमी जीवन शैली का अन्धानुकरण हो रहा है। प्राचीन भारतीय ज्ञान पर पश्चिम की मोहर लगने के बाद उसे सत्य, वैज्ञानिक तथा आधुनिक कह कर गर्व के साथ अनुसरण किया जा रहा है। योग से योगा, आयुर्वेद से आयुर्वेदा होने पर हम उसे सही मान रहे हैं। यह हमारी वैचारिक दुर्बलता ही है।

आधुनिकता के नाम पर हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना कर रहे हैं। संस्कारों की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अन्धानुकरण से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियां, शिक्षा पद्धति में बदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियां और पाश्चात्य रहन-सहन से अनेक सामाजिक कुरीतियां उत्पन्न हो गई हैं। सर्वप्रथम अगर हम अपनी आहार प्रणाली में बदलाव तथा उससे उत्पन्न समस्याओं पर विचार करें तो पाते हैं कि प्राचीन काल में जब हम वैदिक संस्कृति एवं अपनी शारीरिक संरचना जो शाकाहार के अनुकूल है, उसके आधार पर दूध, तेल, दाल, अनाज, सब्जी, फल इत्यादि का सन्तुलित शाकाहारी भोजन लेते थे तो स्वस्थ और दीर्घायु होते थे, परंतु जैसे-जैसे मानव ने तथाकथित वैज्ञानिक दुष्प्रचारों के आधार पर पश्चिम का अन्धानुकरण करके मांसाहार लेना शुरू किया, वह अनेक रोगों से ग्रस्त हो गया।

इसी तरह पश्चिमी देशों ने मीडिया की मदद से हमारे परम्परागत भोजन को वसा युक्त एवं हानिकारक तथा पिज्जा, बर्गर एवं डिब्बा-बंद भोजन को आधुनिक

तथा पौष्टिक बताकर प्रचारित कर दिया, जिसे हमारे देश में फास्टफूड संस्कृति को बढ़ावा मिला। आज उसके दुष्परिणाम स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे हैं; क्योंकि इसी फास्टफूड की वजह से लोगों में बचपन से ही मोटापा बढ़ रहा है, जो डायबिटीज, उच्च रक्तचाप तथा हृदयरोग- जैसी घातक बीमारियों के लिए जिम्मेदार है। साथ ही यह एनीमिया तथा कुपोषण भी बढ़ा रहा है। आज हम इन्हीं विदेशी कम्पनियों के माया जाल से प्रभावित होकर अपने परम्परागत पेय पदार्थों (लस्सी, शरबत इत्यादि)को छोड़कर पेप्सी, कोक और मिनरल वाटर इत्यादि का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो ही रही है, साथ ही आंतों तथा हड्डियों की बीमारियां, दमा और एसिडिटी-जैसी बीमारियां भी बढ़ती जा रही हैं। विभिन्न शोधों ने यह साबित कर दिया है कि पेप्सी एवं कोक आदि में इतना अधिक एसिड है, जिसमें हड्डी तक घुल सकती है तो फिर अमाशय और आंतों का तो कहना ही क्या! पश्चिमी अन्धानुकरण और आधुनिकीकरण के नाम पर शराब की बढ़ी प्रवृति ने पेट, आमाशय, मूत्राशय इत्यादि के अल्सर एवं कैंसर जैसे रोगों में बढ़ोत्तरी के साथ दुर्घटनाओं एवं उससे उत्पन्न विकलांगता की घटनाओं में भी वृद्धि कर दी है।

अपनी प्राचीन संस्कृति के आधार पर हम प्रात: सूर्योदय से पहले उठकर शौच तथा स्नान से निवृत होकर सन्ध्या-वन्दन इत्यादि के अनन्तर प्रात:-भ्रमण पर जाते थे, प्राणायाम और योगासन करके अपने शरीर तथा मन को स्वस्थ एवं शान्त रखते थे, भोजन स्वच्छ रसोई में शान्तचित्त से आसन पर बैठकर ग्रहण करते थे, रोज की दिनचर्या को ईमानदारी, सच्चाई इत्यादि के आधार पर चलाते थे और हमारा पहनावा हमारे देश की संस्कृति तथा पर्यावरण के अनुकूल होता था। हमारी शिक्षा गुरूकुल में वैदिक ज्ञान के आधार पर होती थी। हमारे पर्व और उत्सव एकता एवं भाईचारे के संदेश के साथ पारम्परिक रूप से मनाए जाते थे। परंतु आज पश्चिम की भौतिकतावादी संस्कृति के वशीभूत होकर आधुनिकता की अन्धी दौड़ में हम अपनी प्राचीन संस्कृति तथा परम्पराओं की राह से भटक कर एवं पश्चिमी दुष्प्रचार से प्रभावित होकर अपनी जीवन शैली में बदलाव करके विभिन्न समस्याओं को आमन्त्रित कर रहे हैं।

आज हमारे पर्वों और उत्सवों एवं संस्कारों में बाजारीकरण हावी हो गया है और पश्चिमी त्यौहार, जैसे कि वैलेंटाइन डे, मदर्स डे इत्यादि को बड़ी धूमधाम से बनाया जा रहा है। पहले जन्मदिन पर माता-पिता दीपक जलाकर, भगवान् की पूजाकर बच्चे को आशीर्वाद देते थे पर अब पश्चिमी संस्कृति की नकल कर केक काटते हैं तथा दीया जलाने के स्थान पर मोमबत्ती बुझाते हैं।

शिक्षा पद्धति में आए बदलाव से तो अनेक सामाजिक समस्याएं पैदा हो रही हैं। पहले गुरूकुल में विभिन्नि वर्गों के बालकों को एक रूप से-एक परिवार की भांति, वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार वैदिक शिक्षा दी जाती थी। जबकि आज मैकाले-शिक्षा पद्धति ने ऐसे संस्कार पैदा कर दिए हैं, जो अपनी भारतीय संस्कृति, वेदों, पुराणों इत्यादि को रूढ़िवादी, काल्पनिक तथा अवैज्ञानिक कहकर तिरस्कृत कर रहे हैं। आज की शिक्षा से बेरोजगारी बढ़ रही है। सहनशीलता कम हो रही है। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिससे बच्चे रिश्तों तथा सम्बन्धों की अहमियत को भूल रहे हैं उनमें स्वार्थ, अकेले रहने की आदत, चिड़चिड़ापन, अवसाद जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। आज के रिश्तों को भी धन के तराजू पर तौलते हैं एवं बूढ़े मां-बाप या रिश्तेदारों को बोझ समझने लगे हैं। इसलिए अब समाज धन को सर्वोपरि मानते हुए बेईमानी तथा भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहा है।

चरित्रिक पतन हो रहा है। हिंसा बलात्कार, अपहरण इत्यिादि की घटनाएं बढ़ रही हैं। पहले चरित्र को धन तथा स्वास्थ्य से ऊपर स्थान दिया जाता था, जबकी आज की सोच और मानसिकता में चरित्र नाम की कोई भी वस्तु नहीं रह गई है। इन सब बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्कता है। अपनी संस्कार-सम्पन्न गौरवमयी सुदीर्घ परम्परा को अपनाना होगा और तदनुकूल आचरण करके पुन: विश्व के समक्ष एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करना होगा। ◆◆◆

मातृवन्दना के समस्त पाठकों को विक्रमी संवत् भारतीय नववर्ष 2076 की हार्दिक शुभकामनाएं

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

भारत की आत्मा है
गोमाता

... मीनाक्षी सूद

गो समस्त प्राणियों की परम श्रेष्ठ शरण्य है, यह सम्पूर्ण विश्व की माता है- 'सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्', 'गावो विश्वस्य मातरः।' यह निखिला-आगम निगम प्रतिपाद्य सर्व वन्दनीय एवं अमित शक्ति प्रदायिनी दिव्य स्वरूपा है। कोटि-कोटि देवताओं की दिव्य अधिष्ठान है। इसकी पूजा समस्त देवताओं की पूजा है। इसका निरादर समस्त देवताओं का निरादर है। यह भारतीय संतति की प्रतीक स्वरूपा है। परम दिव्यामृत को देने वाली सकल हित कारिणी तथा सम्पूर्ण विश्व का पोषण करने वाली है। इसी आराधना से सकल देववृन्द एवं विश्व नियन्ता भगवान् श्री सर्वेश्वर अतिशय प्रसन्न होते हैं। तभी तो वे ब्रजराज किशोर 'गोपाल' एवं 'गोविन्द' बनकर ब्रज के वनोपवनों में, गिरिराज के मनोरम वनोपवनों में तथा कालिन्दी के कमनीय कूलों पर नंगे चरणों असंख्य गो समूह के पृष्ठ भाग में अनुगमन करते हुए उनकी सेवा-निरत रहा करते थे। अग्निपुराण (292/18) में कहा गया है-

गावः पवित्रं परमं गावो
माङ्गल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो
धन्याः सनातनाः॥

'गायें परम पवित्र, परम मंगलमयी, स्वर्ग की सोपान, सनातन एवं धन्य स्वरूपा हैं।' 'गो-रूपी तीर्थ में गंगा आदि सभी नदियों तथा तीर्थों का आवास है, उसकी परम पावन धूलि में पुष्टि विद्यमान है, उसके गोमय में साक्षात् लक्ष्मी है तथा इन्हें प्रणाम करने में धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करने योग्य है।' शास्त्रों में स्थल-स्थल पर गो की गरिमा, महिमा एवं सर्वोपादेयता निर्दिष्ट की गई है। गो का दर्शन, स्पर्श और अर्चन परम पुण्यमय है। गाय के स्पर्श मात्र से आयु बढ़ती है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को महाभारत के अनुशासन-पर्व (51/27, 32) में इस प्रकार उपदेश किया है-

'गोमाता की पुण्यमयी महिमा का कीर्तन, श्रवण, दर्शन एवं उसका दान सम्पूर्ण पापों को दूर करता है। निर्भय होकर जिस भूमि पर गाय श्वास लेती है, वह परम शोभामयी है, वहां से पाप पलायित हो जाता है।' 'अनडुहः श्रियं पुष्टां गोदो ब्रध्नस्य विष्टपम्।' अर्थात् 'बैल को देने वाला अतुल सम्पत्ति तथा गाय को देने वाला दिव्यातिदिव्य सूर्यलोक को प्राप्त करता है।' जिस भारत के धर्म, संस्कृति और विविध शास्त्र तथा सर्वद्रष्टा तत्वज्ञ ऋषि-मुनियों एवं आप्त महापुरूषों के अनेक उपदेश गोमाता की दिव्य महिमा से ओत-प्रोत हैं, जिस भारत की पुण्य वसुन्धरा सदा-सर्वदा से गो के विमल यश से समग्र विश्व में अपनी दिव्य धवलिमा आलोकित करती आयी है, जिस भारत में अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक, सर्व नियन्ता श्री सर्वेश्वर भी 'गोपाल' बनकर गो महिमा की श्रेष्ठता, सर्व मूर्धन्यता बतलाते हैं, उस पवित्र भारत की दिव्य अवसनि गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत के स्थान पर गोमाता के रक्त से रंजित हो, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आदि सभी दृष्टियों से गोमाता परमोपकारिणी है, इसका विनाश राष्ट्रका विनाश है। वह भारत की अतुलनीय अमूल्य सम्पत्ति है, अतः इसकी रक्षा राष्ट्र की रक्षा है।

प्रत्येक पुण्य की इच्छा रखने वाले सद्गृहस्थ को गायों की सेवा अवश्य करनी चाहिए; क्योंकि जो नित्य श्रद्धा-भक्ति से गायों की प्रयत्न पूर्वक सेवा करता है, उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही वृद्धि को प्राप्त होती है और नित्य वर्धमान रहती है। ◆◆◆ **साभार: कल्याण**

जिस भारत के धर्म, संस्कृति और विविध शास्त्र तथा सर्व द्रष्टा तत्वज्ञ ऋषि-मुनियों एवं आप्त महापुरूषों के अनेक उपदेश गोमाता की दिव्य महिमा से ओत-प्रोत हैं, जिस भारत की पुण्य वसुन्धरा सदा-सर्वदा से गो के विमल यश से समग्र विश्व में अपनी दिव्य धवलिमा आलोकित करती आयी है, जिस भारत में अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक, सर्वनियन्ता श्री सर्वेश्वर भी 'गोपाल' बनकर गो महिमा की श्रेष्ठता, सर्व मूर्धन्यता बतलाते हैं।

Sunita Thakru

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

Shyam Lal

Propritor Avni Enterprises
Service Providing agency
Annadal Shimla, H.P.

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

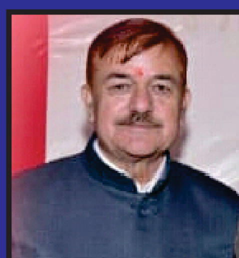

BHAGAT RAM KLET
94180 16551

KBO
BUS SERVICES
MADAOG

गोवंश की रक्षा में ही हम सब की रक्षा है।

... रामऋषि भारद्वाज

भारतीय संविधान के अनुच्छेद-48 में गोवंश के रक्षण, संवर्धन के लिए विशेष कर्तव्य विहित हैं तथा अनु.-51 'छ' में इनके प्रति दया भाव रखने का प्रत्येक नागरिक का दायित्व उल्लिखित है।

शास्त्रों के अनुसार सृष्टि में 84 लाख योनियों के आवागमन के आवृत्त में जीवन जीने का समस्त चराचर को विधाता ने अधिकार दिया हुआ है। जिनमें 4 लाख योनियां मनुष्यों की हैं। इस प्रकार के आवंटन में पृथ्वी पर मनुष्यों को 3.36 प्रतिशत का ही अधिकार है, लेकिन वह स्वयं सर्वाधिकारी बन कर सब पर आधिपत्य जमाकर अन्यों पर अन्याय कर रहा है। क्या यह प्रकृति के साथ मनुष्य का उचित व्यवहार है? मनुष्य सब से बुद्धिमान होते हुए अपने उपभोग के लिए प्रकृति का दोहन कम और लोभवश शोषण ज्यादा कर रहा है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद-48 में गोवंश के रक्षण, संवर्धन के लिए विशेष कर्तव्य विहित हैं तथा अनु.-51 'छ' में इनके प्रति दया भाव रखने का प्रत्येक नागरिक का दायित्व उल्लिखित है। जैसे घर का मुखिया अपने परिवार के पालन-पोषण को कर्तव्य समझ कर करता है, उसी तरह गोवंश को अपने परिवार का सदस्य समझ कर पालन-पोषण व रक्षण करना परिवार का मौलिक कर्तव्य व स्वाभाविक दायित्व है। गोवंश हमारे परिवार का अभिन्न अंग है। रिश्ते में वह हमारी मां है। ऐसी मां का स्थान घर है, गोशाला है। इसे किसी भी स्थिति में बेसहारा नही छोड़ा जा सकता है। प्रत्येक सरकार का दायित्व है कि इस प्रकार परित्यक्त बेसहारा गोवंश को parents patriarch के मूल सिद्धान्त पर राजकीय कोष से व्यय करके रक्षा व सेवा करनी चाहिए, यह वैश्विक मानवीय परोपकारी मान्यता है।

भगवान ने इस संसार में सब प्राणियों की रचना की है और उसकी सब पर बराबर दया है, लेकिन भगवान का मनुष्य पर अतिरिक्त प्रेम होने के साथ उसे विशेष कार्य का आदेश भी है। अतः मनुष्य को इस विशेष अधिकार का प्रयोग करते हुए सब प्राणियों से प्रेम करना चाहिए। गाय एक दिव्य प्राणी है। अपने स्वार्थ के लिए भारतीय गोवंश के साथ अनुचित छेड़-छाड़ कृत्रिम गर्भाधान Genetic Modification कतई नहीं होनी चाहिए। भारतीय गोवंश का दूध इस धरा पर अमृत के समान है। इसमें 6 प्रकार के विटामिन, 8 प्रकार के प्रोटीन, 25 प्रकार के खनिज, 21 प्रकार के एमिनो एसिड, 19 प्रकार के नाईट्रोजन, 8 प्रकार के किण्वन, 4 प्रकार के फॉस्फोरस यौगिक, 2 प्रकार की शर्करा, स्वर्ण तत्व-केरिटिन, कैंसर निरोधी, M.D.G.I, बुद्धि व स्मृति-वर्धक सेरिब्रोसाईड, रेडियो धर्मिता नाशक स्ट्रोनटाईन होता है।

गोमूत्र तो महौषधि है। इसमें गंगा जी का वास है। पहले जब इस प्रकार के आधुनिक चिकित्सालय नहीं थे तो वैद्य इसी गोमूत्र से उपचार करते थे। प्रयोगशाला में जांच से पता चला है कि इसमें पोटाशियम, कैलशियम, मैगनीशियम, फ्लोराइड, यूरिया, फॉस्फोरस, अमोनिया, क्रेटिनीन, अमोनिया-एसिड, लौह तत्व, ताम्र-तत्व, सल्फर, स्वर्णक्षार, लेन्टोज, जल-तत्व विद्यमान होता है। गोबर में धन-लक्ष्मी का वास माना जाता है। इसमें नाईट्रोजन, फॉसफोरस, पोटैशियम, लौह-तत्व, ताम्र-तत्व, जस्ता, मैगनीज, बोरॉन, मोलीविडिनम, बॉरेक्स, कोबाल्ट, सल्फेट, चूना, सोडियम तथा गन्धक होती है। गाय, भगवान की चलती-फिरती करूणा की मूर्त ही नहीं, बल्कि औषधालय भी है। इसलिए हम सब का गोवंश पर विशेष अनुग्रह होना चाहिए। गोवंश को स्वतन्त्र विचरण करने के लिए गोचर भूमि का अधिकार उन्हें मिलना चाहिए। इस प्रकार गोवंश व अन्य चौपायों की 23 लाख योनियों के लिए प्रत्येक भू-भाग पर 19.32 प्रतिशत हिस्सा है इसमें अभ्यारण्य, गोचर भूमि पर मनुष्य का कोई अधिकार नहीं है। हिमाचल प्रदेश में राजस्व अभिलेखानुसार 1518025 हैक्ट. भूमि गोचर, शामलात है यानि 5567300 हैक्ट. भूभाग का 33.04 प्रतिशत है। लेकिन प्रत्यक्ष में देखें तो अकेले हिमाचल में 40 हजार गोवंश अनिकेत होकर सड़कों पर भटक रहा है। भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड ने अपने पत्र संख्या 3.1/2017.18 म्जिजण कंजमक 05.03.2018 द्वारा प्रत्येक राज्य से पूछा है कि 26 जनवरी से 31 दिसम्वर 2017 तक गोचर भूमि की क्या स्थिति है? का ब्यौरा दें। लेकिन अभी तक इसका कोई जवाब नही मिला है। उधर सर्वोच्च न्यायालय का Civil appeal no.1132@SLP(c¼ 3109/2011 में निर्णय है कि गोचर भूमि पर कोई अतिक्रमण नहीं हो सकता है, अगर हुआ हो तो उसे अविलम्ब हटाया जाए। लेकिन इसकी भी अनुपालना नहीं हो रही है। सड़क से संसद तक, जन साधारण से मुख्य मन्त्री तक और हम सब के लिए यह संज्ञानार्थ है।

गोचर भूमि का Land Use and Status किसी भी स्थिति में बदला न जाए। उपाय के रूप में कुछेक उद्घोष मननीय एवं करणीय हो सकते हैं। सरकार द्वारा इस प्रकार के सार्थक नारे अभियान के रूप में सार्वजनिक स्थानों पर सूचना-पटों द्वारा प्रदर्शित किए जाने व्यापक हित में होंगे। 'सारी धरती गाय और गोपाल की, छूट मिली है हमें सही इस्तेमाल की'। ◆◆◆

स्वामी दयानन्द सरस्वती की स्वराज कल्पना

... डॉ. कर्म सिंह

स्वामी दयानन्द ने यह विचार पश्चिम की उस शिक्षा-दीक्षा से नहीं लिया था, चक्रवर्ती राज्य की कामना करते हुए वे कहते हैं-'वयं प्रजापते: राजा अभूम' हम प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा प्रजा हम उसके किंकर भृत्यवत् हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करे और हमारे हाथ से अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावे।' स्वामी दयानन्द के विचारों में उनका राष्ट्रवाद स्पष्ट झलकता है।

स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव के समय भारत माता परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़ी हुई थी। उस समय कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो अंग्रेजों के विरोध में आवाज बुलन्द कर सकता। गुरू विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करके जब स्वामी दयानन्द अपने कार्य क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने वेदों के आधार पर स्वराज्य प्राप्त करने की घोषणा की। ऋग्वेद (1.6.17. 1) यजुर्वेद (33.19) के मन्त्र की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं- 'हमको साम्राज्याधिकारी सद्य: कीजिए तथा हमारा स्वराज्य सदा बढ़े।' अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।' स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य के आंदोलन का सूत्रपात किया जिसे कालान्तर में महात्मा गांधी, बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, भगतसिंह, संत परमानंद, श्याम जी कृष्णवर्मा, रामप्रसाद विस्मिल आदि क्रान्ति वीरों ने अपनाया।

स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान सबसे अधिक रहा। आज, भारत की अखण्डता को सुदृढ़ करने के लिए स्वामी दयानन्द के विचारों को अपनाकर स्वराज्य को सुराज्य बनाने के लिए सार्थक प्रत्यन्न करना चाहिए। महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, शहीद भगत सिंह आदि स्वतन्त्रता के अग्रदूतों पर स्वामी दयानन्द का अमिट प्रभाव था। वे कि आपसी फूट ही भारतीयों के पतन का कारण है। आपसी फूट से हुई भारत की दुर्दशा का वे इस प्रकार से मार्मिक वर्णन करते हैं-'जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।' वे अंग्रेजों की अच्छाइयों को अपनाने में भी संकोच नहीं मानते। तभी तो कहते हैं-'यूरोपियनों में बाल्यकाल में विवाह न करना,

लड़का-लड़की की विद्या, सुशिक्षा करना-कराना, स्वयंवर विवाह होना, वे विद्वान होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते, जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा में निश्चित करके करते हैं-स्वजाति की उन्नति के लिए तन, मन, धन व्यय करते हैं, आलस्य को छोड़कर उद्योग (परिश्रम) किया करते हैं।'

स्वामी दयानन्द ने अपने देश के लिए अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना की कामना की। उनके हृदय में स्वदेश, मातृभूमि, आर्यावर्त का सर्वोपरि स्थान था। स्वामी की अगाध विद्वता का आधार एकमात्र संस्कृत-गन्थों का स्वाध्याय था। उनका चिन्तन विशुद्ध भारतीय था और विदेशी प्रभाव से सर्वथा रहित था। वेद की ऋचाओं, स्मृति-ग्रन्थों और ऋषि मुनियों के आप्त वचनों से उन्होंने राष्ट्रवाद की शिक्षा और दीक्षा ली थी। 'जबकि कर्मयोगी प्रजागण सबसे प्रथम संगठित होता है, तब वह स्वराज्य प्राप्त करता है, जिससे श्रेष्ठ दूसरा कोई अन्य नहीं है।'

उनकी देश-प्रेम की भावना पवित्र, और राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत थी। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में वे लिखते हैं कि- 'यह आर्यावर्त देश ऐसा है कि जिसके समान भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसलिए इसका नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है', 'जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं। पारसमणि पत्थर सुना जाता है, सब बात झूठ है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी, छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।' स्वामी दयानन्द देश में आपसी फूट को ही सर्वनाश तथा पराधीनता का कारण मानते हैं। इस विषय में उन्होंने लिखा है-'विदेशियों के आर्यावर्त में राज होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं।' आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया: परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने वह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यो को सब सुखों से छुड़ाकर-दु:खसागर में डुबो मारेगा। उसी दुष्ट गोत्र-हत्यारे, स्वदेश-विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक चलकर दु:ख बढ़ा रहे हैं। परमात्मा कृपा करे कि यह रोग हम आर्यो में से नष्ट हो जाए।'◆◆◆

हिन्दू-भाव जागरण से पुष्ट होगा राष्ट्रभाव

... टेकचन्द ठाकुर

शिक्षा, चिकित्सा, ब्राह्मण ग्रन्थों व महाकाव्यों को समझने की आवश्यकता है। हमारे महापुरूषों द्वारा स्थापित आदर्श हमारा मार्गदर्शक का काम करता है।

इस से पूर्व कि राष्ट्र भाव की चर्चा हो, हमें हिन्दुत्व व इस के कारकों को समझने की आवश्यकता है। हम में से जो भी नियमित रूप से भारत शक्ति स्तोत्र का पाठ करता है, उसे समझने की आवश्यकता नहीं होगी कि भारतवर्ष की आत्मा क्या है? भारत भक्ति के स्रोत क्या हैं,या यूं कहें कि वे कौन से बिन्दु हैं जो भारतवर्ष जैसे विराट भूखण्ड को एक राष्ट्र बनाते हैं- 'हिमालयं समारभ्य यावदेन्दु सरोवरं, तं देवनिर्मितं देश:, हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।' इस शास्त्रोक्त सूक्ति से ही मालूम होता है कि इस विशाल राष्ट्र की सीमाएं कहां से कहां तक हैं। इसी विस्तीर्ण भारतवर्ष को कुछ इस प्रकार से कहा गया है

'उतरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं, वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संतति।।'

यह तो भारतवर्ष की मात्र सीमाओं की चर्चा है,परन्तु अनादि काल से चला आ रहा यहां का जीवन प्रवाह आज भी स्वत: गतिमान कैसे रहा। हमारे देश के सन्तों, ऋषि मुनियों और महापुरूषों ने इस देश को अपने पुरूषार्थ से इसे विश्वगुरू के सिंहासन पर आरूढ़ किया। वेद और उपनिषदों की रचना करने वाले हमारे ही ऋषि मुनि थे। पुराण,गीता, रामायण, और महाभारत के रचनाकारों ने मनुष्य जीवन की सार्थकता के निदर्शन कराए। आज के वैज्ञानिक युग से हजारों वर्ष पूर्व हमारे देश का विज्ञान समझना हो तो इन महाग्रन्थों व महाकाव्यों को समझने की आवश्यकता है। हमारे महापुरूषों द्वारा स्थापित आदर्श हमारा मार्गदर्शन करते हैं। यह हमारी पूंजी है। राम-राज्य की कल्पना अपने आप में एक ऐसा प्रेरक तत्व है जो न केवल भारतवर्ष के लिए बल्कि विश्व के लिए मार्गदर्शक का काम करता है। शिक्षा, चिकित्सा, ब्राह्मण ग्रन्थों व महाकाव्यों को समझने की आवश्यकता है। हमारे महापुरूषों द्वारा स्थापित आदर्श हमारा मार्गदर्शक का काम करता है। शिक्षा, चिकित्सा, ब्रह्मण्डीय और सामुद्रिक ज्ञान में हमारे देश ने उत्कर्ष का स्पर्श किया, जो आज भी गहन अनुसंधान के विषय हैं। समाज जीवन के विभिन्न पक्षों के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक सूत्र दिए। श्रुतियों व स्मृतियों के माध्यम से यह क्रम हजारों वर्षों की यात्रा पूर्ण कर आज भी हमें लाभ पहुंचा रहा है। हमारे ऋषि मुनियों, महापुरूषों, तपस्वियों मनस्वियों व युग प्रवर्तकों की यह माटी आज भी हमारे मन्दिरों के माध्यम से हमारे लिए प्रेरणायुक्त है। ये शक्ति केन्द्र हैं जहां व्यक्ति अपनी आस्था विश्वास के साथ अपना जीवन जीते हैं। हिन्दू धर्म की विशेषता है कि इस देश के सन्तों व ऋषि मुनियों ने देश काल व परिस्थितियों के अनुसार अपने पंथ व मत प्रचलित किए। हिन्दू धर्म की विराटता इस से ही पता चलती है कि चारवाक् जैसे विचारक को भी ;षि की उपाधि दी जिसने मानव शरीर को नश्वर मानकर 'ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्' का विचार दिया। हमारे महापुरूषों द्वारा स्थापित श्रेष्ठ मानबिन्दू ही हिन्दू जीवन दर्शन है। हजारों वर्षों से चला आ रहा हिन्दू जीवन चिरन्तन है शाश्वत् है, परन्तु आत्म विस्मृति के कारण पिछले लम्बे कालखण्ड से इस में गिरावट आने के कारण ही परकीयों ने इसे नष्ट करने का प्रयास किया है। हजार बारह सौ वर्षों तक मुगलों और अंग्रेजों ने इसे आक्रान्त करने का प्रयास किया। देश, धर्म, और अपने श्रेष्ठ इतिहास के विस्मरण से हिन्दुत्व ने आघात सहे। इस कालखण्ड का इतिहास पराधीनता का नहीं, बल्कि सतत् संघर्ष का इतिहास रहा है। अपने देश, धर्म, हिन्दु जाति के विस्मरण के कारण ये दिन देखने पड़े।

'संस्कृति सब की एक चिरन्तन' यह सूत्र वाक्य हम जानते ही हैं। जड़ में जीवन हिन्दू है। यही हिन्दुत्व या हिन्दूभाव हमारी राष्ट्रीयता है। इसी हिन्दुभाव को पुष्ट किए बिना हम राष्ट्र की चिति को नहीं समझ सकते। हमारा देश कोई 'नवराष्ट्र' नहीं है जैसा वामपन्थी इतिहासकार कहते हैं। यह तो चिरन्तन राष्ट्र है। यह देवनिर्मित है, भगवान ने स्वयं यहां अवतार लिया है। उसी के द्वारा स्थापित आदर्श हमारे आदर्श हैं। वही जीवन मूल्य हमारे जीवन मूल्य हैं। भारत को किसी ने खोजा भी नहीं है। डिस्कवरी ऑफ इण्डिया का अनुसरण करने वालों के लिए यह नई बात हो सकती है। 'हिन्दुत्व' देश को संगठित रखने का सूत्र है, जिस दिन यह वाक्य चरितार्थ होगा, उस दिन देश सही अर्थों में परम वैभव को स्पर्श करेगा। हिन्दुत्व ही व्यक्ति को अखिल भारतीय दृष्टि प्रदान करने वाला कारक है। अत: हिन्दुभाव के जागरण से ही राष्ट्रभाव का जागरण होगा, यह शाश्वत सत्य है। ◆◆◆

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076
एवं मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

Baldev Singh Negi

State Executive Member BJP
Director (Non Official)
HANDICRAFTS & HANDLOOM CORP LTD.
Former Distt. President BJP Kinnaur

Village Shorang, PO Chhota Kamba,
Teh. Nichar, Distt. Kinnaur-172101 (H.P.)
Mob.: + 91 98166 42729, 94185-70428

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076
एवं मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

TARA CHAND THAKUR
Prop.

DURGA MEDICAL STORE
RECKONG PEO,
DISTT. Kinnaur-172101 (H.P.)

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

SURAJ JARYAL
ANOOP JARYAL
ABHIMANYU JARYAL

JARYAL BUS SERVICE

H.O.: SIMBAL GHATTA, PO. TUNDI
TEH. BHATTIYAT, DISTT. CHAMBA (H.P.)176207
MOB.: 94182 99052, 98057 42023

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

विक्रम सिंह जरयाल

विधायक

भटियात, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

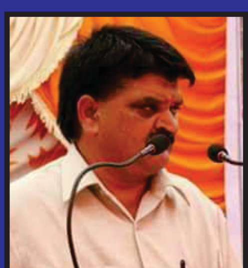

चेतराम

जिला महामन्त्री

भाजपा, मण्डी (हि.प्र.)

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2076 एवं
मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

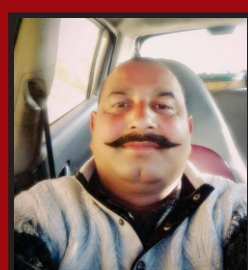

HEERA SINGH KAUNDAL
GOVT. CONTRACTOR

> *इस समय जब मैं बीमारी के कारण बिस्तर पर सिमटा हुआ हूं, मेरा अतीत स्मृतिपटल पर तैर रहा है रूरूरू जिस ख्याति प्रसिद्धि और धन संपत्ति को मैंने सर्वस्व माना और उसी के व्यर्थ अहंकार में पलता रहा।*

कलुषित राजनीति को मनोहर कर गए परिकर

स्व. श्री मनोहर परिकर कैंसर से जूझ रहे थे, अस्पताल के बिस्तर से उनका यह संदेश बहुत मार्मिक है-'मैंने राजनैतिक क्षेत्र में सफलता के अनेक शिखरों को छुआ, दूसरों के नजरिए में मेरा जीवन और यश एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। फिर भी मेरे काम के अतिरिक्त अगर किसी आनंद की बात हो तो शायद ही मुझे कभी प्राप्त हुआ आखिर क्यों? तो जिस political status जिसमें मैं आदतन रम रहा था ... आदी हो गया था वही मेरे जीवन की हकीकत बन कर रह गई। इस समय जब मैं बीमारी के कारण बिस्तर पर सिमटा हुआ हूं, मेरा अतीत स्मृतिपटल पर तैर रहा है ... जिस ख्याति प्रसिद्धि और धन संपत्ति को मैंने सर्वस्व माना और उसी के व्यर्थ अहंकार में पलता रहा'।

आज जब खुद को मौत के दरवाजे पर खड़ा देख रहा हूँ तो वो सब धूमिल होता दिखाई दे रहा है साथ ही उसकी निर्थकता बड़ी शिद्दत से महसूस कर रहा हूं। आज जब मृत्यु पल-पल मेरे निकट आ रही है, मेरे आस-पास चारों तरफ हरे प्रकाश से टिमटिमाते जीवन ज्योति बढ़ाने वाले अनेक मेडिकल उपकरण देख रहा हूँ। उन यंत्रों से निकलती ध्वनियां भी सुन रहा हूं इसके साथ-साथ अपने आगोश में लपेटने के लिए निकट आ रही मृत्यु की पदचाप भी सुनाई दे रही है। अब ध्यान में आ रहा है कि भविष्य के लिए आवश्यक पूंजी जमा होने के पश्चात दौलत संपत्ति से जो अधिक महत्वपूर्ण है वो करना चाहिए। वो शायद रिश्ते नाते संभालना सहेजना या समाजसेवा करना हो सकता है। निरंतर केवल राजनीति के पीछे भागते रहने से व्यक्ति अंदर से सिर्फ और सिर्फ पिसता, खोखला बनता जाता है। बिल्कुल मेरी तरह। उम्र भर मैंने जो संपत्ति और राजनैतिक मान सम्मान कमाया वो मैं कदापि साथ नहीं ले जा सकूंगा

दुनिया का सबसे महंगा बिछौना कौन सा है, पता है ? 'बीमारी का बिछौना'। गाड़ी चलाने के लिए ड्राईवर रख सकते हैं पैसे कमा कर देने वाले मैनेजर मिनिस्टर रखे जा सकते हैं परंतु अपनी बीमारी को सहने के लिए हम दूसरे किसी अन्य को कभी नियुक्त नहीं कर सकते हैं। खोई हुई वस्तु मिल सकती है। मगर एक ही चीज ऐसी है जो एक बार हाथ से छूटने के बाद किसी भी उपाय से वापस नहीं मिल सकती है। वो है अपना 'आयुष्य' 'काल' 'समय' ऑपरेशन टेबल पर लेटे व्यक्ति को एक बात जरूर ध्यान में आती है कि उससे केवल एक ही पुस्तक पढ़नी शेष रह गई थी और वो पुस्तक है 'निरोगी जीवन जीने की पुस्तक'। फिलहाल आप जीवन की किसी भी स्थिति- उमर के दौर से गुजर रहे हों तो भी एक न एक दिन काल एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है कि सामने नाटक का अंतिम भाग स्पष्ट दिखने लगता है। स्वयं की उपेक्षा मत कीजिए स्वयं ही स्वयं का आदर कीजिए दूसरों के साथ भी प्रेम पूर्ण बर्ताव कीजिए। लोग मनुष्यों को इस्तेमाल (नेम) करना सीखते हैं और पैसा संभालना सीखते हैं। वास्तव में पैसा इस्तेमाल करना सीखना चाहिए व मनुष्यों को संभालना सीखना चाहिए। अपने जीवन की शुरुआत हमारे रोने से होती है और जीवन का समापन दूसरों के रोने से होता है। इन दोनों के बीच में जीवन का जो भाग है वह भरपूर हंस कर बिताएं और उसके लिए सदैव आनंदित रहिए व औरों को भी आनंदित रखिए। (पैक्रिंयाज) कैंसर से पीड़ित अस्पताल में जीवन के लिए जूझ रहे 'श्री मनोहर पर्रिकर' का आत्मचिंतन।

◆◆◆

जलियाँवाला बाग के प्रेरणादायी बलिदान की शताब्दी

भारत के स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास में वैशाखी के पवित्र दिन 13 अप्रैल 1919 को हुआ अमृतसर का जलियाँवाला बाग हत्याकांड क्रूर, वीभत्स तथा उत्तेजनापूर्ण घटना थी, जिसने न केवल भारत के जनमानस को उद्वेलित, कुपित तथा आंदोलित किया, अपितु ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी। भारतीयों के विरोध के बावजूद रोलेट एक्ट का काला कानून पारित कर दिया गया। इस कानून का सर्वदूर विरोध हुआ। अमृतसर के दो बड़े नेताओं डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सतपाल की गिरफ्तारी का समाचार फैलते ही जनता में रोष की लहर व्याप्त हो गई। जनरल डायर ने सभी बैठकों, जुलूसों और सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया। उसके आदेश की अवहेलना करके 13 अप्रैल को सभा आयोजित की गई। प्रतिबंधों के बाद भी बीस हजार से अधिक लोग जलियाँवाला बाग में एकत्र हो गए। जनरल डायर ने सभा स्थल के एकमेव मार्ग को अवरुद्ध कर बिना चेतावनी दिए भीड़ पर सीधे गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। चारों ओर हाहाकार मच गया, सैंकड़ों लोग मारे गए और हजारों घायल हुए।

इस वीभत्स हत्याकांड ने सारे देश में अंग्रेज शासन के विरुद्ध तीव्र रोष एवं प्रतिरोध का निर्माण किया। कुछ दिन बाद ही रविन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रतिवाद में नाईटहुड की उपाधि लौटाई। सरदार भगत सिंह ने वहाँ की रक्त रंजित मिट्टी उठाकर स्वाधीनता का संकल्प लिया और उसे अपने घर ले गए। इस कांड के प्रत्यक्षदर्शी ऊधमसिंह ने 21 वर्ष बाद 1940 में इंग्लैंड जाकर एक समारोह में ले. गवर्नर ओ. डायर को गोलियों से भून दिया। जलियाँवाला बाग सभी देशभक्तों के लिए एक प्रेरणादायी तीर्थ बन गया और इस घटना से प्रेरणा प्राप्त कर हजारों लोग स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष एवं बलिदान के मार्ग पर बढ़ गए।

जलियाँवाला बाग की ऐतिहासिक घटना का यह शताब्दी वर्ष है। हम सबका यह कर्तव्य है कि बलिदान की यह अमरगाथा देश के हर कोने तक पहुँचे। हम सम्पूर्ण समाज से यह आह्वान करते हैं कि इस ऐतिहासिक अवसर पर अधिकाधिक कार्यक्रमों का आयोजन कर इन पंक्तियों को सार्थक करें, तुमने दिया देश को जीवन, देश तुम्हें क्या देगा?, अपनी आग तेज रखने को, नाम तुम्हारा लेगा। ◆◆◆

श्री गुरुनानकदेव का 550वां प्रकाश-पर्व

आज से पाँच सौ पचास वर्ष पूर्व संवत् 1526 को श्री गुरुनानकदेव जी का जन्म श्री मेहता कल्याणदास जी के घर, राय भोय की तलवण्डी में माता तृप्ता की कोख से हुआ था। उस समय भारतवर्ष की दुर्बल व विघटित अवस्था का लाभ उठाकर विदेशी आक्रांता इस राष्ट्र की धार्मिक व सांस्कृतिक अस्मिता को नष्ट कर रहे थे। श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने सत्य-ज्ञान, भक्ति एवं कर्म का मार्ग दिखाकर अध्यात्म के युगानुकूल आचरण से समाज के उत्थान व आत्मोद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। जिसके फलस्वरूप भ्रमित हुए भारतीय समाज को एकात्मता एवं नवचैतन्य का संजीवन प्राप्त हुआ। श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने समाज को मार्गदर्शन देने के लिए 'संवाद' का मार्ग अपनाया। उन्होंने अपने जीवन में सम्पूर्ण भारत सहित अनेक देशों की यात्राएँ की, जिनको 'उदासी' के नाम से जाना जाता है। प्रथम तीन यात्राएँ भारत की चारों दिशाओं में की तथा मुल्तान से लेकर श्रीलंका व लखपॅत (गुजरा) से लेकर कामरूप, ढाका सहित देश के सभी प्रमुख आध्यात्मिक केन्द्रों पर गए। चौथी उदासी उन्होंने भारत से बाहर की जिसमें उन्होंने बगदाद, ईरान, कंधार, दमिश्क, मिश्र, मक्का व मदीना तक की यात्राएँ की। इन यात्राओं में उन्होंने तत्कालीन धार्मिक नेतृत्व यथा सन्तों, सिद्धों, योगियों, सूफी फकीरों, जैन व बौद्ध सन्तों से संवाद किया। धार्मिकता के नाम पर प्रचलित अंधवश्विासों पर सैद्धांतिक व तार्किक दृष्टिकोण बताते हुए उन्होंने समाज का मार्गदर्शन किया। ◆◆◆

... डॉ0 अनुराग विजयवर्गीय

लोकप्रियता के शिखरों पर आयुर्वेद

आयुर्वेद शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से मानव मात्र को स्वस्थ एवं सबल बनाने वाला चिकित्सा-विज्ञान है। हमने इस आयुर्वेद को तभी आजमाया जब समग्र विश्व भारतीय ऋषि-महर्षियों के द्वारा प्रणीत इस चिकित्सा-पद्धति में एड्स, कैंसर जैसे वीभत्स रोगों के समाधानों के लिए आशा भरी नजरों से देखने लगा। हम सचेत हुए जब हमें पता चला कि पश्चिमी देशों के लोग वहां की दोषपूर्ण एवं अत्यंत व्यय-साध्य चिकित्सा-पद्धति से घबराकर शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए 'आयुर्वेद' की शरण में आ रहे हैं। पूरी दुनिया भर के लोग आजकल यह भली-भांति समझने लगे हैं कि तथाकथित रूप से आधुनिक कही जाने वाली दवाओं के अंधाधुंध प्रयोगों से उनका स्वास्थ्य संकटपूर्ण स्थिति तक पहुंच गया है। सचाई तो यह है कि अमेरिका के 'मेस्साच्युसेट्स संस्थान' सहित विश्व की अनेक शीर्षस्थ शोध-संस्थाओं में 'जड़ी-बूटियों' पर शोध-कार्य चल रहे है। 'वर्ल्ड-एड्स' के अनुसार अमेरीका के नेशनल कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट में कैंसर एवं एड्स के उपचार में कारगर भारतीय जड़ी-बूटियों को व्यापक पैमाने पर परखा जा रहा है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों की गिद्ध-दृष्टि इन दिनों नीम, हल्दी, तुलसी, आंवला, पुनर्नवा, अश्वगंधा जैसी बहुमूल्य जड़ी-बूटियों को पेटेंट कराने में लगी हुई है। अमेरिका के एक शोध संस्थान ने हाल ही में यह पता लगाया है कि 'दालचीनी' के प्रयोग से ग्लूकोज की चयापचय की क्षमता बढ़ती है, जो कि मधुमेह के लिए बहुत ही फायदेमंद साबित हो रही है। वहां के वैज्ञानिकों के अनुसार रोजाना एक चम्मच दालचीनी का पाउडर लेने से रक्त में ग्लूकोज का स्तर सामान्य बना रहता है।

आजकल एक जुकाम का रोगी भी यदि किसी चिकित्सक के पास जाता है, तो उसे ढेर सारी दवाइयों का परचा थमा दिया जाता है। धीरे-धीरे वह उन दवाओं का आदी हो जाता है। एंटीबायोटिक दवाओं का सबसे घातक असर अस्थियों में 'रैड बोन मैरो' पर पड़ता है, जिससे रक्त निर्माण की नैसर्गिक परिस्थितियां बाधित होती हैं और उत्तरोत्तर व्यक्ति की रोग-प्रतिरोध क्षमता में गिरावट आने लगती है। चिकित्सा विज्ञानियों के अनुसार आगामी कुछ वर्षों बाद एंटीबयोटिक औषधियाँ मानव शरीर पर अपना कार्य करना बंद कर देंगी, यह एक बहुत बड़ी चुनौती सम्पूर्ण मानवता के समक्ष आने वाली है। निश्चित ही आयुर्वेद की एक विशेषता इसका दुष्प्रभावों से मुक्त होना भी है। यह चिकित्सा-पद्धति भले ही लैब-टेस्टेड नहीं हो, लेकिन टाइम-टेस्टेड तो है ही। यह वही आयुर्वेद है जिसके बारे में फ्रांसिसी विद्वान चार्ल्स डेलान ने लिखा था- 'भारतीयों ने अपने लंबे अनुभव और अध्ययन से अनेक बीमारियों की जड़ पकड़ने में जो सफलता पाई है, वह इस देश की जलवायु में सर्वश्रेष्ठ इलाज का माध्यम तो है ही, साथ ही विदेशी चिकित्सकों को भी इसका लाभ उठाना चाहिए। जर्मन विद्वान न्यूबर्गर लिखते हैं-

भारतीय चिकित्सा साम्राज्य हर क्षेत्र में शानदार प्रगति तथा अध्ययनों के बाद पनपा है, मगर इसका विकास खुद इस देश की सक्रियता की कमी से रुक गया है, इससे यह सीमित होती जा रही है'।

प्रसंगवश सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन के विचार भी अवलोकनीय हैं- 'आयुर्वेद एक निर्दोष चिकित्सा-पद्धति है। यह केवल व्याधियों का विज्ञान न होकर स्वास्थ्य का विज्ञान है। यह मनुष्य को और दीर्घजीवी बनाता है। जितना प्राचीन अनुभव आयुर्वेद का है, उतना अन्य किसी चिकित्सा-विज्ञान का नहीं है।' ◆◆◆

शिमला में ऐतिहासिक पत्रकार परिवार मिलन

विश्व संवाद केन्द्र शिमला द्वारा होली के उपलक्ष्य में पत्रकार परिवार मिलन समारोह का आयोजन किया गया। शिमला के हिमरश्मि परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 120 विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से आये पत्रकार व उनके परिवार से आये सदस्यों ने भाग लिया। प्रैस क्लब शिमला के अध्यक्ष व दैनिक सवेरा टाइम्स के ब्यूरो प्रमुख श्री धनंजय शर्मा कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए, कार्यक्रम की अध्यक्षता हि0प्र0वि0वि0 के पूर्व प्रति कुलपति व विश्व संवाद केन्द्र शिमला न्यास के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र शारदा ने की। वहीं महीधर प्रसाद कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर धनंजय शर्मा ने कहा कि विश्व संवाद केन्द्र शिमला गत कई वर्षों से मीडिया से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करता आया हैं जिसमें नारद जयन्ती के अवसर पर राज्य स्तरीय पत्रकार सम्मान समारोह भी आयोजित करता है जो अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि आज का यह परिवार मिलन समारोह अनूठी पहल है। इस तरह का कार्यक्रम अभी तक किसी भी संस्था द्वारा नहीं किया गया। उन्होंने विश्व संवाद केन्द्र को कार्यक्रम के आयोजन पर शुभकामनाएं दी और कहा कि पत्रकारों के लिए इस तरह के कार्यक्रम आपसी परिवारों में परस्पर संबंध बनाने और भाईचारे को बढ़ावा देने की ओर बड़ा कदम है। उन्होंने सभी पत्रकारों से कार्यक्रम में सहभागिता दर्ज करवाने की अपील भी की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ने कहा कि पिछले 14 वर्ष से विश्व संवाद केन्द्र मीडिया में सक्रिय है और मीडिया के साथ परस्पर संबंध बनाये रखने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्व संवाद केन्द्र राष्ट्रीय विचारों के त्वरित प्रचार-प्रसार के लिए हमेशा तत्पर रहता हैं। विश्व संवाद केन्द्र लगातार पत्रकारों से सम्पर्क बनाये रखता है और संघ के बारे में जानकारियां उपलब्धा करवाता है। उन्होंने कहा कि आज का पत्रकार परिवार मिलन समारोह ऐतिहासिक माना जायेगा क्योंकि अभी तक हिमाचल में इस तरह का कार्यक्रम किसी अन्य संस्था द्वारा नहीं किया गया। उन्होंने उम्मीद जताई कि विश्व संवाद केंद्र शिमला भविष्य में भी इस तरह के आयोजन करेगा।

कार्यक्रम के अध्यक्ष नरेन्द्र शारदा जी ने विश्व संवाद केन्द्र शिमला की गतिविधियों प्रकाश डाला व अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता ऐसा कार्य है जो पत्रकारों से निडरता, साहस व सच को कहने की हिम्मत तो चाहता ही है साथ ही पत्रकारों से उन हसीन पलों को भी मांगता है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन के सबसे कीमती पल होते हैं।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित पत्रकारों के बच्चों के लिए पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। पहली कक्षा से पांचवी कक्षा व छठी कक्षा से 10वीं कक्षा के बच्चों के लिए यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की गई। जूनियर वर्ग की प्रतियोगिता में निधि ठाकुर, ध्यानेश वर्मा, आंचल, मलायिका सिंह, रशिका ठाकुर, अवनि सुंदरियाल, वैशनवी, तेजस शर्मा, जासमिन, नरिहा नागपाल, ने भाग लिया जिसमें अवनि सुंदरियाल पहले, तेजस शर्मा दूसरे व ध्यानेश वर्मा तीसरे स्थान पर रहे। वहीं सीनियर वर्ग की प्रतियोगिता में सूर्यांश शर्मा, पारूल ठाकुर, सृष्टि शर्मा, रिद्धिमा ठाकुर, मालविका सिंह, तन्वी सुन्दरियाल, नमिता वर्मा, सौम्य मुकुल, हर्षिता वर्मा, अर्शिया भारद्वाज, भार्गवि शर्मा ने भाग लिया। जिसमें हर्षिता वर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, अर्शिया भारद्वाज ने द्वितीय, और भार्गवि शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस बीच महिलाओं के लिए म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रियंका पहले, विजय वालिया दूसरे व सुमन ठाकुर तीसरे स्थान पर रहीं । वहीं नींबू दौड़ में जया शर्मा, करूणा, गायत्री और डॉ. किम्मी सूद विजेता रही। पुरूषों के लिए लंगड़ी दौड़ का आयोजन किया गया जिसमें पहले स्थान पर पत्रकार अश्विनी, दूसरे स्थान पर पत्रकार प्रकाश भारद्वाज, व तीसरे स्थान पर पत्रकार धनंजय शर्मा रहे। वही घुटने की दौड़ में पत्रकार प्रवीण प्रथम, पत्रकार विजय द्वितीय व पत्रकार इन्द्र सिंह तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अन्त में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया व पत्रकारों के परिवारजनों को भी सम्मानित किया गया। ◆◆◆

शिखा सुरेंद्रन की मानें तो संकल्प की सबसे बड़ी खूबी ये है कि दिल्ली जैसे महानगर में यहां के आत्मीय वातावरण में हमें परिवार की कमी महसूस नहीं होती।

... अम्बरीष पाठक

संकल्प सफलता का

केरल के एर्नाकुलम जिले के पुरथेनक्रुज कस्बे में रहने वाली शिखा सुरेंद्रन की छोटी-छोटी आंखो में बड़े- बड़े सपने थे। पिता बिस्तर पर थे व मां मजबूर। रिश्तेदारों की मदद से किसी तरह इंजीनियरिंग पूरी कर चुकी यह प्रतिभाशाली लड़की आईएएस बनकर देश की सेवा करना चाहती थी, किंतु दिल्ली में रहकर, कोचिंग करना बिना पैसों के कहां संभव था, तभी वो संकल्प के संपर्क में आई। हुडको में मुख्य अभियता रहे संतोष तनेजा के प्रयासों से 1986 में शुरू हुई यह संस्था प्रतिभाशाली छात्रों को दिल्ली में सिविल सर्विस की कोचिंग देती है। यहां शिखा को नाममात्र की फीस लेकर कोचिंग के साथ ही हॉस्टल में रहने की सुविधा मिली व उसने इतिहास रच दिया। 2017- 18 की बैच में शिखा सुरेंद्रन ने आईएएस में ऑल इंडिया में 16 वीं रैंक हासिल की। कुछ इससे मिलती जुलती कहानी राजस्थान के अलवर जिले के गांव रोनिजाजाट के किसान परिवार के राजीव कुमार की है, जिनके परिवार में कोई भी व्यक्ति पढ़ा-लिखा नहीं है, आज वे भी सिविल सेवा में सिलैक्शन के बाद मसूरी में आईएएस की ट्रेनिंग ले रहे हैं ,व अपनी सफलता का श्रेय संकल्प परिवार को देते हैं। संकल्प हर साल 20 ऐसे छात्रों को फ्री कोचिंग देता है जिनकी प्रतिभा की राह में धन की कमी आड़े आती है। विशेषकर ट्राईबल व पूर्वोत्तर के निर्धन छात्रों के लिए संकल्प उस परिवार की तरह है जो उनके लिए पालक व गुरू की दोहरी भूमिका निभाता है।

सुबह के योगाभ्यास, शाम को शाखा से लेकर रात्रि की प्रार्थना तक एक अनुशासित संस्कारमय दिनचर्या संकल्प को बाकी कोचिंग संस्थानों से अलग करती है। स्पेशल लैक्चर की सीरिज में कश्मीरियों को शिक्षा से जोड़ने वाले मेजर जनरल पी के सहगल व श्री श्री रविशंकर जैसे महापुरुषों के अनुभव स्टूडेंट्स को देश के प्रति जिम्मेदार बनने की प्रेरणा देते हैं। संस्था के संस्थापक संतोष की मानें तो 1986 में संकल्प की स्थापना का उद्देश्य देश के लिए प्रशासनिक अधिकारी गढ़ने के उद्देश्य से की गई थी। संकल्प ने 2015 में सफलता का इतिहास रचा। सिविल सेवा में सफल हुए कुल 1256 छात्रों में से 670 संकल्प से थे। संस्था द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले गुरू सम्मान समारोह में गुरूओं के साथ चयनित छात्रों को भी सम्मानित किया जाता है। इतना ही नहीं हर साल झिंझोली मे होने वाले दिशा बोध शिविर में देशभर के 200 ग्रेजुएट छात्रों को सिविल सेवा की परीक्षा की तैयारी के पहले उन्हे पढ़ाई के गुर के साथ ही देश के प्रति जिम्मेदारी भी सिखाई जाती है ।

इस शिविर में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों का मार्गदर्शन भी प्रतिभागियों को मिलता है। शिखा सुरेंद्रन की मानें तो संकल्प की सबसे बड़ी खूबी ये है कि दिल्ली जैसे महानगर में यहां के आत्मीय वातावरण में हमें परिवार की कमी महसूस नहीं होती। प्रशासनिक अधिकारियों को सकारात्मक सोच से जोड़ने के लिए, हर वर्ष 3 दिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन किया जाता है, जिसमें समाज के प्रबुद्ध चिंतक विभिन्न ज्वलंत विषयों पर अपने विचार साझा करते हैं। ◆◆◆

... प्रदीप कुमार पाण्डेय

गांव हो तो बघुवार जैसा

यह सच है कि, असली भारत गांवों में बसता है। यदि आप किसी आदर्श गांव को देखना चाहते हैं तो मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले के बघुवार गांव चलिए। साफ सुथरी सड़कें, भूमिगत नालियां, हर घर में शौचालय, खेलने के लिए इन्डोर स्टेडियम व खाना बनाने के लिए बायोगैस संयंत्र, वर्षों से गांव का कोई विवाद थाने तक नहीं पहुंचा। स्कूल व सामुदायिक भवन के लिए जब सरकार का दिया पैसा कम पड़ा तो बघुवार वासियों ने धन भी दिया व श्रमदान भी किया।

यह सब 50 वर्षों से स्थानीय जागरुक युवाओं द्वारा किए जा रहे ग्राम विकास के प्रयासों का नतीजा है। लगभग 25 वर्ष तक गांव के निर्विरोध सरपंच रहे ठाकुर सुरेंद्र सिंह,ठाकुर संग्राम सिंह एवं हरिशंकर लाल जैसे स्वयंसेवकों ने तत्कालीन सरकार्यवाह भाऊराव देवरस की प्रेरणा से अपने गांव को आदर्श गांव बनाने की ठानी। 50 वर्षों से नियमित चल रही प्रभात फेरी हो या हर घर की दीवार पर लिखे सुविचार या फिर बारिश के पानी को संग्रहित करने की आदत, बघुवार को बाकी सब गांवों से अलग करती है।

1950 से बघुवार की ग्राम विकास समिति समग्र ग्राम विकास के मॉडल पर काम कर रही है। गांव तक पहुंचने वाली 3 किलोमीटर लंबी सड़क यहां के नवयुवकों ने मिलकर बनायी है। कृषि विशेषज्ञ व संघ के तृतीय वर्ष शिक्षित स्वयंसेवक बघुवार वासी एम. पी. नरोलिया जी बताते हैं कि गांव के लोग कभी भी विकास के लिए सिर्फ सरकार पर निर्भर नहीं रहे ।

सरकार से मिली राशि में गांव वालों ने डेढ़ लाख मिलाकर गांव का स्कूल भवन पक्का बनाया व भ्रमरी नदी पर बने स्टॉपडेम में ढाई लाख रूपए देकर खेती के लिए पानी के संकट को भी हल कर दिया। नियमित साफ सफाई, घरों के आगे बने सोखते गांव , भूमिगत नालियों का निर्माण, समूचे गांव में वृक्षारोपण या इंद्रदेव द्वारा वरदान वर्षाती जल की हरेक बूंद को सहेज कर सिंचाई में उपयोग करना यह सब गांववालों की आदत में शामिल हो चुका है। शत प्रतिशत साक्षरता, घरों की दीवारों पर लिखे प्रेरक , ज्ञानवर्धक और संस्कार क्षम वाक्य मन पर गहरे प्रभाव छोड़ते हैं। 40 प्रतिशत घरों का भोजन अब यहां गोबर गैस से बनता है। यहां के सरकारी स्कूल में पढ़ाई ठीक से होती रहे बच्चों व शिक्षकों की उपस्थिति अच्छी रहे इसके लिए समिति के सदस्य तमाम प्रयास करते हैं। शिशुमंदिर के प्राचार्य रहे नारायण प्रसाद नरोलिया जैसे कुछ लोग समय समय पर विद्यालय जाकर पढ़ाते भी हैं। इसी सरकारी विद्यालय से पढ़कर नरोलिया कृषि संचालक बने तो अवधेश शर्मा लेफ्टीनेंट बने। इतना ही नहीं कुछ लोग डॉ. बने व तीन लोग पीएचडी भी कर चुके हैं। नरसिंहपुर के कलैक्टर रहे मनीष सिंह का मानना था कि आईएएस की तैयारी कर रहे छात्रों को परीक्षा देने से पहले इस गांव को आकर देखना चाहिए उनकी इस टिप्पणी के बाद विद्यार्थियों के कई बैच गांव देखने आ चुके हैं। ◆◆◆

> “*महात्मा गांधी ने कहा था यदि गाँव समाप्त हुए तो भारत समाप्त हो जाएगा। अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में कम से कम एक आदर्श गाँव स्थापित करने का सुझाव सांसदों को देकर महात्मा गांधी की चेतावनी पर ध्यान दिया है। इस प्रकार 790 आदर्श गाँव तो बन जाएंगे और यदि प्रान्तीय सरकारें भी अपने विधायकों को ऐसा ही सुझाव दें और उसे लागू किया जाए तो लगभग 4000 और आदर्श गाँव बन सकते हैं। आदर्श गाँव का मतलब होगा जीवन की भौतिक सुविधाओं के साथ ही गाँव की सरलता, ईमानदारी, परस्पर सौहार्द और सामूहिक सोच जो पहले हुआ करती थी।*”

... सौरभ धीमान

युवाओं का राष्ट्रभाव जागरण में योगदान

भारत एक युवा देश है, विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति भारत के पास है। भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है और इसी कारण विश्व के इस सबसे बड़े लोकतंत्र का निर्माता और भाग्य विधाता युवा वर्ग ही है। आज भारत की बदलती तस्वीर में युवाओं का बहुत बड़ा योगदान है। भारत ही नहीं विश्व में जितने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं उन सभी में युवाओं के लगन और बलिदान का अतुलनीय योगदान रहा है। इतिहास गवाह है कि हमारे देश में समाज को जागृत करने का जो कार्य युवा सन्यासियों द्वारा किया गया, उतना अन्य किसी के द्वारा शायद ही किया गया हो। आदि शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद इसके ज्वलंत

स्वामी विवेकानंद ने सन् 1891 में कहा था कि यदि मुझे 100 ऊर्जावान युवा मिल जाएं तो मैं इस देश की काया पलट कर रख दूंगा। आज वर्ष 2019 चल रहा है, आज स्वामी जी तो हमारे बीच नहीं हैं परन्तु ये बात आज भी उतनी ही तर्कसंगत है जितनी 1891 में थी, युवा राष्ट्ररूपी अट्टालिका की वो ईंटें हैं जो उसे भव्यता और सुदृढ़ता प्रदान करती हैं। अधिक मजबूत युवा ही अधिक विकसित राष्ट्र का निर्माण करते हैं। राष्ट्र-जागरण में युवाओं की भूमिका केंद्रीय स्थान पर होती है। जो देश सही दिशा में अपने युवाओं का उपयोग करते हैं, वे अधिक विकसित होते हैं। युवाओं के मन की ऊर्जा और चमक एक राष्ट्र केलिए मशाल-वाहक के रूप में कार्य करती है। इसके विपरीत जो देश युवा को जीवन के हर क्षेत्र में पीछे कर देते हैं वे विफल होते हैं। भारत के पिछड़ेपन का सम्भवत: यह भी एक कारण है।

भारत एक युवा देश है, विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति भारत के पास है। भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है और इसी कारण विश्व के इस सबसे बड़े लोकतंत्र का निर्माता और भाग्य विधाता युवा वर्ग ही है। आज भारत की बदलती तस्वीर में युवाओं का बहुत बड़ा योगदान है। भारत ही नहीं विश्व में जितने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं उन सभी में युवाओं के लगन और बलिदान का अतुलनीय योगदान रहा है। इतिहास गवाह है कि हमारे देश में समाज को जागृत करने का जो कार्य युवा सन्यासियों द्वारा किया गया, उतना अन्य किसी के द्वारा शायद ही किया गया हो। आदि शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। शायद इसलिए कहा जाता है-'जिस ओर जवानी चलती है, उस ओर ज़माना चलता है।

आज भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां एक ओर राष्ट्रवाद की ज्वाला प्रखर हो रही है, लेकिन इसी समय में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो निरंतर भारत के युवा को पथभ्रष्ट कर उसमें हीन-भावना पैदा करना चाहता है। इस वर्ग के लोग समाज

के हर उस क्षेत्र में बैठे हैं, जहां से आम तौर पर समाज को दिशा देने का काम किया जाता है। चाहे वह शिक्षण संस्थान हों या फिर टीवी के समाचार चैनल। यही नहीं राष्ट्रविरोधी शक्तियां भी अपने मंसूबों को अमली जामा पहनाने के लिए युवाओं का ही इस्तेमाल करती हैं। पिछले दिनों जे.एन.यू. में सक्रिय 'टुकड़े गैंग' इसका ज्वलंत उदाहरण है।'

इसलिए आज अपनी भारतीय संस्कृति का ध्यान रखते हुए, समाज के ज्वलंत मुद्दों पर गहन चिंतन के साथ प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता है ताकि हम अपने देश, समाज एवं राष्ट्रको नये रूप में देख सकें। राष्ट्र के समक्ष जितनी भी चुनौतियां हैं, डटकर उनका सामना करने का संकल्प करने की आवश्यकता है। अपने निजी मतभेदों को भुला कर देश के लिए एक होने की आवश्यकता है, ताकि देश का अहित सोचने वाले हमारी किसी भी प्रकार की कमजोरी का फायदा न उठा सकें। देश के युवा अपने समय का सदुपयोग करके वास्तव में राष्ट्र जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनके पास समय होता है, जोश होता है और क्षमता होती है। आवश्यकता है तो केवल इसे सही दिशा देने की। ◆◆◆

भारत कच्चे इस्पात का दूसरा बड़ा उत्पादक देश

कैसे

भारत दुनिया में कच्चे इस्पात का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है। भारत ने यह उपलब्धि जापान को पीछे छोड़कर हासिल की है। चीन इस्पात उत्पादन के मामले में पहले स्थान पर है। विश्व इस्पात संघ की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2018 में भारत का कच्चा इस्पात उत्पादन 4.9 प्रतिशत बढ़कर 10.65 करोड़ टन हो गया है। जबकि 2017 में 10.15 करोड़ टन था। वहीं जापान का उत्पादन इस दौरान 0.3 प्रतिशत घटकर 10.43 करोड़ टन रह गया। इस्पात उत्पादन के 51 प्रतिशत हिस्से पर चीन का अब भी आधिपत्य है। 2018 में चीन का कच्चे इस्पात का उत्पादन 6.6 प्रतिशत बढ़कर 92.83 करोड़ टन हो गया। शीर्ष दस इस्पात उत्पादक देशों में अमेरिका चौथे स्थान पर, दक्षिण कोरिया पांचवे, रूस छठे, जर्मनी सातवें, तुर्की आठवें, ब्राजील नौवें और ईरान दसवें स्थान पर है।

2020 तक ग्रेनो वेस्ट मेट्रो चालू करने का लक्ष्य

क्या

आने वाले वर्ष में नोएडा और ग्रेटर नोएडा वेस्ट के बीच का सफर आसान हो जाएगा। मेट्रो का नोएडा और आसपास के एरिया में विस्तार जारी है। इसी क्रम में नोएडा को एक और मेट्रो की सौगात मिली है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट मेट्रो के परिचालन के लिए 30 दिसंबर 2020 का लक्ष्य रखा गया है। ग्रेटर नोएडा आथॉरिटी के सीईओ नरेंद्र भूषण के मुताबिक जल्द ही ग्रेटर नोएडा वेस्ट मेट्रो के लिए शासन से प्रस्ताव पास होने की उम्मीद है। इसके साथ ही इस परियोजना को कम खर्च में पूरा करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। पहले चरण में इसे नोएडा के सेक्टर-2 तक लाया जाएगा। इससे ग्रेनो वेस्ट की 20 से अधिक रेजिडेंशियल सोसाइटी और 10 से अधिक गांव कवर होंगे। 9.15 किलोमीटर के इस रूट पर 5 स्टेशन बनेंगे। इसमें नोएडा के सेक्टर 120,123 और ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर-4 16बी व 2 में स्टेशन बनाए जाएंगे। वहीं दूसरे चरण में इसे नॉलेज पार्क-5 तक ले जाया जाएगा।

दुनिया का सबसे लंबा एक्सप्रेस वे

कहां

कुंभ से ही उतर प्रदेश की योगी सरकार ने प्रदेश को एक बड़ी सौगात दी है। योगी कैबिनेट ने प्रदेश के पश्चिमी भाग को प्रयागराज से जोड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण फैसले पर मुहर लगायी। इसके तहत लगभग 600 किलोमीटर लंबा 'गंगा एक्सप्रेस-वे' बनेगा। यह गंगा एक्सप्रेस वे मेरठ, अमरोहा, बुलंदशहर, बदायूं, शाहजहांपुर, फर्रूखाबाद, हरदोई, कन्नौज, उन्नाव, रायबरेली और प्रतापगढ़ होते हुए प्रयागराज तक जाएगा। इस ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे के निर्माण में 6556 हेक्टेयर जमीन और करीब 36 हजार करोड़ रूपये खर्च होंगे। पहले यह चार लेन का बनेगा बाद में छह लेन तक इसका विस्तार होगा। इस तरह यह एक्सप्रेस-वे दुनिया का सबसे लंबा एक्सप्रेस-वे होगा। फिलहास अभी लखनऊ आगरा एक्सप्रेस-वे भारत का सबसे लंबा एक्सप्रेस-वे है। यह 302 किलोमीटर लंबा है।

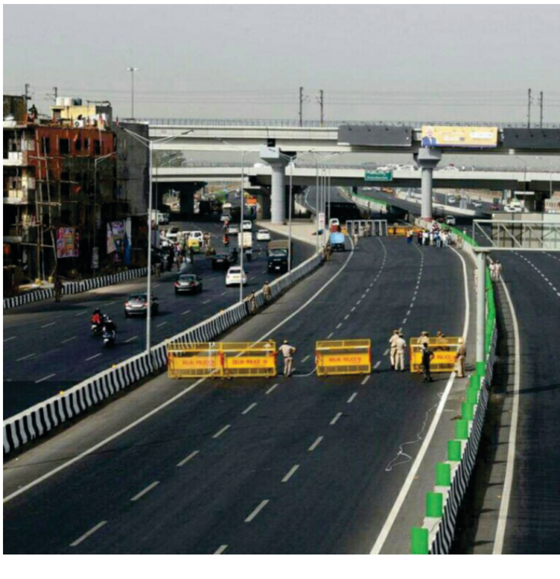

मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग का हुआ अंत

कब

कभी रेल हादसों के प्रमुख कारणों में से एक रही मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग की देश से अब पूरी तरह विदाई हो चुकी है। आखिरी रेलवे क्रॉसिंग इलाहाबाद मंडल में बची थी। उसकी भी 31 जनवरी को अनोखे अंदाज में विदाई कर दी गई। इसे यादगार बनाने के लिए वहां पर एक पत्थर लयाया गया है। इलाहाबाद मंडल की ओर से लगाए गए इस पत्थर पर लिखा है कि आज दिनांक 31.01.2019 को इलाहाबाद मंडल के चुनार-चोपन रेल खंड के मानव रहित रेल खंड सं. 28-सी को बंद किया गया। यह भारतीय रेल के ब्रॉड गेज तंत्र के उन 4605 समपारों में से अंतिम मानव रहित समपार है, जो भारतीय रेलवे ने अपने अथक प्रयासों से पिछले 15 महीनों में हटाए हैं।

ले.ज. राजीव चोपड़ा बने एनसीसी महानिदेशक

कब

लेफ्टिनेंट जनरल राजीव चोपड़ा ने एन.सी.सी. के महानिदेशक (डीजी-एनसीसी) का पदभार ग्रहण कर लिया है। दिसंबर 1980 में मद्रास रेजिमेंट में कमीशन हुए लेफ्टिनेंट में कमीशन हुए लेफ्टिनेंट जनरल चोपड़ा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खडकवासला और भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून के छात्र रहे हैं। उन्होंने ऑपरेशन राइनो (असम) में एक पैदल सेना बटालियन की कमान संभाली। उन्होंने पूर्वी कमान में एक ब्रिगेड की कमान संभाली और उग्रवाद ग्रस्त राज्य मणिपुर में मुख्यालय आईजीएआर (दक्षिण) के महानिरीक्षक बने। वे प्रतिष्ठित इन्फैंट्री स्कूल के कमांडेंट भी रहे। वे जून 2016 से मद्रास रेजिमेंट के कर्नल भी हैं। वे तकनीकी कर्मचारी अधिकारी पाठ्यक्रम में स्नातक हैं, उन्होंने राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय, चीन और राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज, नई दिल्ली में उच्च कमान पाठ्यक्रम में भाग लिया है। उन्होंने राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय से रक्षा और सामरिक अध्ययन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। जनवरी 2018 में उनकी विशिष्ट सेवा के लिए उन्हें अतिविशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया है।

रंग महोत्सवः कई पीढ़ियों का जुटान

कहां

21 दिनों की सफल यात्रा के बाद 20वें भारत रंग महोत्सव का समापन 21 फरवरी को हो गया। देश के इस अंतरराष्ट्रीय थियेटर फेस्टिवल का आयोजन हर साल राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय यानी एनएसडी द्वारा किया जाता है। समापन समारोह का आयोजन कमानी ऑडिटोरियम, दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर कत्थक की जानी-मानी हस्ती पद्म विभूषण से सम्मानित पंडित बिरजू महाराज मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। संस्कृति मंत्रालय के सचिव अरूण गोयल अतिथि के तौर पर शामिल हुए। एनएसडी सोसाइटी के एक्टिंग चेयरमैन डॉ. अर्जुन देव चारण ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रभारी निदेशक सुरेश शर्मा ने मुख्य अतिथि और अतिथि का स्वागत किया। समापन समारोह के आखिर में 'धूम्रपान' नाटक का मंचन किया गया। 20वें रंग महोत्सव में 111 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय नाटकों का मंचन किया गया, जिसमें लोक व पराम्परागत थिएटर विधाओं के साथ-साथ आमंत्रित नाटक और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्रों की प्रस्तुतियां शामिल थीं। नई दिल्ली के अलावा, एनएसडी ने इस आयोजन में डिब्रूगढ़ में (4 से 10 फरवरी के बीच), वाराणसी में (7 से 13

फरवरी), रांची में(9 से 15 फरवरी तक), मैसूर में 11 से 17 फरवरी तक),और राजकोट में (13 से 19 फरवरी 2019 के बीच तक), आयोजित किया गया।

‘वोटर’

देश का चुनावी दौर
करता है शोर
शामिल होता है
हर किस्म का नेता
कोई होता है
घिसता पिसता ईमानदार
कोई लोमड़ सा चलाक चोर
पार्टी विशेष की चलती लहर
पार्टी टिकटों की बोलियां होती
हर हलके के निवासियों के
मानसिक स्वाद मापे जाते
गाढ़ी कमाई के लिए बनती
कार्यकर्ताओं की फौज
ज्यों ही जीते इनकी पार्टी
बोलती इनकी तूती
होती इनकी मौज
ये सियासत है साहब
ये जिंदा नागरिकों का दर्द नहीं समझती
अपनों की लाशों पर बिलखतों की इन्हें
क्या परवाह
इसलिए कहे कश्मीर कविराय
शातिरों को देनी हो करारी चोट
तो सोच समझ कर देना
अपना अनमोल वोट

मेरा देश ही मेरी जान

इस देश की खातिर
हुए कितने ही कुर्बान
मेरा देश ही मेरी जान
मेरा देश ही मेरी जान
मेरा देश ही मेरी पहचान।
जग गाता हिन्दोस्तान-हिन्दोस्तान
इस माटी की है अजब पहचान
मेरा देश ही मेरी जान
मेरा देश ही मेरी पहचान।
सबको मिलता सबसे मिलता
यहां मौज-मस्ती, स्नेह सम्मान
मेरा देश ही मेरी जान
मेरा देश ही मेरी पहचान।
सबके कदमों से कांटे हटाता
फूल बिछाता यह देश महान
मेरा देश ही मेरी जान
मेरा देश ही मेरी पहचान।
एक से बढ़कर एक यहां
रणबांकुरों ने थामी है कमान
मेरा देश ही मेरी जान
मेरा देश ही मेरी पहचान।

... कश्मीर सिंह

देश के पहले लोकपाल जस्टिस पिनाकी चंद्र घोष

देश के पहले लोकपाल के तौर पर जस्टिस पिनाकी चंद्र घोष ने शपथ ली। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन्हें पद की शपथ दिलाई। जस्टिस घोष को मानवाधिकार मामलों के जानकार के तौर पर माना जाता है। केन्द्र सरकार ने आम चुनावों से ठीक पहले लोकपाल की नियुक्ति की है।

जस्टिस घोष इससे पहले आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस और सुप्रीम कोर्ट के जज रह चुके हैं। जस्टिस घोष वर्तमान में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य भी थे।

विभिन्न उच्च न्यायालयों के पूर्व चीफ जस्टिस दिलीप बी भोसले, जस्टिस प्रदीप कुमार मोहंती, जस्टिस अभिलाषा कुमारी के अलावा छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश अजय कुमार त्रिपाठी को लोकपाल में न्यायिक सदस्य नियुक्त किया गया है। सशस्त्र सीमा बल की पूर्व पहली महिला प्रमुख अर्चना रामसुंदरम, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्य सचिव दिनेश कुमार जैन, पूर्व आईआरएस अधिकारी महेंद्र सिंह और गुजरात काडर के पूर्व आईएएस अधिकारी इंद्रजीत प्रसाद गौतम लोकपाल के गैर न्यायिक सदस्य हैं। नियमों के अनुसार, लोकपाल समिति में एक अध्यक्ष और अधिकतम आठ सदस्यों का प्रावधान है। इनमें से चार न्यायिक सदस्य होने चाहिए। नियमों के अनुसार, लोकपाल के सदस्यों में 50 प्रतिशत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और महिलाएं होनी चाहिए। चयन होने के बाद अध्यक्ष और सदस्य पांच साल के कार्यकाल या 70 साल की उम्र तक पद पर बने रह सकते हैं। लोकपाल अध्यक्ष का वेतन और भत्ते भारत के प्रधान न्यायाधीश के बराबर होंगे। सदस्यों को उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के बराबर वेतन और भत्ते मिलेंगे। ◆◆◆

मैं तेरा रखवाला

फार्म - 4 (नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन स्थल	: शिमला
2.	प्रकाशन तिथि	: माह की 1 तारीख
3.	मुद्रक का नाम	: कमल सिंह सेन
	क्या भारतीय नागरिक हैं	: हां
	पता	: डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004
4.	प्रकाशक का नाम	: कमल सिंह सेन
	क्या भारतीय नागरिक हैं	: हां
	पता	: डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. दयानंद शर्मा
	क्या भारतीय नागरिक हैं	: हां
	पता	: डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: मातृवन्दना संस्थान : डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004

मैं कमल सिंह सेन, एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

हस्ता/-
कमल सिंह सेन
प्रकाशक

दिनांक 31 मार्च 2019

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् 2076
एवं मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं

Sh. Jai Ram Thakur
Chief Minister, H.P.

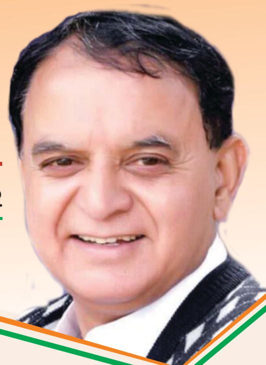

Sh. Mahender Singh Thakur
IPH Minister, H.P.

Rajat Thakur

Pradesh Mahamantri BJYM

Prop. Rajat Stone Crusher

लघु उद्योग भारती, हिमाचल प्रदेश

उद्योग हित — राष्ट्रोद्धारो लघुउद्यमैः — राष्ट्र हित

लघु उद्योग भारती

लघु उद्योग भारती, भारत का सबसे बड़ा सुक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों के लिये सर्मपित अखिल भारतीय औद्योगिक संगठन है।

उद्योगों से सम्बन्धित सभी समस्याओं को दूर करने तथा सुझावों को कार्यन्वित करने के लिए तत्पर संगठन।

आप भी इस संगठन के सदस्य बनें।

डा. विक्रम बिंदल
प्रदेश अध्यक्ष

राजीव कंसल
प्रदेश महासचिव

विकास सेठ
प्रदेश कोषाध्यक्ष

लघु उद्योग भारती, हिमाचल प्रदेश कार्यालय

151, डी.आई.सी., औद्योगिक क्षेत्र बद्दी, जिला सोलन (हि.प्र.) 173 205

9218559555, 9418087745, 9882085940 | mail : lub.himachal@gmail.com

Designed by : **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on:

Posting Date:
1st & 5th of the Month